राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 302

मूल्य ₹6 .00, नई दिल्ली, गुरुवार, 9 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

ट्विटर के सीईओ जैक दोरजी ने दान किए 7500 करोड़ रुपये

>> 11

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	स्पेन	भारत	2 अप्रैल की स्थिति	दिल्ली
कुल केस	14,50,087	4,00,549	1,46,690	5,699	1,947	669
मौतें	83,472	12,857	14,555	180	57	9
स्वस्थ हुए	3,09,321	21,711	48,021	500	132	21

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	1135	64
तमिलनाडु	738	7
तेलंगाना	431	11
राजस्थान	364	3
आंध्र प्रदेश	348	4
केरल	345	7
उत्तर प्रदेश	343	7
कर्नाटक	181	4
अन्य	1145	64

शाम 11 :30 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	इटली	जर्मनी	फ्रांस
केस	1,35,586	1,09,178	1,09,069
मौतें	17,127	2,066	10,328

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो सोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +9190131515515

कोरोना को हराने के लिए भारत में समूह टेस्टिंग जरूरी ● पेज 5

राजस्थान का भीलवाड़ा ऐसे बना कोरोना का विजेता ● पेज 6

डोनर नहीं आ पा रहे तो डॉक्टर खुद करने लगे रक्तदान ● पेज 7

सरोकार

लोगों को सावधान करती है गांव की बिटिया

कासगंज : उत्तर प्रदेश के कासगंज जिले में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में गांव की कमान संभाल रही है आठवीं की छात्रा। बिटिया के कहने पर ग्राम प्रधान ने गांव में लगवाया पब्लिक एड्रेस सिस्टम। (पेज-7)

जागरण विशेष

राहत पहुंचाने में भी जुटी 'टीम जागरण'

भागलपुर : बिहार के भागलपुर में दैनिक जागरण की टीम गांव-शहर में जरूरतमंदों तक भी पहुंच रही है। सहयोग को प्रोत्साहित कर जरूरतें पूरी करने के इस प्रयास को समाज का भरपूर सहयोग मिल रहा है। (पेज-7)

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

कालाबाजारी करने वालों पर होगी कड़ाई, जाना होगा जेल

नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान जरूरी चीजों की जमाखोरी और कालाबाजारी करने वालों को जेल की हवा खानी होगी। केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों से आवश्यक वस्तु अधिनियम को कड़ाई से लागू करने का निर्देश दिया है।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 10

'बड़े खरीदारों को किसानों से सीधे खरीद की अनुमति मिले'

नई दिल्ली : केंद्र ने मंडियों में भीड़ कम करने व आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए राज्यों को बड़े खरीदारों, प्रोसेसर्स को अगले तीन माह तक किसानों, एफपीओ व सहकारी संस्थाओं से कृषि उत्पाद सीधे खरीदने की अनुमति देने को कहा है।

सभी दलों ने लॉकडाउन बढ़ाने का फैसला मोदी पर छोड़ा

सभी की राय एक ▶ 11 अप्रैल को मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक करेंगे पीएम, इसके बाद हो सकती है घोषणा

विपक्ष ने कहा, यह कोरोना के खिलाफ साझा लड़ाई

संजय मिश्र, नई दिल्ली

अधिकतर राज्यों का रुख साफ है कि लॉकडाउन बढ़ना चाहिए, केंद्र सख्ती से लॉकडाउन लागू करने को जरूरी मान रहा है, जबकि सियासी दलों ने इसका फैसला केंद्र पर छोड़ दिया है। स्पष्ट है कि 14 अप्रैल को एकसाथ लॉकडाउन खत्म नहीं होगा, बल्कि कुछ इलाकों में ज्यादा सख्ती से लागू होगा। संभावना है कि 11 अप्रैल को मुख्यमंत्रियों संग बैठक के बाद लॉकडाउन बढ़ाने की घोषणा हो सकती है।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये संसद में सभी दलों के फ्लोर लीडर्स के साथ बैठक में कांग्रेस समेत तमाम दलों ने लॉकडाउन बढ़ाने की पैरोकारी करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी को इस मुद्दे पर एक तरह से ब्लैंक चेक देकर विवाद की गुंजाइश खत्म कर दी। सभी दलों में दिखी अद्भुत एकजुटता पर खुशी का इजहार करते हुए मोदी ने कहा, यह हमारे लोकतंत्र की रचनात्मक और सकारात्मक राजनीति को दर्शाती है। करीब पौने चार घंटे चली बैठक के आखिर में अपनी बात रखते हुए पीएम ने लॉकडाउन बढ़ाने का संकेत दिया। माना जा रहा है कि यह विस्तार डेढ़ से दो हफ्ते का हो सकता है। उन्होंने साफ किया कि कोरोना के पूर्व और बाद की स्थिति एक समान नहीं रहेगी। यह बड़ा संकट है और देश को एकजुट होकर लड़ना पड़ेगा। मोदी ने कहा, दुनिया कोविड-19 की गंभीर चुनौती का सामना कर रही है। यह युगांतकारी घटना है। संसाधनों की कमी के बावजूद भारत उन चुनिंदा देशों में है जहां कोरोना के फैलाव की गति अब तक नियंत्रण में है। पीएम ने इस लड़ाई में केंद्र के साथ मिलकर काम करने वाली राज्य सरकारों के प्रयासों की भी सराहना की।

डेढ़ से दो सप्ताह तक बढ़ सकती है लॉकडाउन की अवधि

देश में हालात सामाजिक आपातकाल जैसे हैं... इसने कठोर फैसलों को जरूरी बना दिया है और हमें लगातार सतर्क बने रहना होगा।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

देश में कोरोना संकट पर चर्चा के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सर्वदलीय बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। प्रेट्र

तब्लीगियों की गलती को सांप्रदायिक रंग देना चिंता की बात : पवार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस की चुनौती बढ़ाने में तब्लीगी जमात की भूमिका का मुद्दा सर्वदलीय बैठक में भी उठा। राकांपा प्रमुख शरद पवार ने कहा, कोरोना की गंभीर चुनौती को देखते हुए निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के लोगों की ओर से बेशक गलती हुई है। मगर कुछ टीवी मीडिया इसे सांप्रदायिक रंग दे रहा है। इस तरह की कोशिशें रुकनी चाहिए।

एक लाख कारोबारी व 14 लाख करदाताओं को राहत

नई दिल्ली : अर्थव्यवस्था में नकदी का प्रवाह बढ़ाने को सरकार ने आयकर व जीएसटी रिफंड जारी करने का निर्णय किया है। व्यावसायिक, उद्यमी व व्यक्तियों को राहत देने के लिए पांच लाख तक के लंबित आयकर रिफंड तत्काल जारी होंगे। इससे 14 लाख करदाताओं को लाभ होगा। जीएसटी-कस्टम रिफंड से एक लाख उद्यमी लाभान्वित होंगे। इस प्रकार स्वीकृत कुल रिफंड 18,000 करोड़ रुपये का होगा। (पेज-10)

द्रमुक के टीआर बालू, माकपा के ई. करीम व तृणमूल कांग्रेस के सुदीप बंधोपाध्याय ने भी कोरोना से जंग के लिए जीएसटी की राज्यों की लंबित रकम तत्काल देने की मांग उठाई। इन पार्टियों ने यह भी कहा, सांसद निधि को अगर सरकार दो साल तक स्थगित रखना चाहती है तो यह सुनिश्चित किया जाए कि एक राज्य के सभी सांसदों की एमपीलैड की राशि उसी राज्य को मिले। बीजद के पिनाकी मिश्रा ने आर्थिक संकट के मद्देनजर सरकार से गरीब, मजदूर, वेतनभोगी से लेकर उद्योग तक सभी क्षेत्रों के लिए बड़े पैकेज की तत्काल जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि सरकार का अभी तक का करीब दो लाख करोड़ रुपये का राहत पैकेज पर्याप्त नहीं है। लोजपा नेता चिराग पासवान ने लॉकडाउन को चरणबद्ध तरीके से खत्म करने और कुछ समय के लिए अंतरराज्यीय परिवहन को इजाजत नहीं देने का सुझाव दिया।

कोरोना संकट में एक गरीब परिवार की जिम्मेदारी लें : मोदी पेज>>3

निजी लैब में भी हो कोरोना की मुफ्त जांच : सुप्रीम कोर्ट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- डॉक्टरों पर हमले की घटनाओं का भी लिया संज्ञान, सुरक्षा का आदेश
- सभी चिकित्सा कर्मियों को दी जा रही पीपीई किट, नहीं कटेगा वेतन

सरकारी लैब की तरह निजी लैब में भी अब कोरोना संक्रमण की जांच मुफ्त में होगी। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को यह आदेश दिया। कोर्ट ने इसके अलावा कोरोना के इलाज व जांच में लगे डॉक्टरों और स्टाफ की समुचित सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी आदेश दिया है। इसके साथ डॉक्टरों व मेडिकल स्टाफ को सुरक्षा किट मुहैया कराने का आदेश दिया है।

न्यायमूर्ति अशोक भूषण और एस. रविन्द्र भट की पीठ ने बुधवार को मामले की सुनवाई वीडियो कांफ्रेंसिंग से की। सुप्रीम कोर्ट के सामने दो तीन याचिकाएं थीं जिसमें डॉक्टरों की सुरक्षा और निजी लैब में कोरोना की जांच के लिए 4500 रुपये की फीस लिए जाने का मुद्दा उठाया गया था। एक अन्य याचिका में डाक्टरों के वेतन में कटौती की आशंका भी जाहिर की गई थी। इन मुद्दों पर कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं और केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की बहस सुनने के बाद आदेश जारी किये।

पीठ ने कहा कि वह याचिकाकर्ता शशांक देव सुदी की इस बात से सहमत है कि राष्ट्रीय आपदा के दौरान निजी लैब को कोरोना जांच के शुल्क के तौर पर 4500 रुपये लेने की इजाजत देना ठीक नहीं है। पैसे के कारण कोई कोरोना की जांच से वंचित नहीं होना चाहिए। पीठ ने कहा कि उन्हें बताया गया है कि सरकारी लैब में कोरोना की जांच मुफ्त हो रही है। ऐसी स्थिति में एनएबीएल मान्यता प्राप्त निजी लैब में भी कोरोना की जांच मुफ्त की जाएगी।

इसके अलावा कोर्ट ने एक डाक्टर की ओर से दायर याचिका को स्वीकार कर कोरोना का इलाज कर रहे डॉक्टरों और अन्य स्टाफ को सुरक्षा किट पीपीई व अन्य चीजें मुहैया कराने का आदेश दिया है। हालांकि सरकार ने कोर्ट को बताया कि इस मामले में सभी जरूरी उपाय किए जा रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट फाइल फोटो

याचिकाकर्ता ने आशंका जताई कि पीपीई किट आदि खरीदने के लिए डॉक्टरों का वेतन काटा जा सकता है, लेकिन सॉलिसिटर जनरल ने इसका खंडन किया और कहा कि डॉक्टरों के वेतन में कोई कटौती नहीं होगी। कोर्ट ने कहा कि इस महामारी की घड़ी में डाक्टर और मेडिकल स्टाफ ही हमारी पहली पंक्ति के योद्धा हैं। कोर्ट ने इंदौर और गाजियाबाद के अलावा कुछ और हिस्सों में डॉक्टरों पर हुए हमलों को दर्ज कर सरकार और पुलिस को आदेश दिया है कि वे इलाज व जांच में लगे डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ को समुचित सुरक्षा मुहैया कराएं।

कोर्ट ने राज्यों को निर्देश दिया कि डॉक्टरों, मेडिकल स्टाफ व अन्य सरकारी कर्मचारियों के काम में बाधा डालने वालों के खिलाफ भी जरूरी कार्रवाई करें। कोर्ट ने सरकार से विकल्प के रूप में घरेलू स्तर पर सुरक्षा किट (पीपीई सूट, मास्क व दस्ताने आदि) व अन्य उपकरणों की उपलब्धता की संभावनाएं तलाशने को कहा है। जरूरत होने पर ऐसी चीजों का निर्यात रोकने को भी कहा है।

उत्तर प्रदेश और दिल्ली के हॉटस्पॉट किए गए सील

योगी सरकार ने गाजियाबाद व नोएडा समेत 15 जिलों के 108 स्थान किए चिह्नित

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लॉकडाउन के बावजूद कई इलाकों में कोरोना संक्रमित मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने बुधवार को सख्त कदम उठाया है। सरकार ने प्रदेश के 15 जिलों के 108 इलाकों (क्लस्टर) को हॉटस्पॉट (प्रभावित क्षेत्र) के रूप में चिह्नित किया है। इनमें गाजियाबाद के 13 और गौतमबुद्ध नगर के 12 क्लस्टर शामिल हैं। ये वे क्षेत्र हैं, जहां छह या उससे अधिक संक्रमित मरीज हैं। इन इलाकों को फिलहाल 15 अप्रैल तक के लिए सील कर दिया गया है। इस दौरान यहां कर्फ्यू जैसा प्रतिबंध रहेगा। घर के बाहर कदम रखने पर पाबंदी होगी। हर आवश्यक वस्तु की होम डिलीवरी की जाएगी। आदेश बुधवार रात 12 बजे से प्रभावी हो जाएगा।

15 अप्रैल तक रहेगा कर्फ्यू जैसा प्रतिबंध

मुख्य सचिव का आदेश

- गैर जरूरी पास निरस्त किए जाएं
- दुकानें, सब्जी मंडी नहीं खुलेंगी
- आवश्यक वस्तुओं की शत-फीसद होम डिलीवरी की जाएगी
- आवश्यक वस्तुओं से संबंधित फैक्ट्री या प्रतिष्ठानों में काम करने वाले कर्मियों को पूल कर वाहनों से लाने-ले जाने की हो व्यवस्था
- आवश्यक सेवा से जुड़े व्यक्तियों के अलावा किसी को भी घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं
- पाबंदी सिर्फ हॉट स्पॉट के लिए है, लेकिन लॉकडाउन का सख्ती से पालन पूरे जिले में कराया जाएगा

उठाए जाएंगे अन्य कदम भी

- जिन इलाकों को सील किया जा रहा है, वहां एक-एक घर की जांच की जाएगी
- जांच के साथ सभी घरों और पूरे क्षेत्र को सैनिटाइज कराया जाएगा
- संपूर्ण लॉकडाउन पर 14 अप्रैल को निर्णय, इसी समय विचार होगा कि हॉट स्पॉट को कब तक सील रखा जाए
- सील के दायरे में आने वाले क्षेत्रों में कर्फ्यू जैसी स्थिति होगी
- लोग घरों से नहीं निकल सकेंगे। एक मोहल्ले का दूसरे से कनेक्शन काट दिया जाएगा

राष्ट्रीय राजधानी में ऐसे 20 इलाके, आवाजाही पर लगाई गई रोक

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : राष्ट्रीय राजधानी में 20 इलाकों को हॉटस्पॉट घोषित किया है। इन इलाकों को अगले आदेश तक सील कर दिया गया है। यहां के लोगों को कॉलोनी से बाहर निकलने और दूसरे लोगों के कॉलोनी में प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है। इन कॉलोनियों में सभी जरूरी सेवाओं की आपूर्ति दिल्ली सरकार करेगी। इसके अलावा दिल्ली में अब सभी के लिए मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया गया है। ऐसा नहीं करने पर कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा, मास्क पहनने से कोरोना के खतरे को कम किया जा सकता है। बैठक के बाद उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा, दिल्ली के जिन क्षेत्रों में कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं, ऐसे 20 इलाके चिह्नित किए गए हैं। इन इलाकों को सील कर दिया गया है। (पेज-2 भी देखें)

साद की तलाश में अंधेरे में हाथ-पैर मार रही पुलिस

नई दिल्ली : तब्लीगी जमात के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद व प्रबंधन से जुड़े छह अन्य सहयोगियों को पकड़ने के लिए क्राइम ब्रांच दिल्ली, उप्र व हरियाणा में छापेमारी कर रही है, लेकिन किसी का कोई अता-पता नहीं है। ऐसे में फिलहाल क्राइम ब्रांच अंधेरे में ही हाथ-पैर मार रही है। (पेज-4)

ट्रंप ने दी डब्ल्यूएचओ की फंडिंग रोकने की धमकी

वाशिंगटन : कोरोना वायरस से जूझ रहे अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का गुस्सा डब्ल्यूएचओ को लेकर सातवें आसमान पर पहुंच गया है। उन्होंने वैश्विक संस्था के फंड को रोकने की धमकी तक दे डाली है। इससे पहले उन्होंने डब्ल्यूएचओ को चीन केंद्रित होने का आरोप लगाया था। (पेज-11)

कोरोना से लड़ने अब मैदान में उतरेगी प्रशिक्षित फौज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- डॉक्टर, नर्स, पुलिस व स्वयंसेवी संगठनों को प्रशिक्षण
- डीओपीटी ने संभाली कमान, दीक्षा पोर्टल से ऑनलाइन प्रशिक्षण

कोरोना के महामारी में बदलने की आशंका के मद्देनजर सरकार ने कमर कस ली है। इसके मद्देनजर चिकित्सा से जुड़े पैरा मेडिकल की अतिरिक्त फोर्स तैयार की जा रही है। प्रशिक्षित किये जाने वाले लोगों में डॉक्टर, नर्स से लेकर पुलिस, एनसीसी, एनएसएस जैसे संगठन खास होंगे।

कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय ने इसे इंटेग्रेटेड गवर्नमेंट ऑनलाइन ट्रेनिंग(आइजीओटी) नाम दिया गया है। इसका प्रशिक्षण जल्द ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दीक्षा पोर्टल के जरिये ऑनलाइन शुरू किया जाएगा। रजिस्ट्रेशन का काम शुरू कर दिया गया है। इस पूरी पहल का उद्देश्य है कि महामारी से लड़ने वाले योद्धाओं को इससे जुड़ी पूरी जानकारी दी जाए और बरती जाने वाली सावधानियों को लेकर सतर्क किया जाए। वैसे भी कोरोना से लड़ने वाले योद्धा जिस तरह से संक्रमण की चपेट में आ रहे है, इससे सरकार की चिंताएं बढ़ गई हैं। इस बीच, कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अब तक काफी अनुभव भी हासिल हुआ है, वह भी इस प्रशिक्षण का अहम पहलू होगा।

इन सभी को मिलेगा प्रशिक्षण : कोरोना के खिलाफ जंग के लिए फिलहाल जिन्हें प्रशिक्षित करने की तैयारी है, इनमें डॉक्टर, नर्स, पुलिस, स्वयंसेवक, आशा वर्कर, एएनएमएस, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, एनसीसी और एनएसएस आदि से जुड़े लोग शामिल होंगे।

प्रशिक्षण में शामिल होंगे यह विषय

कोरोना के अगले चरण में जंग के लिए फिलहाल जो वर्क फोर्स तैयार किया जा रहा है, उन्हें इन दौरान जिन विषयों से जुड़ा प्रशिक्षण दिया जाएगा। उनमें आइसीयू केयर एंड वेंटीलेटर मैनेजमेंट, क्लीनिकल मैनेजमेंट कोरोना, इंफेक्शन प्रिवेंशन थ्रू पीपीई, ट्रेनिंग फार एनसीसी कैडेट, बेसिक्स ऑफ कोविड-19, मैनेजमेंट आफ कोविड-19 केसेस, लैबोरेटरी सेंपल कलेक्शन एंड टेस्टिंग, क्वारंटाइन एंड आइसोलेशन आदि विषय शामिल हैं ।

बदला विचार

एक ही दिन में बदल गए अमेरिकी राष्ट्रपति के सुर, ब्राजील के राष्ट्रपति बोल्सोनारो ने कहा, मोदी भगवान हनुमान की तरह, श्रीलंका के राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे ने भी दिया धन्यवाद

भारत ने दवा आपूर्ति का फैसला किया तो ट्रंप बोले-मोदी बहुत अच्छे इंसान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोविड-19 महामारी के इस दौर में भारत ने जैसे ही जीवनदायी समझी जा रही हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन (एचसीक्यू) की आपूर्ति का आश्वासन दिया दूसरे देशों के सुर बदलने लगे। एक दिन पहले भारत को परोक्ष धमकी देने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को महान व्यक्ति बताया है, जबकि ब्राजील के राष्ट्रपति बोल्सोनारो ने तो मोदी की तुलना भगवान हनुमान से कर दी। जिस तरह से उन्होंने हिमालय से संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण की जान बचाई थी उसी तरह से भारतीय पीएम दूसरे देशों को इस दवा की आपूर्ति कर रहे हैं। श्रीलंकाई राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे ने भी मोदी को धन्यवाद दिया है।

विदेश मंत्रालय के अफसरों ने बताया है कि भारत के पास जिन भी देश की तरफ से क्लोरोक्विन या दूसरी जीवन बचाने वाली दवाइयों के आग्रह मिले हैं, उन सभी की समीक्षा दूसरे विभागों के साथ की जा रही है। सरकार को यह भी देखना है कि घरेलू जरूरत के लिए भी इन दवाइयों की पर्याप्त आपूर्ति हो। यह भी देखा जाएगा कि किन देशों को इसकी सबसे ज्यादा और कितनी मात्रा में जरूरत है।

जहां तक अमेरिका को आपूर्ति करने की बात है तो ऐसी सूचना है कि कुछ भारतीय कंपनियों ने पहले से ही अमेरिका को एचसीक्यू देने का करार कर रखा है। निर्यात पर से पाबंदी हटने के बाद अब यह अमेरिकी सरकार व भारतीय कंपनियों के बीच का मामला है। अभी सिर्फ भारत के पास ही इस दवा का बड़े पैमाने पर निर्माण करने की क्षमता है। भारत ने मंगलवार को एससीक्यू के निर्यात पर लगी पाबंदी में ढील देने की घोषणा की थी और इसके कुछ ही घंटे बाद ट्रंप ने कहा, 'मैंने भारत से हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन की 2.9 करोड़ डोज खरीदने का ऑर्डर दिया है। मेरी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात भी हुई है। मैंने उनसे पूछा कि क्या वह इसे आने देंगे? वह महान हैं। वाकई में वह बहुत ही अच्छे हैं। उन्हें भी इसकी बहुत जरूरत है क्योंकि भारत बड़ा देश है।' ट्रंप का यह सुर उनके सोमवार के उस बयान से एकदम उलट है जिसमें उन्होंने उक्त दवा की आपूर्ति नहीं होने की स्थिति में बदले की कार्रवाई तक की धमकी दी थी। भारत ने जिस तरह अमेरिका के अलावा अन्य जरूरतमंद देशों को भी इस दवा की आपूर्ति करने की अनुमति दी है उससे साफ है कि इस फैसले के पीछे ट्रंप की धमकी नहीं है।

दरअसल, कई देश एचसीक्यू के लिए पूरी तरह से भारत पर निर्भर हैं। यूरोप, दक्षिण अमेरिका,अफ्रीका के सारे देश इसे भारत से खरीदते हैं। कुछ देश कच्चा माल भी लेते हैं। भारत के पास अभी जितना माल है उससे 20 करोड़ टैबलेट बनाई जा सकती हैं। इसकी पूरी समीक्षा के बाद ही सरकार ने सशर्त निर्यात खोलने का आदेश दिया है। भारत अपने पास 11-12 करोड़ टैबलेट रखना चाहता है।

हर किसी के लिए संजीवनी नहीं क्लोरोक्विन पेज>>6

डोनाल्ड ट्रंप फाइल फोटो

कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में और ज्यादा सहयोग करेंगे भारत और अमेरिका

कोविड-19 से जंग में भारत-अमेरिका और ज्यादा सहयोग करेंगे। बुधवार को विदेश सचिव हर्ष श्रंगला ने अमेरिका के उपसचिव स्टीफेन बीगेन से बात की। इस महामारी का स्थायी इलाज खोजने के साथ ही इलाज के लिए जरूरी चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति में भी एक दूसरे की मदद देने पर बात हुई है। सनद रहे कि चार दिन पहले ही अमेरिका ने भारत को तकरीबन 30 करोड़ डॉलर की सामग्री दी है।

हरियाणा में 1983 पीटीआइ टीचरों की नौकरी पर गिरी गाज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सुप्रीम कोर्ट ने भर्ती रद करने के हाई कोर्ट के फैसले को सही ठहराया

हरियाणा में 1983 फिजिकल ट्रेनिंग इंस्ट्रक्टर (पीटीआइ) शिक्षकों की नौकरी चली गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भर्ती रद करने के पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट के फैसले को सही ठहराया है। यह मामला हरियाणा में 2010 का पीटीआइ टीचर भर्ती का है। अभी तक सुप्रीम कोर्ट के आदेश से हाई कोर्ट के फैसले पर अंतरिम रोक लगी थी और ये टीचर नौकरी कर रहे थे।

न्यायमूर्ति अशोक भूषण की अध्यक्षता वाली पीठ ने बुधवार को हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देने वाली शिक्षकों की अपीलों का निपटारा करते हुए यह फैसला सुनाया है। हाई कोर्ट ने भर्ती में अनियमितता के आधार पर शिक्षकों की भर्ती रद कर दी थी जिसके खिलाफ शिक्षकों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस भर्ती को रद करने के हाई कोर्ट के फैसले को सही ठहराया है।

याचिकाकर्ता शिक्षकों के अधिवक्ता देवाशीष भारुका ने बताया कि वैसे तो वे कोर्ट के विस्तृत आदेश का इंतजार कर रहे हैं लेकिन आदेश का जो सीमित अंश कोर्ट ने पढ़ा उसके मुताबिक जो टीचर पिछले दस वर्ष से नौकरी कर रहे हैं, उनसे वेतन की वसूली नहीं होगी और जो सेवानिवृत्त हो गए हैं, उनसे भी नहीं होगी। इसके अलावा कोर्ट ने कहा है कि पांच महीने के भीतर नए सिरे से चयन और भर्ती की जाए। भारुका का कहना है कि नए चयन का क्या तरीका होगा यह अभी पता नहीं है। विस्तृत फैसला प्राप्त होने के बाद इसका पता चलेगा।

2010 का है भर्ती मामला पेज>>3

2.91 करोड़ रुपये का योगदान दिया है दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रधानमंत्री केयर्स फंड में। विवि के 43 कॉलेजों से जुड़े शिक्षकों व विभागों के कर्मचारियों ने एक दिन का वेतन इस मद में दिया है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 9 अप्रैल 2020

डाकिये की झोली में दवाओं के साथ राशन भी

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

लॉकडाउन और कोरोना के इस कठिन दौर में कोई डाकिया गली से गुजरे और उसके झोले में डाक के अलावा दवाएं, सब्जियां और राशन भी दिखे तो चौंकिएगा नहीं। जरूरत को देखते हुए डाक सेवा ने भी अपनी भूमिका बदल ली है। पहली बार डाक सेवा से जीवन रक्षक दवाएं, फल-सब्जियां व राशन के साथ कोविड-19 की जांच किट भी जुड़ गई है। इसे वह दिल्ली के अलावा देशभर में पहुंचा रहा है। रेल सेवा बंद है तो इंडिया पोस्ट ने अपनी सेवा जारी रखने के लिए सड़क मार्ग और हवाई कार्गो का सहारा लिया है।

डाक अनिवार्य सेवा के तहत आता है। इसलिए जब अधिकांश प्रतिष्ठान बंद है तो डाककर्मी सेवा में जुटे हैं। दिल्ली परिमंडल के 396 में से 100 डाक घर व दो मोबाइल डाक वैन नियमित सेवा दे रहे हैं। हालांकि, सुविधाएं सीमित हैं। वित्तीय लेनदेन के अलावा स्पीड पोस्ट की ही बुकिंग ली जा रही है। कुछ चुनिंदा पोस्ट बाक्स से पत्र उठाए जा रहे हैं। स्पीड पोस्ट व दवाएं तथा कोविड-19 के जांच किट की बुकिंग भी महानगरों-कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई, बेंगलुरु, मुंबई, अहमदाबाद तथा दिल्ली से सटे उत्तर प्रदेश, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के राज्यों के लिए ही हो रही है। वैसे, एहतियातन पोस्ट आफिस में कर्मियों की संख्या कम की गई है। रोस्टर के हिसाब से उनकी तैनाती हो रही है। पोस्ट आफिस में कोरोना से बचाव के जरूरी एहतियात किए गए हैं।

नया कदम

जरूरत को देखते हुए डाक सेवा ने बदली भूमिका, पहली बार जीवन रक्षक दवाएं, फल-सब्जियां व राशन के साथ कोविड-19 की जांच किट भी जुड़ गई

दिल्ली परिमंडल के पोस्ट मास्टर जनरल (आपरेशंस) अखिलेश कुमार पांडेय ने कहा कि इस समय सबसे अधिक मांग कोरोना जांच किट व दवाओं की है। लॉकडाउन में लोगों को राशन व फल-सब्जी को लेकर भी दिक्कत है। इसलिए इसे पहली बार डाक सेवा से जोड़ा गया है।

इसे लेकर फोर्टिस हास्पिटल, प्लेनेट फार्मा, आश्विन फार्मा व एसआर इंटरप्राइजेज के अलावा ई-कामर्स अमेजन जैसी कंपनियों से करार हुआ है। कोविड-19 की जांच किट व जीवन रक्षक दवाएं मुंबई, भोपाल, चेन्नई, भुज और लखनऊ जैसे स्थानों पर भेज रहे हैं। मंगलवार को ही दिल्ली स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट मलेरिया रिसर्च (एनआइएमआर) का कोरोना टेस्टिंग किट लखनऊ के अस्पतालों को भेजा गया। इसी तरह जांच किट की एक खेप कुछ दिन पहले दिल्ली से हैदराबाद भेजी गई। वहीं, दिल्ली भर में 500 से अधिक लोगों को किराने का सामान व फल- सब्जी पहुंचाई जा चुकी हैं। पैसे का लेनदेन डाकघर व इसके एटीएम से नियमित है। दिल्ली के डाकघरों से 60 करोड़ का लेनदेन हो चुका है।

एयरपोर्ट से संचालित हो रहे विशेष विमान

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

लॉकडाउन के दौरान गत दो हफ्ते से आइजीआइ एयरपोर्ट पर सामान्य उड़ानों का संचालन बंद है। वहीं, विशेष उड़ाने निरंतर आ-जा रहीं है। इसके लिए एयरपोर्ट पर ऑपरेशंस और फैसिलिटेशन टीम के सदस्य विशेष उड़ानों के आने और जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए विषम परिस्थितियों में भी कार्यरत हैं। 25 मार्च से सात अगस्त तक एयरपोर्ट से 56 विशेष उड़ानों का संचालन किया जा चुका है। इसके माध्यम से 10 हजार से ज्यादा विदेशी और भारतीय को उनके गंतव्य तक पहुचाया जा चुका है।

लॉकडाउन की घोषणा के बाद से ही आइजीआइ एयरपोर्ट पर वाणिज्यिक उड़ानों का संचालन भी बंद हो गया था। बावजूद इसके गत 14 दिनों में एयरपोर्ट पर कार्गो और विशेष उड़ानों का संचालन किया गया। इसके माध्यम से जापान, नॉर्वे, जर्मनी, अफगानिस्तान, पोलैंड, रूस और फ्रांस आदि देशों में फंसे लोगों को लाया और ले जाया गया। अबतक विशेष 56 उड़ानों से 10618 यात्रियों की मदद की गई। इसके लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे बड़ा विमान लुफ्थांसा एयरलाइंस द्वारा संचालित किया गया था। एयरबस से 380 से 500 जर्मन नागरिकों को फ्रैंकफर्ट भेजा गया।

एयरपोर्ट पर विशेष विमान के यात्रियों की मदद करते एयरपोर्ट कर्मी। सौ. डायल

दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल) के प्रवक्ता ने बताया कि कोरोना महामारी की घड़ी में ज्यादातर लोग अपने घरों के सुरक्षित वातावरण रह रहे हैं। वहीं, आइजीआइ एयरपोर्ट पर कर्मचारियों की टीम 24 घंटे काम में लगी हुई है, जिससे यहां से आने-जाने में यात्रियों को असुविधा न हो। सिटीसाइड टीम टर्मिनल के बाहर यातायात का प्रबंधन कर रही है। डायल के सीईओ विदेह कुमार जयपुरियार ने कहा कि इस मुश्किल घड़ी में भी एयरपोर्ट पर कर्मचारी तत्परता से काम कर रहे है। इसकी कई लोग सराहना कर चुके हैं। कर्मियों और स्टेक होल्डर को इसके लिए धन्यवाद।

ढीले ही रहे गर्मी के तेवर, जल्द बढ़ेगा तापमान

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : बुधवार को गर्मी के तेवर थोड़े ढीले ही रहे। धूप बहुत तेज नहीं थी तो तापमान भी अपेक्षाकृत कम ही रहा। गुरुवार को भी आंशिक बादल छाए रहेंगे। इसके बाद धीरे-धीरे तापमान में वृद्धि होने लगेगी। सूरज सुबह ही निकल गया था और धूप भी दिन भर खिली रही। लेकिन धूप की तपन ज्यादा न थी। बीच-बीच में बादलों और सूरज के बीच आंखमिचौली भी देखने को मिली। अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम 33.5 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य स्तर पर 19.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

मौसम विभाग के अनुसार गुरुवार को भी आंशिक स्तर पर बादल छाए रहेंगे और धूप हल्की रहेगी। अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमशः 34 व 18 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। शुक्रवार से गर्मी और तापमान में फिर से इजाफा होना शुरू हो जाएगा। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर बेहतर रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार बुधवार को दिल्ली का एयर इंडेक्स महज 83 दर्ज किया गया।

न्यूज गैलरी

लॉकडाउन के उल्लंघन में पुलिस ने पकड़े 3959 लोग

नई दिल्ली : लॉकडाउन का उल्लंघन करने के मामले में बुधवार को दिल्ली पुलिस ने 183 एफआइआर भी दर्ज कीं। वहीं 3959 लोगों को हिरासत में लिया गया। ये वे लोग थे, जो बिना कारण घर से बाहर सड़कों पर निकल आए थे। पुलिस पूछताछ में इनके पास घर से बाहर निकलने का कोई सही कारण नहीं मिलने पर इन्हें हिरासत में लिया गया। बिना वजह सड़कों पर घूमने वाले लोगों में से 431 लोगों के वाहनों को भी पुलिस ने जब्त किया। इसके अलावा पुलिस की तरफ से 788 मूवमेंट पास ऑनलाइन जारी किए गए। इन लोगों को मूवमेंट पास आवश्यक कार्य के लिए जारी किए गए। (जासं)

छोटे संस्थानों के कर्मचारियों को बैंक से ऋण देने की मांग

नई दिल्ली : भाजपा ने छोटे संस्थानों में काम करने वाले कर्मचारियों को बैंक से ऋण दिलाने की मांग की है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने इसे लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पत्र लिखा है। उनका कहना है कि लॉकडाउन की वजह से सभी औद्योगिक इकाई, कार्यालय, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, रेस्तरां, सिनेमा, क्लब, होटल, निजि स्कूल आदि बंद हैं। सरकारी एवं बड़े प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों के बैंक खाते में ऑनलाइन वेतन का भुगतान किया जाता है, लेकिन छोटे व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में काम करने वाले लाखों कर्मचारियों को चेक या फिर नकद वेतन दिया जाता है। लॉकडाउन की वजह से काफी संख्या में कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल सका है। उनका कहना है कि निम्न मध्यम वर्ग कोरोना के खिलाफ लड़ाई में ईमानदारी से लॉकडाउन का पालन कर रहा है, इसलिए इनकी परेशानी पर सरकार को ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन का 50 फीसद राशि बैंक से ऋण के तौर पर दिलाया जाए। (जासं)

अमेरिका में फंसे लोगों की मदद के लिए नोडल ऑफिसर नियुक्त

नई दिल्ली : कोरोना के बीच नौकरियां गंवाने के बाद अमेरिका में फंसे सभी भारतीय नागरिकों को सुरक्षित वापस लाने की मांग को लेकर दायर याचिका पर केंद्र ने दिल्ली हाई कोर्ट में जवाब दाखिल किया। केंद्र ने न्यायमूर्ति मनमोहन और संजीव नरूला की पीठ को बताया कि भारतीयों की मदद के लिए न्यूयार्क में नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि न्यूयार्क में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारी याचिकाकर्ता की बेटी के संपर्क में रहेंगे और उन्हें हर जरूरी सामान उपलब्ध कराएंगे। केंद्र सरकार की जानकारी को रिकॉर्ड पर लेते हुए पीठ ने सुनवाई 8 मई तक स्थगित कर दी। अमेरिका में फंसी अपनी बेटी को लाने की मांग को लेकर एक दंपती ने यह याचिका दायर की है। दंपती की बेटी यास्मीन ताहिरा से उसकी कंपनी ने अचानक इस्तीफा मांग लिया। इसके बाद से वह बिना नौकरी के अमेरिका में फंसी है। (जासं)

मांगे सुझाव ▶ वीडियो कांफ्रेंस के जरिए भाजपा सांसदों के साथ केजरीवाल ने की बैठक

एकजुट होकर लड़ेंगे लड़ाई : केजरीवाल

बोले, सभी सभी सुझावों को किया जाएगा लागू

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को भाजपा के सांसदों व आम आदमी पार्टी के राज्य सभा सांसदों के साथ वीडियो कांफ्रेंस के जरिए बैठक कर राजधानी में कोरोना संक्रमण रोकने के उपायों पर चर्चा की। भाजपा सांसद व प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी, दक्षिण दिल्ली से सांसद रमेश बिधूड़ी व नई दिल्ली से सांसद मीनाक्षी लेखी और पश्चिमी दिल्ली से सांसद प्रवेश वर्मा व पूर्वी दिल्ली से सांसद गौतम गंभीर ने बैठक में हिस्सा लिया। आम आदमी पार्टी के तीनों राज्यसभा सदस्य संजय सिंह, एनडी गुप्ता व सुशील गुप्ता भी बैठक में शामिल थे। बैठक के बाद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि सभी सांसदों ने अच्छे सुझाव दिए। सभी सुझावों को लागू किया जाएगा। इस लड़ाई को हम सभी को एकजुट होकर लड़ना है।

सीएम ने कहा कि इस समय सभी दलों को मिलकर कोरोना को हराना होगा। संजय सिंह ने ट्वीट कर बताया कि बैठक बहुत ही सार्थक रही। भाजपा के सांसदों ने भी सुझाव दिए। मुख्यमंत्री ने सभी सुझावों को ध्यान से सुना और कोरोना के खिलाफ इस जंग में सभी के साथ मिलकर काम करने का आश्वासन दिया। सिंह ने बताया कि भाजपा के सांसदों ने कहा कि भोजन कहां वितरित किया जा रहा है और राशन के केंद्रों की उन्हें भी जानकारी दे दी जाए।

केजरीवाल ने बैठक में पर्याप्त सुरक्षा किट उपलब्ध कराने पर चर्चा की, ताकि डॉक्टर बिना भय के मरीज का इलाज कर सकें। साथ ही राजधानी में गरीबों को भोजन कराने और उन्हें राशन दुकान से पर्याप्त राशन उपलब्ध कराने पर विस्तार से चर्चा हुई। राजधानी में कोरोना संक्रमित इलाकों को चिन्हित कर संक्रमण रोकने पर भी बैठक में विचार किया गया।

दिल्ली-एनसीआर के इन हॉट स्पाटों को किया गया सील

दिल्ली

1. गांधी पार्क, मालवीय नगर के पास सभी प्रभावित गली
2. गली नंबर 6, एल 1 संगम विहार से प्रभावित सभी गली
3. शाहजहांनाबाद सोसायटी, प्लॉट नंबर 1, सेक्टर 11, द्वारका
4. दीनपुर गांव
5. मरकज मस्जिद और निजामुद्दीन बस्ती
6. निजामुद्दीन पश्चिम (जी और डी ब्लॉक) क्षेत्र
7. बी ब्लॉक जहांगीरपुरी
8. हाउस नंबर 141 से 180, गली नं 14, कल्याणपुरी
9. मानसरा अपार्टमेंट, वसुंधरा एंक्लेव
10. खिचड़ीपुर की 3 गली सहित हाउस नंबर 5/387 खिचड़ीपुर
11. गली नंबर 9, पांडव नगर,
12. वर्धमान अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज 1, एक्सटेंशन
13. मयूर ध्वज अपार्टमेंट, आइपी एक्सटेंशन, पटपड़गंज,
14. गली नं 4, हाउस नंबर जे- 3/115 (नगर डेयरी) से हाउस नंबर जे- 3/108 (अनार वाली मस्जिद चौक की ओर), किशन कुंज एक्सटेंशन,
15. गली नंबर 4, हाउस नंबर जे 3/101 से हाउस नंबर जे 3/107 कृष्ण कुंज एक्सटेंशन
16. गली नंबर 5, ए ब्लॉक (हाउस नंबर ए 176 से ए-189), वेस्ट विनोद नगर
17. जे,के,एल,एच पॉकेट दिलशाद गार्डन
18. जी, एच, जे, ब्लॉक ओल्ड सीमापुरी
19. एफ- 70 से 90 ब्लॉक दिलशाद कॉलोनी
20. प्रताप खंड, झिलमिल कॉलोनी

गाजियाबाद

1. केडीपी ग्रैंड स्वाना (राजनगर एक्सटेंशन)
2. गिरनार सोसायटी (कौशांबी)
3. मसूरी
4. कोविड-19 अस्पताल मुरादनगर
5. वैशाली सेक्टर-छह
6. वसुंधरा सेक्टर-2 बी
7. पसौंडा
8. बी 77/ जी-5 शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-2
9. सेवियर सोसायटी मोहननगर
10. दुहाई की खाटू श्याम कॉलोनी
11. नाईपुरा लोनी
12. नंदग्राम मस्जिद के पास का इलाका
13. ऑक्सी होम भोपुरा

नोएडा

1. नोएडा सेक्टर 137, 135 व इससे जुड़े सेक्टर
2. दादरी क्षेत्र के दो गांव अच्छेजा और बिसनोली
3. ओमिक्रान ग्रेटर नोएडा और घोड़ी बछेड़ा गांव
4. ग्रेटर नोएडा सेक्टर अल्फा-1 और जीटा,
5. पतवाड़ी गांव और ग्रेटर नोएडा वेस्ट का से. 2
6. ग्रेटर नोएडा वेस्ट की गौड़ सिटी
7. नोएडा से. 37 और 27
8. नोएडा से. 50, 44 और 100,
9. नोएडा से. 5 और आसपास के सेक्टर
10. नोएडा से. 62 और आसपास के सेक्टर
11. नोएडा से. 74 व 78
12. नोएडा से. 150 व आसपास के सेक्टर

सोशल मीडिया पर आइजीआइ एयरपोर्ट की सबसे ऊंची उड़ान

संतोष शर्मा, नई दिल्ली

- कोरोना आपदा के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर यात्रियों ने ली सबसे अधिक जानकारी
- विश्व का नंबर-1 एयरपोर्ट बना, सिंगापुर का चंगी एयरपोर्ट दूसरे और दक्षिण कोरिया का इंचेयन एयरपोर्ट तीसरे नंबर पर रहा

कोरोना आपदा के दौरान आइजीआइ एयरपोर्ट पर सोशल मीडिया का हवाई यात्रियों ने जमकर प्रयोग किया। इस दौरान लोगों ने न केवल उड़ानों की जानकारी ली, बल्कि समस्याओं को भी साझा किया। यात्रियों की उन दिक्कतों का समय पर निपटारा भी किया गया। यही नहीं इस घटना ने सारे पुराने रिकॉर्ड भी तोड़ दिए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर यात्रियों की सक्रियता के कारण आइजीआइ एयरपोर्ट विश्व का नंबर-1 एयरपोर्ट बन गया।

ऑन लाइन डेटा आकलन करने वाली कंपनी कनेक्ट इनसाइट के अनुसार, 15 से 31 मार्च के बीच एयरपोर्ट के आधिकारिक अकाउंट से जहाँ 99 पोस्ट किए गए वहीं साढ़े तीन लाख से ज्यादा लोगों ने इस पर लाइक, कमेंट और इसे शेयर किया। ऐसे में आइजीआइ पर विश्व के अन्य एयरपोर्ट से ज्यादा सोशल मीडिया का प्रयोग किया गया। सोशल मीडिया प्लेटफार्म का प्रयोग करने वाला सिंगापुर का चंगी एयरपोर्ट और दक्षिण कोरिया का इंचेयन एयरपोर्ट दूसरे और तीसरे नंबर पर रहा। दरअसल, कोरोना के कारण सबसे ज्यादा प्रभाव हवाई सेवा पर पड़ा। फरवरी और मार्च के महीने में कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग और अन्य जांच के लिए विशेष प्रबंध किए गए थे। वहीं 25 मार्च से 21 दिनों के लिए लॉकडाउन में भी विशेष राहत उड़ानों का संचालन एयरपोर्ट से किया किया जा रहा है। इस दौरान एयरपोर्ट पर आए यात्रियों को कई तरह की दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा। इसके लिए यात्रियों ने जानकारी के लिए एयरपोर्ट के सोशल मीडिया अकाउंट ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम का प्रयोग किया। दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल) के सीईओ विदेह कुमार जयपुरियार ने बताया कि यात्रियों ने सोशल मीडिया के जरिये उड़ानों की स्थिति, परिवहन की उपलब्धता और यात्रा संबंधी जानकारी मांगी। जिसका जवाब तुरंत उन्हें दिया गया। एयरपोर्ट के सोशल मीडिया कमांड सेंटर में चौबीसों घंटे कर्मी सक्रिय थे। लोगों की मदद के लिए एयरपोर्ट के आधिकारिक वेबसाइट पर एक पेज भी बनाया गया था।

एयरपोर्ट	सोशल मीडिया का प्रयोग करने वाले यात्री
आइजीआइ एयरपोर्ट	353481
चांगी एयरपोर्ट	84542
इंचेयन एयरपोर्ट	68167
हीथ्रो एयरपोर्ट	35124
फ्रैंकफर्ट एयरपोर्ट	14474

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर तैनात कर्मचारी भी कोरोना की चपेट में

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

उत्तर रेलवे में कोरोना संक्रमण का पहला मामला सामने आया है। हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर तैनात आरक्षण सुपरवाइजर कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं। उन्हें आरएमएल अस्पताल में भेजा गया है। इस मामले में उत्तर रेलवे केंद्रीय अस्पताल की लापरवाही भी सामने आई है। मरीज के दो बार अस्पताल पहुंचने के बावजूद गंभीरता से नहीं लिया गया। निजी लैब में जांच के बाद संक्रमण की पुष्टि होने पर अस्पताल में हड़कंप मच गया। स्वास्थ्य कर्मियों की मांग के बाद उन सभी को करनैल सिंह स्टेडियम में क्वारंटाइन किया गया है। वहीं, संक्रमित कर्मचारी के संपर्क में आने वाले अन्य कर्मचारियों की जांच कराई जा रही है।

हजरत निजामुद्दीन के 59 वर्षीय आरक्षण सुपरवाइजर जुलाई में सेवानिवृत्त होने वाले हैं। वह 21 मार्च के बाद कार्यालय नहीं गए थे। उनका निवास लाजपत नगर में है। अधिकारियों का कहना है कि उनकी ड्यूटी रिकार्ड रूम में थी इसलिए यात्रियों से उनका सीधा संपर्क नहीं होता था। एहतियात के तौर पर 21 मार्च तक उनके संपर्क में आने वाले कर्मचारियों की कोरोना जांच कराने का फैसला किया गया है। उन सभी को फोन करके अपने आप को क्वारंटाइन करने को कहा जा रहा है।

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी दीपक कुमार के अनुसार आरक्षण सुपरवाइजर 31 मार्च को केंद्रीय अस्पताल में आए थे। उन्होंने खांसी होने की शिकायत की थी। उस समय कोरोना के लक्षण नहीं थे। सामान्य दवा देकर इन्हें वापस भेज दिया गया। 2 अप्रैल की रात को दोबारा अस्पताल पहुंचे। उन्हें खांसी व बुखार की शिकायत थी। उनकी छाती का एक्सरे और सीटी स्कैन किया गया। बाद में उन्हें आरएमएल अस्पताल भेजा गया। वहां भी जांच के लिए सैंपल लिए गए। इसके साथ ही निजी लैब में जांच कराई गई। इसमें कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई।

अस्पताल के ही एक डॉक्टर ने रेल मंत्री को टैग कर ट्वीट किया कि कोरोना संक्रमित के संपर्क में आने वालों के क्वारंटाइन की व्यवस्था नहीं की जा रही है। बाद में गलतफहमी होने की बात कहते हुए आरोपों से इन्कार कर दिया।

दिल्ली पुलिस के एएसआइ संक्रमित

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली में कोरोना वायरस का संक्रमण बढ़ता ही जा रहा है। दिल्ली में लॉकडाउन का पालन करवाने के लिए दिन-रात जुटी दिल्ली पुलिस भी अब इसकी चपेट में आ गई है। दिल्ली में किसी पुलिसकर्मी के कोरोना संक्रमित होने का पहला मामला सामने आया है।

हौजखास सर्किल में तैनात और कालकाजी स्थित पुलिस कॉलोनी के क्वार्टर में रहने वाले एएसआइ की जांच रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने के बाद उन्हें सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उनके परिवार के सदस्यों को 14 दिन तक क्वारंटाइन में रहने की सलाह दी गई है। एएसआइ के साथ कार्यरत तीन अन्य यातायात पुलिसकर्मियों को भी होम क्वारंटाइन में रहने की सलाह दी गई है। वहीं, कालकाजी पुलिस कॉलोनी में रहने वाले अन्य पुलिसकर्मियों व उनके परिवार के लोगों को भी एहतियात बरतने व खांसी, बुखार समेत कोरोना के कोई भी लक्षण सामने आने पर तुरंत डॉक्टरों से संपर्क करने के लिए कहा गया है।

दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि हौजखास सर्किल में तैनात एएसआइ को एक अप्रैल को खांसी और बुखार की शिकायत के बाद एम्स भेजा गया था। वहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें 14 दिन होम क्वारंटाइन की सलाह दी। इसके बाद से वह कालकाजी में पुलिस कॉलोनी में स्थित अपने घर में क्वारंटाइन हो गए। सात अप्रैल को उनके कोरोना संक्रमण की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव पाई गई। इसके बाद उन्हें सफदरजंग अस्पताल के सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक, कोरोना वार्ड में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि ड्यूटी के दौरान किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से उन्हें संक्रमण हुआ होगा। अभी कारण स्पष्ट नहीं है।

एम्स का 20 मेडिकल स्टाफ क्वारंटाइन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : एम्स में ब्रेन हेमरेज के मरीज के कोरोना संक्रमण की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। इसके बाद उसका इलाज और जांच करने वाले करीब 20 स्वास्थ्य कर्मियों को क्वारंटाइन किया गया है। मरीज के पारिवारिक सदस्यों को भी 14 दिन के आइसोलेशन की सलाह दी गई है। एम्स के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. डीके शर्मा ने बताया कि दो दिन पहले ब्रेन हेमरेज के मरीज को इमरजेंसी विभाग में भर्ती किया गया था। उसे वेंटिलेटर पर रख डॉक्टरों ने उनकी देखभाल की। रोगी को न्यूरोलॉजी विभाग के वार्ड में भर्ती कराया गया और पीड़ित का सीटी स्कैन और एमआरआइ जांच की गई। बाद में रोगी ने सीने में दर्द की शिकायत की तो उसका कोरोना टेस्ट किया गया। कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आने के बाद मरीज को कोविड यूनिट में भर्ती किया गया और मरीज के संपर्क में आए लोगों की ट्रेसिंग शुरू कर दी गई है। हालांकि, मरीज के परिवार के सदस्यों ने स्क्रीनिंग के समय यात्रा के किसी भी पिछले इतिहास से इन्कार किया है। डॉ. शर्मा ने बताया कि डॉक्टर, नर्स सहित लगभग 20 स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को 14 दिन के आइसोलेशन के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि पूरे न्यूरोलॉजी वार्ड को साफ किया जा रहा है।

कोरोना संक्रमण के दौरान पहली पंक्ति में लोगों का इलाज कर रहे स्वास्थ्य कर्मी भी संक्रमण का शिकार हो रहे हैं। राजधानी के गंगाराम अस्पताल के 108 स्वास्थ्य कर्मी, जिसमें डॉक्टर और नर्स शामिल हैं, उन्हें क्वारंटाइन किया गया है। इनमें एक व्यक्ति का कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आया है।

निजी अस्पतालों के मरीजों की सरकारी लैब में होगी जांच

जासं, नई दिल्ली : कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ने पर निजी अस्पतालों को भी इसके लिए तैयार रहने के लिए कहा गया है। कई निजी अस्पतालों में भी सिर्फ कोरोना के मरीज भर्ती किए जाएंगे। इसके लिए दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने राजधानी के आठ प्रमुख निजी अस्पतालों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। इसमें यह भी निर्देश दिया गया है कि निजी अस्पताल अपने स्तर पर कोरोना की जांच नहीं कर सकेंगे। निजी अस्पतालों में भर्ती मरीजों की जांच भी सरकारी लैब में ही होगी। इसके लिए निजी अस्पतालों को सैंपल लेकर सरकारी प्रतिष्ठानों को देना होगा। वे इसे सरकारी लैब में भेजेंगे।

बैठक में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अलावा आठ निजी अस्पतालों इंद्रप्रस्थ अपोलो, सर गंगाराम, बत्रा, महाराजा अग्रसेन, फोर्टिस एसएस, श्री बालाजी, वेंकटेश्वर और मणिपाल अस्पताल के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। इन्हें कोरोना के इलाज के लिए तैयार रहने के लिए कहा गया है। अभी सर गंगाराम, इंद्रप्रस्थ अपोलो और मैक्स में कोरोना मरीजों का इलाज हो रहा है। इसके लिए मरीजों को भुगतान करना पड़ेगा। इस बैठक में सरकार ने स्पष्ट रूप से निर्देश दिया कि निजी अस्पताल सिर्फ सैंपल लेंगे।

कवायद

दिल्ली पुलिस ने मध्य जिले में शुरू की वॉलेंटियर स्कीम, प्रत्येक थाना क्षेत्र से दस-दस लोग बनाए गए वॉलेंटियर

कोविड-19 से जंग, आम लोग भी पुलिस के संग

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना के खिलाफ जंग में लगातार बेहतर कार्य कर रही पुलिस की मदद के लिए अब आम लोग भी मैदान में उतर आए हैं। दिल्ली की मध्य जिला पुलिस ने बुधवार को कोविड-19 वॉलेंटियर स्कीम लांच की है। इसके तहत प्रत्येक थाना क्षेत्र के दस-दस स्वस्थ युवाओं को वॉलेंटियर बनाया गया है। ये वॉलेंटियर भोजन और राशन बंटवाने के दौरान आपस में शारीरिक दूरी बनाए रखें, इसका ध्यान रखेंगे। साथ ही क्वारंटाइन लोगों पर नजर रखने के अलावा ये लोगों से अरोग्य सेतु मोबाइल एप डाउनलोड भी कराएंगे।

मध्य जिले के डीसीपी संजय भाटिया ने बताया कि कोरोना के संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए पुलिस कई स्तर पर कार्य कर रही है। जिन स्थानों पर भोजन, राशन बांटा जा रहा और लोग सामान लेने के लिए जा रहे हैं, वहां लोगों के बीच शारीरिक दूरी बनाए रखने के कार्य में ये वॉलेंटियर पुलिस का सहयोग करेंगे। जिन इलाकों में ये वॉलेंटियर रहते हैं, वहां उन्हें कई कार्य करने होंगे। इसमें सबसे पहले लॉकडाउन का उल्लंघन या होम क्वारंटाइन का उल्लंघन, जमाखोरी या फिर अधिक पैसे वसूलने का मामला पता लगता है, तो ये लोग पुलिस को जानकारी देंगे, जिसके आधार पर पुलिस कानूनी कार्रवाई करेगी। इसके अलावा ये लोग अपने घर, मोहल्ले और सभी परिचित लोगों को अरोग्य सेतु मोबाइल एप डाउनलोड कराएंगे और बाकी लोगों को भी इस एप को डाउनलोड करने के लिए जागरूक करेंगे। कोरोना वायरस से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी वॉलेंटियर के जरिये पुलिस तक पहुंचेगी। वॉलेंटियर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य लॉकडाउन का पालन कराना होगा।

कोविद-19 वॉलेंटियर स्कीम के लांच के मौके पर मध्य दिल्ली के डीसीपी संजय भाटिया। सौ. दिल्ली पुलिस

एम्स में सैनिटाइजेशन यूनिट लगाई गई

जासं, नई दिल्ली : कोरोना वायरस से लड़ने के लिए एम्स में डिसइन्फेक्टेड चैंबर लगाया गया है। इस चैंबर को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने विकसित किया है। इस सुविधा के बाद अब अस्पताल आने वाले डॉक्टर, स्वास्थ्यकर्मी व मरीजों के तीमारदार सैनिटाइज होकर अंदर जा सकते हैं। इस चैंबर में कोविड- 19 वायरस को खत्म करने वाले हाइपोसोडियम क्लोराइड घोल का इस्तेमाल किया जाता है। इस चैंबर को अस्पतालों, मॉल, बाजार, ऑफिस, अपार्टमेंट आदि के एंट्री व एग्जिट गेटों पर भी लगाया जा सकता है।

इस चैंबर में घुसते ही व्यक्ति पर 25 सेकंड तक कोरोना वायरस को खत्म करने वाले घोल का स्प्रे अपने आप होने लगता है। डीआरडीओ ने इस चैंबर को पीएसई नाम दिया है। इस चैंबर में घुसने वाले व्यक्ति का पूरा शरीर सैनिटाइज हो जाता है।

ऑटो टैक्सी वालों को चिंता, सरकारी मदद उन्हें मिलेगी या मालिकों को

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली के हजारों ऑटो, टैक्सी, ई-रिक्शा आदि चलाने वालों को इस बात की चिंता सता रही है कि सरकार की ओर से मिलने वाले 5000 रुपये उन्हें मिलेंगे भी या नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह राशि वाहनों के परमिट होल्डर को दे दी जाए और वे लोग खाली हाथ रह जाएं। यदि यह राशि वाहन के परमिट होल्डर को दे दी जाती है तो हजारों चालकों को सरकार की मदद नही मिल सकेगी।

दिल्ली सरकार ने ऑटो-टैक्सी, ई-रिक्शा, आरटीवी, ग्रामीण सेवा चलाने वालों को 5-5 हजार रुपये की आर्थिक मदद देने का फैसला किया है। सरकार की ओर से इस बारे में तैयारी की जा रही है। ऑटो-टैक्सी वालों को आर्थिक मदद पहुंचाने के लिए सरकार कई फॉर्मूलों पर चर्चा कर रही है। यह पांच हजार की राशि किसे मिलेगी, इस पर सरकार ने अभी कोई आधिकारिक बयान नही दिया है। आम आदमी पार्टी के नेता व ऑटो परिवार के अध्यक्ष इंद्रजीत सचदेवा करते हैं कि दिल्ली सरकार की ओर से मिलने वाली आर्थिक मदद वाहन चालकों को ही मिलनी चाहिए। वह कहते हैं कि इस बारे में उन्होंने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने मांग की है कि इस सुविधा के लिए चालकों का लाइसेंस और बैज नंबर लिया जाए। इसके आधार पर ही इस योजना का लाभ दिया जाए।

भूखमरी की कगार पर हैं ऑटो चालक : दिल्ली ऑटो-रिक्शा संघ और दिल्ली प्रदेश टैक्सी यूनियन के महामंत्री राजेंद्र सोनी का कहना है कि एक अनुमान के मुताबिक करीब 60 फीसद लोग ऐसे हैं, जो किराये पर ऑटो चलाते हैं और उनके नाम गाड़ी नहीं है। उनका कहना है कि ऑटो चालक भी भुखमरी की कगार पर हैं।

कालाबाजारी करने वालों पर होगी कड़ाई, जाना होगा जेल

सख्ती ▶ गृह मंत्रालय ने सभी राज्य सरकारों को पत्र लिखकर किया आगाह

आवश्यक वस्तु कानून सख्ती से लागू करने और आपराधिक मुकदमा दर्ज करने के निर्देश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

अजय भल्ला फाइल फोटो

कोरोना वायरस की महामारी पर नियंत्रण पाने के लिए लागू देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान आवश्यक वस्तुओं की महंगाई रोकने के लिए सख्ती बरतने का निर्देश दिया गया है। इस दौरान जरूरी चीजों की जमाखोरी व कालाबाजारी करने वालों पर सख्ती बरतने के लिए केंद्र ने सभी राज्यों को आवश्यक वस्तु अधिनियम को कड़ाई से लागू करने को कहा है। ऐसे लोगों को जेल की हवा भी खानी होगी।

लॉकडाउन के दौरान देश के कई हिस्सों से कालाबाजारी व जमाखोरी की वजह से आवश्यक वस्तुओं की महंगाई की सूचनाएं मिल रही हैं। इस तरह की नाजायज हरकतों पर काबू पाने के लिए सरकार ने सख्ती बरतने का फैसला किया है। खाने-पीने की चीजों के साथ ही सैनिटाइजर और मास्क की कालाबाजारी करने वालों पर आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कानूनी कार्रवाई करने का फैसला लिया गया है। केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को पत्र लिखकर ऐसे लोगों पर आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कड़ी कार्रवाई का निर्देश दिया है। उन्होंने पत्र में कहा है कि गृह मंत्रालय ने 21 दिनों के लॉकडाउन की अवधि में आपदा प्रबंधन कानून के तहत खाद्य वस्तुओं, दवाओं और चिकित्सा उपकरणों जैसी जरूरी चीजों के उत्पादन, परिवहन, मार्केटिंग और इनकी सप्लाई चेन को बनाए रखने वाली सभी गतिविधियों को मुक्त रखा है। केंद्रीय उपभोक्ता मामले व खाद्य मंत्रालय ने पहले भी 30 जून तक इसकी अनुमति दी है।

लॉकडाउन की वजह से श्रमिकों की कमी से उत्पादन के प्रभावित होने की सूचनाएं हैं। ऐसी स्थिति में जमाखोर और कालाबाजारी सक्रिय हो गए हैं। देश के कुछ छिटपुट हिस्सों से अनुचित व्यापार और इन्हें महंगे दामों पर बेचने की सूचना के मद्देनजर यह कदम उठाया गया है। गृह सचिव भल्ला ने कहा कि जो भी इस कानून के तहत दोषी पाया जाएगा, उसे सात साल की कैद या जुर्माने की सजा हो सकती है। ऐसे लोगों को पकड़े जाने के साथ ही एक अन्य कानून के तहत हिरासत में रखा जा सकता है। उन्होंने राज्य सरकारों से इस कानून पर कड़ाई से अमल करने का आग्रह किया है।

आवश्यक वस्तुओं की सूची में प्रमुख वस्तुओं को शामिल किया गया है। इनमें पेट्रोलियम और इसके उत्पाद है, जिनमें पेट्रोल, डीजल, नेफ्था और सॉल्वेंट्स प्रमुख हैं। दूसरे में खाने वाली चीजों को रखा गया है, जिनमें खाद्य तेल, तिलहन, वनस्पति, दाल, गन्ना और इसके उत्पाद जैसे गुड़, चीनी, चावल और गेहूं खास हैं। तीसरे में टेक्सटाइल्स से संबंधित वस्तुएं रखी गई है, जबकि चौथे में आवश्यक ड्रग्स और पांचवे में फर्टिलाइजर्स। इनके अलावा समय-समय पर बदली हुई परिस्थितियों में कई बार सरकार कु छ चीजों को आवश्यक वस्तु की श्रेणी में डाल दिया जाता है और बाद में स्थितियों के सामान्य होते ही उन्हें सूची से बाहर कर दिया जाता है।

कोरोना का खतरा टल जाने का भरोसा होने पर ही उड़ान प्रतिबंध हटेगा

नई दिल्ली, प्रेट्र : एक बार यह भरोसा हो जाए कि कोरोना वायरस संक्रमण नियंत्रण में आ गया है, तभी भारत घरेलू और अंतरराष्ट्रीय कमर्शियल पैसेंजर उड़ानों पर से प्रतिबंध हटाएगा। नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने बुधवार को यह कहा।

पुरी ने ट्विटर पर कहा, 'देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद उत्पन्न स्थिति के चलते घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर लगी रोक के कारण समस्याओं का सामना कर रहे लोगों के प्रति मेरी सहानुभूति है।' कोरोना वायरस महामारी से निपटने के लिए भारत में 25 मार्च से 21 दिन का लॉकडाउन चल रहा है। इस अवधि में सभी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय यात्री उड़ानों पर रोक लगाई गई है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने मालवाहक विमानों, चिकित्सा क्षेत्र में लगी उड़ानों और विशेष उड़ानों को अनुमति दी है। मंत्री ने कहा, 'जब हमें पूरी तरह से यह विश्वास हो जाएगा कि वायरस के संक्रमण को नियंत्रित कर लिया गया है तो ये पाबंदियां हटा ली जाएंगी।' उन्होंने कहा, 'मैं मुश्किल की इस घड़ी में उनके सहयोग और मदद के लिए सभी को धन्यवाद देता हूं। हम एक साथ मजबूत बनेंगे।'

दो करोड़ निर्माण श्रमिकों को राज्यों ने बांटे तीन हजार करोड़ : गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत अभी तक दो करोड़ से ज्यादा निर्माण श्रमिकों को तीन हजार करोड़ रुपये वितरित किए हैं।

पुण्य सलिला श्रीवास्तव फाइल

3.5 करोड़ पंजीकृत श्रमिकों के लिए उपलब्ध हैं 31 हजार करोड़

नियमित प्रेस ब्रीफिंग में गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने बताया, 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत सरकार ने 1.7 लाख करोड़ रुपये का राहत पैकेज घोषित किया है और इसके तहत निर्माण श्रमिकों का भी हिस्सा है। करीब 3.5 करोड़ ऐसे श्रमिक पंजीकृत हैं और राज्य सरकारों को बताया गया था कि इस मद में करीब 31 हजार करोड़ रुपये उपलब्ध हैं। राज्य सरकारों ने इस पर अमल शुरू कर दिया है और 31 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों ने एक हजार से छह हजार रुपये (निर्माण श्रमिकों के लिए) तक के नकद लाभ की घोषणा की है। दो करोड़ से ज्यादा श्रमिकों को करीब तीन हजार करोड़ की राशि दी गई है। करीब 29 लाख ऐसे श्रमिकों को खाद्य सहायता भी प्रदान की गई है।'

संयुक्त सचिव ने बताया कि राज्य सरकारों ने देश में 25 मार्च से जारी लॉकडाउन को लागू करने में ज्यादा सख्ती शुरू कर दी है और पुलिस सघन निगरानी कर रही है। विभिन्न राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में लोगों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए प्रशासन सामुदायिक नेताओं की मदद भी ले रहा है। पुण्य सलिला ने बताया कि राज्य सरकारों के अधिकारी बाजारों और बैंकों जैसे सार्वजनिक स्थलों पर मार्किंग करके या बैरीकेड लगाकर शारीरिक दूरी बनाने के लिए कदम उठा रहे हैं। उन्होंने बताया कि देश में आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की आवाजाही संतोषजनक है। आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी या जमाखोरी की आशंका के मद्देनजर गृह सचिव अजय भल्ला ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को पत्र लिखकर आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 लागू करने और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा है।

प्रभावित छात्रों के लिए विशेष अभियान चलाएंगी आइआइटी

नई दिल्ली, प्रेट्र : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) उन छात्रों के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाएंगी जिनके जॉब ऑफर कोरोना वायरस के फैलने के कारण रद हो गए हैं। केंद्रीय एचआरडी मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने बुधवार को यह जानकारी दी। निशंक ने कहा, 'मैंने आइआइटी निदेशकों से भी जॉब ऑफर रद होने से प्रभावित छात्रों के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाने को कहा है। भर्ती अभियान के दौरान जिन छात्रों को जॉब की पेशकश की गई थी, वे देश के मेधावी हैं। संकट की इस घड़ी में वे भर्ती करने वालों की मदद कर सकते हैं।'

रमेश पोखरियाल निशंक फाइल

सोमवार को एचआरडी मंत्री ने भर्ती करने वालों से कैंपस प्लेसमेंट में छात्रों से की गई जॉब पेशकश कोरोना वायरस महामारी द्वारा उत्पन्न आर्थिक मंदी के कारण वापस नहीं लेने की अपील की थी। उन्होंने कहा, 'मैंने कैंपस में सभी भर्ती करने वालों से तकनीकी शिक्षण संस्थान के ग्रेजुएट छात्रों से जॉब की पेशकश वापस नहीं लेने की अपील की है।'

न्यूज गैलरी

गगनयान जैसे कार्यक्रमों को स्थगित करे सरकार : जयराम

नई दिल्ली : कोरोना संकट से निपटने की सरकार की कोशिशों के बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय से जुड़ी संसदीय कमेटी के चेयरमैन जयराम रमेश ने सरकार से गगनयान अभियान जैसे कार्यक्रमों को स्थगित करने की मांग की है। साथ ही कहा है कि इस परियोजना के लिए प्रस्तावित करीब 10,000 करोड़ रुपये का कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में इस्तेमाल किया जाए। जयराम रमेश ने ट्वीट करते हुए सरकार से अपने बड़े प्रोजेक्टों की नए सिरे से समीक्षा करने का भी सुझाव दिया। पिछले दिनों उन्होंने पार्टी नेताओं से अलग राय रखते हुए सरकार की ओर से सांसद निधि को अगले दो साल तक के लिए निलंबित करने के फैसले का स्वागत किया था। अब उन्होंने सरकार को अगले कुछ साल के लिए गगनयान अभियान को स्थगित करने की भी सलाह दी है। हालांकि उनकी यह राय तब आई है, जब 2022 में इस कार्यक्रम के तहत भारत अपने अंतरिक्ष यात्रियों को चांद पर भेजने की तैयारी में है। (जाब्यू)

सेना के शीर्ष कमांडरों की बैठक स्थगित

नई दिल्ली : सेना ने कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों की वजह से अगले हफ्ते अपने कमांडरों की छह माह पर होने वाली कांफ्रेंस स्थगित कर दी। यह कांफ्रेंस 16 अप्रैल से होनी थी। सेना के सूत्रों ने बताया, 'कोविड-19 के कारण सेना ने अपनी छह माह पर होने वाली सेना कमांडरों की कांफ्रेंस स्थगित कर दी है। यह कांफ्रेंस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ की अध्यक्षता में होनी थी। इस कांफ्रेंस में देश के भीतर और आसपास की सुरक्षा स्थिति पर भी चर्चा होने वाली थी।' (एएनआइ)

2010 का है भर्ती मामला

प्रथम पृष्ठ से आगे

पीटीआइ टीचरों की भर्ती का यह मामला वर्ष 2010 का है। इस भर्ती में अनियमितताओं और तय प्रक्रिया का पालन न किए जाने का आरोप लगाते हुए इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। हाईकोर्ट ने भर्ती रद कर दी थी जिसके खिलाफ शिक्षकों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। सुप्रीम कोर्ट ने शुरुआती सुनवाई में ही हाईकोर्ट के फैसले पर अंतरिम रोक लगा दी थी जिसके कारण ये शिक्षक अभी तक नौकरी कर रहे थे। लेकिन बुधवार को अंतिम फैसला आने के बाद अंतरिम आदेश समाप्त हो गया है।

अब लॉकडाउन में बढ़ेगी सख्ती

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- राज्यों को लॉकडाउन और कंटेनमेंट प्लान कड़ाई से लागू करने का निर्देश
- 15 दिन बाद भी बड़ी संख्या में नए मरीजों का आना लॉकडाउन में चूक का नतीजा

लव अग्रवाल फाइल फोटो

लॉकडाउन के 15 दिन बीतने के बाद भी कोरोना के नए मरीजों की बढ़ती संख्या ने सरकार के माथे पर बल डाल दिए हैं। इस बढ़ोतरी का सबसे बड़ा कारण लॉकडाउन में नरमी को माना जा रहा है। ऐसे में अब सख्ती दिखेगी। राज्य सरकारों को लॉकडाउन का कड़ाई से पालन करने और कोरोना के मरीज वाले इलाकों में कंटेनमेंट प्लान के अक्षरशः पालन को कहा गया है। केंद्र ने राज्यों को साफ कर दिया है कि लॉकडाउन में जरा भी लापरवाही सारी कोशिशों पर पानी फेर सकती है और फिर स्थिति को संभालना और मुश्किल होगा।

स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि पिछले हफ्ते तक नए मरीजों का सामने आना स्वाभाविक माना जा रहा था। सरकार मान रही थी कि 24 मार्च को लॉकडाउन से पहले कोरोना वायरस से संक्रमित हुए लोगों में 10-12 दिनों तक इसके लक्षण सामने आते रहेंगे। इस दौरान नए संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ना भी स्वाभाविक माना जा रहा था। लेकिन पिछले दिनों में जो तेजी दिखी उससे साफ हो गया है कि न तो लॉकडाउन का कड़ाई से पालन किया गया और न ही कोरोना मरीज के संपर्क में आने वाले सभी लोगों की पहचान हो सकी। यह राज्यों के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन की विफलता है। वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि इसके बाद केंद्र सरकार की ओर से राज्यों और जिले के अधिकारियों को कड़े निर्देश जारी किए गए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए सभी संपर्कों की पहचान कर उन्हें क्वारंटाइन करना और मरीज वाले इलाके को पूरी तरह सील करना जरूरी है ताकि वायरस को उस इलाके तक ही सीमित कर उसे फैलने से रोका जा सके। भीलवाड़ा का उदाहरण सबके सामने है जहां पूरे इलाके को सील कर और लोगों को घरों से बाहर निकलने से रोकने के लिए सख्त कदम उठाकर वायरस को रोकने में सफलता मिली। बुधवार को लव अग्रवाल ने इस सिलसिले में पुणे जिले के केंद्रीय व कोंधवा इलाके को पूरी तरह सील करने का उदाहरण दिया। उनके अनुसार पूरे इलाके को सील करने के साथ ही स्थानीय प्रशासन इसके चारों ओर फैले 35 वर्गकिमी इलाके में घर-घर जाकर सर्वे कर रहा है। इस सर्वे में सभी नागरिकों का विदेश जाने, किसी कोरोना मरीज से संभावित संपर्क के साथ-साथ पहले से हुई बीमारियों का भी डाटा जुटाया जा रहा है। केरल के पठनथिट्टा जिले में भी ऐसा अभियान शुरू किया गया है।

सरकार कोरोना के बढ़ते मरीजों के साथ-साथ मरने वालों की तेजी से बढ़ती संख्या को लेकर भी गंभीर है। वैसे तो सरकार 86 फीसद मौतों के लिए मरीजों के पहले से डायबिटीज, हार्ट, किडनी और लिवर की बीमारियों को जिम्मेदार मान रही है। लेकिन लव अग्रवाल ने कहा कि कोरोना की शुरुआत में ही पहचान हो जाने के बाद बेहतर इलाज संभव है। कुछ राज्यों में सख्ती शुरू हो गई है।

पीएम मोदी की अपील, कोरोना संकट में एक गरीब परिवार की जिम्मेदारी लें

नई दिल्ली, एजेंसियां : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उन्हें बताया गया है कि कुछ लोगों ने उनके सम्मान में पांच मिनट खड़े होने का कैंपेन चलाया है। उन्होंने इस पर खिन्नता जताते हुए कहा कि पहली नजर में ही ऐसा लगता है कि कोई उन्हें विवादों में फंसाना चाहता है। मोदी ने आग्रह किया कि कोरोना संकट के इस दौर में एक गरीब परिवार की जिम्मेदारी लें। यही मेरे लिए सबसे बड़े सम्मान की बात होगी।

पीएम मोदी ने बुधवार को ट्वीट करके कहा, 'यह बात मेरे संज्ञान में लाई गई है कि कुछ लोग यह अभियान चला रहे हैं कि सब लोग मेरे सम्मान में पांच मिनट के लिए खड़े हो जाएं। पहली ही नजर में समझ में आता है कि किसी ने मुझे विवादों में घसीटने के लिए यह खुराफात की है।" उन्होंने कहा कि ऐसा हो सकता है कि कोई वाकई मुझे सम्मान और प्रतिष्ठा देने के लिए ऐसे प्रयास कर रहा हो। लेकिन अगर आप सचमुच ऐसा करना चाहते हैं तो एक गरीब परिवार की जिम्मेदारी उठा लें। उन्होंने कहा कि अगर कोई अच्छी नीयत से भी मेरे सम्मान के लिए अभियान चला रहा तो भी उनसे मेरी यही अपील है कि अगर आप वाकई मुझसे इतना प्रेम करते हैं और सम्मान देना चाहते हैं तो कम से कम कोरोना संकट के जारी रहने तक एक गरीब परिवार का बीड़ा उठा लें। मेरे लिए इससे बड़ा कोई सम्मान नहीं होगा।

आग्रह

- कहा-मेरे लिए इससे बड़ा सम्मान नहीं हो सकता
- प्रधानमंत्री ने उनके लिए ताली बजाने वाले कैम्पेन को किसी की खुराफात बताया

उल्लेखनीय है कि बिना हस्ताक्षर के ऑनलाइन एक संदेश वायरल हो चुका है, जिसमें मोदी के पोस्टर के साथ लिखा है कि पीएम मोदी को सम्मान देने के लिए अगले रविवार को यानी 12 अप्रैल की शाम को पांच बजे पांच मिनट खड़े होकर सब लोग ताली बजाएं। लेकिन अब पीएम मोदी ने खुद सामने आकर ऐसे किसी अभियान की सच्चाई को नकार दिया है। देश में 24 मार्च को 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की गई थी। इस दौरान सरकारें गरीबों को खाना और जरूरी सामान पहुंचाने के प्रयास कर रही है।

'आरोग्य सेतु' एप डाउनलोड करने की अपील

प्रधानमंत्री मोदी ने एक ट्वीट में भारतीय जनता से यह भी आग्रह किया है कि वह अनिवार्य रूप से 'आरोग्य सेतु' एप को अपने मोबाइल फोन पर अवश्य डाउनलोड करें। उन्होंने कहा कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में यह बेहद अहम कदम है। उन्होंने बताया कि इस एप के जरिए आपको कोरोना संक्रमण के बारे में सही और महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेंगी। जितने अधिक लोग इस ऐप का इस्तेमाल करेंगे, इसकी प्रासंगिकता और बढ़ जाएगी। उन्होंने इस ऐप को ऑनलाइन स्टोर से डाउनलोड करने का लिंक भी साझा किया। भारत सरकार ने विगत दो अप्रैल को यह एप लांच किया था। ताकि लोग संक्रमित लोगों से सावधान रहें।

नड्डा का कोरोना योद्धाओं के लिए धन्यवाद संदेश का आह्वान

नई दिल्ली, प्रेट्र : भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कोरोना वायरस संक्रमण रोकने के लिए लागू लॉकडाउन के दौरान काम करने वाले आपात स्टाफ के प्रति आभार जताया है। भाजपा अध्यक्ष ने लोगों से 'कोरोना योद्धाओं' को धन्यवाद देने के अभियान में शामिल होने के लिए कहा है।

जेपी नड्डा फाइल फोटो

भाजपा अध्यक्ष ने सोशल मीडिया पर दिया संदेश, पीएम मोदी पहले ही दे चुके हैं धन्यवाद संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाजपा कार्यकर्ताओं से धन्यवाद संदेश लिखने का आह्वान करने के बाद नड्डा ने सोशल मीडिया पर संदेश दिया है। प्रधानमंत्री ने पार्टी कार्यकर्ताओं से स्वास्थ्यकर्मियों, सैनिटेशन कर्मचारियों, पुलिस और अन्य आपात सेवा प्रदाताओं के प्रति आभार जताने के अभियान में लोगों से शामिल होने के लिए कहा है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा है, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर पहल करते हुए देश कोविड-19 पर काबू पाने में एकजुट है। इस साहसिक संघर्ष में कोरोना योद्धा अग्रिम मोर्चे पर हैं। मैं उनके समर्पण को सलाम करता हूं। हैशटैग थैंकयूकोरोनावारियर्स में शामिल हों।' नड्डा ने कहा कि उनका अदम्य साहस, निःस्वार्थ भाव, समर्पण और फोकस ने सुनिश्चित किया है कि कठिनाई के इस समय में भारत अपनी राह पर है।

अमित शाह ने भी नि :स्वार्थ सेवा के लिए सलाम किया

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी बुधवार को कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ संघर्ष में शामिल लोगों की नि :स्वार्थ सेवा की सराहना की। उन्होंने ट्वीट किया, 'पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में एकजुट हो कर खड़ा है। भावी मानवता के लिए संघर्ष में शामिल कोरोना योद्धाओं की नि :स्वार्थ सेवा को मैं सलाम करता हूं। हैशटैग थैंकयूकोरोनावारियर्स में शामिल हों।'

सरकारी हेल्पलाइन पर 11 दिनों में आई बाल हिंसा की 92,000 कॉल

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकारी हेल्पलाइन चाइल्डलाइन इंडिया को 11 दिनों के बीच 92,000 हजार से भी ज्यादा ऐसी फोन कॉल प्राप्त हुईं, जिनके जरिये बाल हिंसा और उत्पीड़न को रोकने के लिए मदद की मांग की गई थी। यह स्थिति इशारा करती है कि लॉकडाउन के बीच कई महिलाएं बंधक जैसी स्थिति में हैं और कुछ बच्चे उत्पीड़न के आरोपितों के साथ ही घरों में फंसे हुए हैं। चाइल्डलाइन इंडिया की उपनिदेशक हरलीन वालिया ने बताया कि देश के विभिन्न क्षेत्रों से 20-31 मार्च के बीच 'चाइल्डलाइन 1098' पर 3.07 लाख फोन कॉल आईं। इनमें 30 फीसद यानी 92,105 फोन कॉल बच्चों से जुड़ी थीं, जिनमें हिंसा और उत्पीड़न से बचाव की मांग की गई थी। वालिया के अनुसार, '25 मार्च से लॉकडाउन शुरू हुआ, जिसके बाद फोन कॉल 50 फीसद तक बढ़ गईं।' ये आंकड़े मंगलवार को जिलों में स्थित बाल संरक्षण इकाइयों के लिए आयोजित कार्यशाला में साझा किए गए। कार्यशाला में मुख्य रूप से कोरोना से जुड़े मुद्दों और बंद के दौरान बच्चों में तनाव को कम करने के रास्ते तलाशने पर चर्चा हुई।

कोरोनाग्रस्त केंद्रीय कर्मचारियों का रेलवे के अस्पतालों में होगा इलाज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

तैयारी

- रेलवे ने 25 हजार डाक्टर, 35 हजार नर्स व पैरामेडिकल कर्मी मैदान में उतारे
- यात्री डिब्बों में तैयार 11 हजार क्वारंटाइन बेड भी उपलब्ध कराए गए

कोरोना के खिलाफ छिड़े देशव्यापी युद्ध में केंद्रीय कर्मचारियों की स्वास्थ्य रक्षा के लिए भारतीय रेल अपने 2500 डाक्टरों, नर्सों और 35 हजार पैरामेडिकल कर्मचारियों को मैदान में उतारेगी। इससे रेलवे की सभी स्वास्थ्य सेवाएं अब कोरोना से संक्रमित सभी केंद्रीय कर्मचारियों को पहचानपत्र दिखाने पर उपलब्ध होंगी।

कोरोना के विरुद्ध प्रयासों को तेज करते हुए रेलवे ने अपने मौजूदा अस्पतालों को और सुसज्जित करने के साथ-साथ वहां अतिरिक्त डाक्टरों और सहायक चिकित्सा कर्मियों की नियुक्ति शुरू कर दी है। अब तक 2546 डाक्टर तथा 35153 नर्सों और सहायक मेडिकल स्टाफ की व्यवस्था की जा चुकी है। रेलवे के पास फिलहाल देश भर में फैली 586 हेल्थ यूनिटों के अलावा 45 उप मंडलीय अस्पताल, 56 मंडलीय अस्पताल, 8 उत्पादन इकाइयों के अस्पताल तथा 16 जोनल अस्पताल हैं। इनका एक बड़ा हिस्सा अब कोरोना महामारी के इलाज के लिए सभी केंद्रीय कर्मचारियों को उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रतीकात्मक फोटो

इससे पहले रेलवे की ओर से कोरोना संक्रमण का फैलाव रोकने तथा बचाव के लिए 5000 यात्री डिब्बों को आइसोलेशन वार्ड में बदलने तथा उनमें 80 हजार क्वारंटाइन बेड तैयार करने का काम शुरू किया जा चुका है। अब तक 3000 कोच में 48 हजार क्वारंटाइन बेड तैयार हो चुके हैं। इनमें से 11 हजार क्वारंटाइन बेड कोरोना संक्रमित लोगों के लिए उपलब्ध कराए जा चुके हैं।

नवलखा व तेलतुंबडे को एक हफ्ते में आत्मसमर्पण करने का आदेश

नई दिल्ली, प्रेट्र : भीमा-कोरेगांव हिंसा मामले में सुप्रीम कोर्ट ने नक्सल समर्थक गौतम नवलखा और आनंद तेलतुंबडे को एक हफ्ते के भीतर जेल अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि अब छूट की समय सीमा नहीं बढ़ाई जाएगी क्योंकि महाराष्ट्र में अदालतें काम कर रही हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 16 मार्च को दोनों नक्सल समर्थकों को तीन हफ्ते के भीतर आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया था। दोनों ने शीर्ष अदालत में याचिका दाखिल कर यह कहते हुए समय सीमा बढ़ाने की मांग की थी कि कोविड-19 महामारी के दौर में जेल जाना वस्तुतः मौत की सजा है। जस्टिस अरुण मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि आरोपितों को अग्रिम जमानत खारिज करने के फैसले और तीन हफ्ते में आत्मसमर्पण करने के निर्देश का सम्मान करना चाहिए था। पीठ ने कहा, 'हम उम्मीद करते हैं आरोपित इस अदालत के आदेश का सम्मान करते हुए आत्मसमर्पण कर देंगे जैसा उन्होंने अभी तक नहीं किया है। हमें बताया गया है कि मुंबई में अदालतें काम कर रही हैं।

बदला रवैया

कोविड-19 से जूझते इस मुस्लिम बहुल देश ने दिए कश्मीर और दूसरे मुद्दों पर भी भारत के साथ दिखने के संकेत

मलेशिया भी मदद मांगने वालों में, मांगा एचसीक्यू

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

मृदुल कुमार फाइल

कश्मीर को लेकर मलेशिया का रवैया भारत के लिए एक बड़ी चिंता का कारण था लेकिन अब इस मुस्लिम बहुल देश का रवैया बदलता नजर आ रहा है। निःसंदेह इसके पीछे पूर्व पीएम महातिर मुहम्मद का सत्ता से बेदखल होने ने अहम भूमिका निभाई है लेकिन कोविड-19 से जूझते मलेशिया को भी हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन (एचसीक्यू) चाहिए। मलेशिया ने भारत से इसकी आपूर्ति का आग्रह किया है और दोनों देशों के रिश्तों को रणनीतिक महत्व का बता कर यह संकेत दिया है कि कश्मीर को लेकर उसका रुख भी बदलेगा। बुधवार को मलेशिया की राजधानी क्वालाल्मपुर में भारतीय उच्चायुक्त मृदुल कुमार ने विदेश मंत्री हिशामुद्दीन हुसैन से मुलाकात की और जो संकेत दिए वे साफ हैं कि दोनों देश पिछले कुछ महीनों को भुला कर आगे बढ़ने को तैयार हैं।

मार्च के पहले हफ्ते में मलेशिया में राजनीतिक बदलाव हुआ है जिससे वहां मुहिद्दीन यासिन की अगुवाई में नई सरकार बनी है। यासिन की सरकार ने सत्ता में आते ही भारत के हितों के खिलाफ उठाये जाने वाले कदमों पर रोक लगा दी है। पूर्व पीएम महातिर मुहम्मद जहां बार-बार कश्मीर का मुद्दा उठा रहे थे, वहीं नई सरकार ने साफ कहा है कि भारत उसका अहम रणनीतिक साझीदार देश है। इस संकेत को भांपते हुए ही भारत ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की पाबंदी होने के बावजूद मलेशियाई सरकार को अपने नागरिकों को यहां से ले जाने की इजाजत दी। इसके बाद वहां की सरकार ने भी मलेशिया में फंसे भारतीयों को निकालने की सहूलियत दी और साथ ही अभी जो भारतीय वहां फंसे हुए हैं उन्हें सही तरीके से रखने में भारतीय दूतावास को अनुमति दी। मलेशिया के विदेश मंत्री ने भारत को इसके लिए खास तौर पर धन्यवाद दिया है। कोविड-19 के इलाज में कारगर समझी जाने वाली दवा एचसीक्यू की मांग भी मलेशिया ने की है और माना जा रहा है कि भारत उसे भी इसकी आपूर्ति करेगा।

सनद रहे कि पूर्व पीएम महातिर ने पहले जाकिर नाइक के मामले में और उसके बाद कश्मीर मसला उठा कर भारत के रणनीतिक हितों के खिलाफ काम किया था। सितंबर, 2019 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के भारत सरकार के फैसले के खिलाफ आवाज उठाई। बाद में जब भारत ने नागरिकता संशोधन कानून पारित किया तो इसके खिलाफ भी बोले। असलियत में पाकिस्तान के पीएम इमरान खान व तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगेन के साथ मिल कर उन्होंने भारत के खिलाफ एक तिकड़ी बनाने की कोशिश की। भारत ने इसका कूटनीतिक प्रतिकार किया और मलेशिया से पाम आयल खरीदने पर गैर शुल्कीय अवरोध भी खड़ा कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने स्थापित किया हेल्पलाइन नंबर

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने लॉकडाउन की अवधि के दौरान जरूरी मामलों का उल्लेख करने और सूचीबद्ध करने के लिए वकीलों और पक्षकारों की सहूलियत के लिए बुधवार को एक हेल्पलाइन नंबर स्थापित किया।

यह हेल्पलाइन नंबर सोमवार से शुक्रवार तक सभी कार्य दिवसों पर सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक और शनिवार को सुबह 10 बजे से दोपहर 1.30 बजे के बीच काम करेगा।

सुप्रीम कोर्ट के महासचिव संजीव एस. कलगांवकर ने इस संबंध में एक परिपत्र जारी किया है। इसमें कहा गया कि लॉकडाउन अवधि में वीडियो कांफ्रेंसिंग से तत्काल सुनवाई के लिए बेहद जरूरी मामलों का उल्लेख करने और सूचीबद्ध करने के संबंध में पक्षकारों की ओर से पेश होने वाले वकीलों के सवालों का जवाब देने के लिए हेल्पलाइन स्थापित की गई है। हालांकि वकील मेल के जरिये के भी अपना आग्रह भेज सकते हैं।

कह के रहेंगे माधव जोशी

साद की तलाश में अंधेरे में हाथ-पैर मार रही है पुलिस

प्रयास जारी ▶ फिर निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज पहुंची क्राइम ब्रांच

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण को लेकर देश को मुसीबत में डालने वाले तब्लीगी जमात के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद व प्रबंधन से जुड़े छह अन्य सहयोगियों को पकड़ना क्राइम ब्रांच के लिए मुसीबत साबित हो गया है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश व हरियाणा में सातों के ठिकानें पर छापेमारी की जा रही है, लेकिन किसी का कोई अता-पता नहीं है। ऐसे में फिलहाल क्राइम ब्रांच अंधेरे में ही हाथ-पैर मार रही है।

मामले की जांच कर रही क्राइम ब्रांच बुधवार को तीसरी बार मरकज पहुंची और वहां जांच की। पुलिस की जांच से पता चला है कि मरकज में सालभर देश-विदेश से लोग आते रहते थे। हर माह करोड़ों रुपये चंदा इकट्ठा किया जाता था। चंदे की पर्चियां कटती थीं। उसके बाद मौलाना साद जमातियों को इस्लाम की शिक्षा देने के लिए अलग-अलग राज्यों में भेज देता था। 15 दिन अथवा 30 दिन बाद वे लोग वापस लौटकर रिपार्ट देते थे।

निजामुद्दीन में वेरिफिकेशन अभियान : दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर वेरिफिकेशन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान लोगों से कोरोना संक्रमण के लक्षणों को लेकर पूछताछ की जा रही है ताकि किसी भी संदिग्ध को क्वारंटाइन किया जा सके। तस्वीर में स्वास्थ्यकर्मी किसी घर की डोरबेल लकड़ी से दबा रही है। एएनआइ

मामला उजागर होने के बाद बीते 28 मार्च को मौलाना साद, मौलाना मुहम्मद अशरफ, मुफ्ती शहजाद, डॉ. जीशान, मुर्शलीन सैफी, मुहम्मद सलमान व युनूस से भागने में सफल हो गया था। तब से इन सातों का कोई अता पता नहीं है।

मोबाइल साथ नहीं रखता साद : मौलाना साद की लोकेशन के बारे में क्राइम ब्रांच को इसलिए जानकारी नहीं मिल पा रही है कि वह मोबाइल फोन नहीं रखता है। लेकिन प्रबंधन से जुड़े उसके छह मौलाना तो मोबाइल रखते हैं। इनके फोन 28 मार्च से ही बंद है। क्राइम ब्रांच इन लोगों को भी ढूंढने में नाकाम साबित हो रही है। हालांकि क्राइम ब्रांच मौलाना साद के चचेरे भाई जुबेर के जरिये उस तक पहुंचने में लगी हुई है।

आठ दिनों तक खुफिया रिपोर्ट दबाए रहे अधिकारी

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

- स्पेशल ब्रांच ने 15 मार्च को ही कर दिया था आगाह
- 23 मार्च से पुलिस और प्रशासन ने शुरू किया सख्ती दिखाना

देश में कोरोना का बड़ा संकट खड़ा करने वाले तब्लीगी जमात की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, मौलाना मुहम्मद साद की मनमानी के साथ पुलिस और प्रशासन की नाकामी की भी पोल खुलने लगी है। पता चला है कि पुख्ता खुफिया रिपोर्ट को जिम्मेदार अधिकारियों ने आठ दिनों तक दबाए रखा, जिसकी वजह से इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ रहा है।

सूत्रों के अनुसार दिल्ली पुलिस के स्पेशल ब्रांच ने 15 मार्च को ही दक्षिण-पूर्वी जिला पुलिस के अलावा, स्वास्थ्य विभाग, जिलाधिकारी, एसडीएम डिफेंस कॉलोनी और अन्य संबंधित विभागों को आगाह कर दिया था कि तब्लीगी मरकज में बड़ी संख्या में देश-विदेश से आए लोग ठहरे हुए हैं। ये लोग कोरोना को लेकर संकट पैदा कर सकते हैं, लेकिन आठ दिनों तक अधिकारियों ने इस इनपुट को दबाए रखा और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। पुलिस ने 23 मार्च से सख्ती दिखानी शुरू की, लेकिन इसमें आठ दिनों का वक्त लग गया। इतना समय कोरोना को फैलाने के लिए पर्याप्त था। अगर 15 मार्च को ही मरकज खाली करा दिया गया होता तो शायद इतने बड़े स्तर पर कोरोना संक्रमण को फैलने से रोका जा सकता था।

सूत्रों के मुताबिक इस अत्यंत गोपनीय रिपोर्ट में उक्त लापरवाही का जिक्र किया गया है। मरकज में इकट्ठा हुए जमातियों के बारे में 14 मार्च को स्पेशल ब्रांच को पता चला। 15 मार्च को उसने यह सूचना वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को दी।

बताया जाता है कि प्रशासन ने मरकज के मौलाना साद व प्रबंधन से जुड़े छह मौलानाओं से संपर्क कर उन्हें खाली करने को कहा, लेकिन उन्होंने अनसुना कर दिया। 23 मार्च को स्पेशल ब्रांच ने डीसीपी दक्षिण-पूर्वी जिला आरपी मीणा और निजामुद्दीन थाना पुलिस को इस संबंध में सूचित कर सख्त कार्रवाई करने को कहा। तब पुलिस अधिकारियों ने मौलाना साद व प्रबंधन से जुड़े छह मौलानाओं को थाने बुलाकर सख्त चेतावनी दी और तुरंत खाली करने के निर्देश दिए। फिर भी मरकज खाली नहीं किया गया। इसके बाद पुलिस और प्रशासन के लोग मंत्रणा करते रहे। आखिर स्वास्थ्य विभाग ने 25 मार्च को मरकज पहुंच कर वहां ठहरे लोगों की स्वास्थ्य जांच शुरू की। इनमें छह बीमार मिले। 27 मार्च को पुलिस व प्रशासन को सूचना मिली कि मरकज से तेलंगाना गए छह लोगों व जम्मू गए एक शख्स की कोरोना से मौत हो गई है। इसके बाद पुलिस हरकत में आई और 28 मार्च को दिन भर मौलाना साद पर मरकज खाली कराने का दबाव बनाया गया। रात को जब वह खाली करने की बात मान गया तब 29 मार्च से पुलिस व प्रशासन से खाली कराना शुरू किया गया और एक अप्रैल के तड़के तक पूरा खाली कराया गया।

साद देता रहा पुलिस को झूठी जानकारी

मरकज खाली कराने से पहले पुलिस जब भी साद से वहां ठहरे लोगों की संख्या के बारे में पूछती, तो वह बार-बार 1,000 लोगों के होने की गलत जानकारी देता रहा। बाद में वहां से 2,300 लोग निकले।

द्विभाषिये लेकर चलते हैं विदेशी और दूसरे राज्यों के जमाती

मनोज मिश्रा, सहारनपुर

निजामुद्दीन मरकज से जमात के रूप में निकलने वाले गैर हिंदी द्विभाषी जमाती अपने साथ अनुवादक लेकर चलते हैं ताकि इस्लाम के प्रचार-प्रसार में भाषाई दिक्कत सामने न आए। उप्र के सहारनपुर आए 57 विदेशी व 105 दूसरे राज्यों के जमातियों के साथ भी अनुवादक हैं। अब यही द्विभाषी गैर हिंदी भाषी मरीजों व प्रशासन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं।

तब्लीगी मरकज के अमीर (प्रमुख) मौलाना साद जमातियों को धर्म के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के लिए कहते हैं। जमात गांवों में भी जाती है। इस दौरान भाषा को लेकर कोई दिक्कत न आए, इसलिए मरकज से ही द्विभाषी लेकर चलते हैं। सहारनपुर में क्वारंटाइन किए गए विदेशी जमातियों और गैर राज्यों के जमातियों के साथ भी द्विभाषी हैं। किर्गिस्तान का 49 वर्षीय जमाती कोरोना संक्रमित है। मरकज से इसे मुंबई निवासी द्विभाषी जलालुद्दीन मिला है। इसे ही आंध्र प्रदेश के जमातियों की भी मदद करनी थी। जलालुद्दीन 25 भाषाएं जानता है। उसके साथ ही कुछ और भी द्विभाषी हैं जो क्वारंटाइन किए गए हैं।

एक फरवरी 2020 के बाद तब्लीगी जमात में शामिल होकर सहारनपुर मंडल में पहुंचने वाले विदेशी जमातियों की संख्या 90 है। इनमें 57 विदेशी जमाती मस्जिदों में मिले हैं। मुजफ्फरनगर में 12 और शामली में 21 विदेशी जमाती मिले हैं। पुलिस जांच में जो कुछ सामने आया है, उसके अनुसार मंडल में दूसरे राज्यों के 373 जमाती निकले। इनमें सर्वाधिक 170 मुजफ्फरनगर में मिले। सहारनपुर में 105 जमाती निकले। शामली में 98 जमाती मिले। डीएम अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि सहारनपुर में सभी विदेशी व अन्य जमातियों को चिह्नित किया गया है। भाषाई दिक्कत न हो, इसके लिए जमातियों को निजामुद्दीन मरकज से द्विभाषिये मिलते हैं। यहां भर्ती जमातियों से बात करने के लिए इन्हीं द्विभाषियों की मदद ली जा रही है।

ऐसे बनता है द्विभाषियों और बहुभाषियों का पूल : जानकारों के मुताबिक, तब्लीगी जमात की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में एक यह भी है कि बहुभाषियों का बड़ा पूल भी बनाते जाया जाए। यह काम मुख्यतया तब्लीगी जमात के लंदन स्थित मरकज जो कि यूरोप का मुख्यालय है, में किया जाता है। वहां विभिन्न भाषाओं को जानने वाले युवा जमाती अलग-अलग मजलिसों में सालभर जुटते हैं। इन मजलिसों में मुख्य वक्ता कोई भारतीय जमाती ही होता है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के जमाती को भी तरजीह दी जाती है। मुख्य वक्ता उर्दू में अपनी बात (बयान) कहता है। जबकि दुनियाभर के अलग-अलग जानकार जो उर्दू भी जानते हैं, अलग-अलग देशों से जुटे जमातियों के लिए तुरंत अनुवाद करते चलते हैं। इसके लिए लंदन स्थित मरकज में अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। मजलिस में शामिल हर जमाती माइक्रो फोन लगाए होता है। उधर, अलग केबिन में बैठे अलग-अलग भाषाओं के द्विभाषिये उसी समय वाक्य दर वाक्य मुख्य वक्ता के बयान का अनुवाद करते चलते हैं।

पाकिस्तान कनेक्शन

जानकारों की मानें तो इन समर्पित विदेशी जमातियों को भारत से पहले कुछ समय के लिए पाकिस्तान भेजा जाता है। जहां अपनी जिम्मेदारी को साबित करने के बाद ट्रेनिंग के अंतिम पड़ाव के रूप में भारत दौरे की राह बनती है।

तब्लीगी मरकज पर कब्जा जमा सकता है जमात-ए-शूरा

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

- साद के मरकज पर कब्जे के बाद बना ली थी अलग राह
- तुर्कमान गेट स्थित दरगाह फैज इलाही को ठिकाना बनाए है यह गुट

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज के अमीर (मुखिया) मौलाना मुहम्मद साद पर कस रहे पुलिस-प्रशासन के शिकंजे का फायदा उठाते हुए तुर्कमान गेट स्थित जमात-ए-शूरा मरकज पर कब्जा कर सकता है। हालांकि यह गुट पूरे प्रकरण पर चुप्पी साधे हुए है, लेकिन सूत्र बता रहे हैं कि अंदरखाने पूरी निगाह है और भविष्य की रणनीति पर विचार चल रहा है।

मालूम हो कि आपराधिक षड्यंत्र व महामारी अधिनियम सहित कई धाराओं में मुकदमा दर्ज होने के बाद मुहम्मद साद और उसके करीबी फिलहाल फरार हैं। इनके खिलाफ पुलिस ने लुकआउट सर्कुलर जारी किया है और धरपकड़ के लिए दिल्ली व उत्तर प्रदेश में दबिश दे रही है। जानकारों की मानें तो साद की गिरफ्तारी और सजा की स्थिति में जमात को चलाने के लिए नए अमीर का चयन करना पड़ेगा। ऐसे में जमात शूरा के नाम से तुर्कमान गेट के दरगाह फैज इलाही में मुख्यालय बनाए तब्लीगी का दूसरा गुट इसके लिए आगे आ सकता है। इस गुट के लोगों का मानना है कि अगर साद लोगों की सलाह और सरकार के दिशा-निर्देशों को मानकर मरकज का आयोजन स्थगित कर देता तो कोरोना को लेकर इतनी भयावह स्थिति नहीं होती। जमात के दामन पर यह दाग नहीं लगता। स्वयं इस गुट ने कोरोना मामले को देखते हुए अपने सारे आयोजन समय रहते स्थगित करते हुए लोगों को उनके-उनके घर भेज दिया था।

साद और जुहेरूल हसन के गुट में हुआ था खूनी संघर्ष : शूरा (निर्णायक मंडल) किसी संस्था की निर्णय लेने वाली बड़ी इकाई होती है, लेकिन मौलाना साद ने तब्लीगी जमात पर कब्जा करने के लिए तत्कालीन अमीर मौलाना जुबेर के वर्ष 2015 में निधन के बाद इसको भंग कर दिया था। बिना शूरा के निर्णय के ही साद ने मौलाना जुबेर की जनाजा नमाज भी पढ़ी थी। यह वही पढ़ सकता है, जो उस समय नायब होगा और अमीर बनेगा। इसे लेकर साद और जुबेर के पुत्र मौलाना जुहेरूल हसन के गुट में खूनी संघर्ष भी हुआ था। यह विवाद वर्ष 2018 में तब खत्म हुआ जब मौलाना जुहेरूल हसन व जमात शूरा के सदस्य मौलाना इब्राहिम व मौलाना अहमद लाठ समेत अन्य ने तुर्कमान गेट को नया ठिकाना बना लिया। यहां सारे निर्णय शूरा के माध्यम से ही लिए जाते हैं।

तब्लीगी जमातियों ने 'जोड़' में बांटी तकलीफ

बिजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

हरियाणा में तब्लीगी जमातियों ने अपने मजहबी कार्यक्रम 'जोड़' के जरिये ही जाने-अनजाने कोरोना वायरस की तकलीफ बांटी है। दिल्ली से सटे दक्षिण हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद औद्योगिक नगरों और इनसे सटे मेवात के नूंह व पलवल जिले में संक्रमित 105 मरीजों में 87 तब्लीगी अथवा इनके संपर्क में आए वे लोग हैं जिन्होंने 'जोड़' में हिस्सा लिया था।

क्या है जोड़ : मस्जिदों में रात को इशा की नमाज से सुबह फजर की नमाज पढ़ने तक के कार्यक्रम को जोड़ कहा जाता है। जमाती घर-घर जाकर लोगों को मस्जिद में होने वाली तकरीर के लिए आमंत्रित करते हैं। क्षेत्र के 10 से 30 प्रमुख लोग बुलाए जाते हैं और इन्हें करीब 10 घंटे के दौरान मजहबी घुट्टी पिलाई जाती है। जोड़ हॉल के अंदर होता है। व्यवस्था में जुटे लोगों को भी अंदर नहीं आने दिया जाता। जोड़ में हिस्सा ले रहे लोग सिर्फ पानी पी सकते हैं, बाकी भोजन या जलपान लेने की इजाजत हॉल में नहीं होती। जमाती लोगों के साथ भोजन भी करते हैं।

चार जिलों में सबसे ज्यादा केस : फरीदाबाद, गुरुग्राम सहित इनसे लगते मेवात क्षेत्र के नूंह और पलवल में अब तक 87 जमातियों और इनके संपर्क में आए लोगों के टेस्ट पॉजिटिव आए हैं। नूंह में सबसे ज्यादा 38 संक्रमित लोगों में 35 जमाती हैं। पलवल में 28 संक्रमित मरीजों में 27 जमाती या इनके संपर्क में आए लोग हैं। फरीदाबाद के कुल 28 में से 17 और गुरुग्राम के कुल 11 में से 8 जमाती हैं।

पुन्हाना में भी मरकज, नूंह को बनाया केंद्र : दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात का मुख्यालय (मरकज) है, लेकिन हरियाणा के पुन्हाना में उनका स्थानीय मुख्यालय (मरकज) है। जमातियों ने नूंह को अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाया था। यहीं से जमाती विभिन्न गांवों व शहरों में जाते और लौटकर आते थे। हरियाणा सरकार ने नूंह और पलवल जिला के कोरोना संक्रमित जमातियों को इलाज के लिए भी नूंह जिला के नल्हड मेडिकल कॉलेज में रखा है।

हरियाणा में छिपे जमातियों पर अब हत्या के प्रयास के मुकदमे होंगे

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : निजामुद्दीन मरकज (मुख्यालय) से आकर हरियाणा में छिपे जमातियों के समर्पण करने का समय बुधवार शाम पांच बजे खत्म हो चुका है। राज्य के गृह मंत्री अनिल विज के मुताबिक इसके बाद पकड़े जाने वाले जमातियों के विरुद्ध हत्या के प्रयास (धारा 307) में मुकदमा दर्ज किया जाएगा। यदि टेस्ट पॉजिटिव रहा तो मुकदमा चलता रहेगा और रिपोर्ट नेगेटिव आने की स्थिति में धारा 307 हटा दी जाएगी। बुधवार शाम तक इस अवधि तक करीब दो सौ तब्लीगी जमाती प्रशासन के समक्ष पेश हुए। राज्य में तब्लीगी जमातियों की संख्या अब 1562 हो चुकी है। इनमें 82 तब्लीगी जमाती ऐसे हैं, जिन्हें कोरोना संक्रमित पाया गया है।

'कोरोना के लिए किसी समुदाय या क्षेत्र को जिम्मेदार न ठहराएं'

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोविड-19 से जुड़े सामाजिक तिरस्कार के मसले पर सरकार ने बुधवार को एक एडवाइजरी जारी कर लोगों से अनुरोध किया कि कोरोना वायरस के प्रसार के लिए किसी समुदाय या क्षेत्र को जिम्मेदार न ठहराएं। तब्लीगी जमात का प्रकरण सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर मुस्लिम समुदाय को वायरस के प्रसार के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने के मद्देनजर यह एडवाइजरी जारी की गई है।

स्वास्थ्य मंत्रालय की वेबसाइट पर पोस्ट की गई इस एडवाइजरी में कहा गया है कि ऐसा व्यवहार दुश्मनी, अराजकता और सामाजिक व्यवधान बढ़ा सकता है। सरकार ने एडवाइजरी में कोरोना वायरस प्रसार के मद्देनजर यह भी बताया है कि क्या करें और क्या न करें। एडवाइजरी में लोगों से अनुरोध किया गया है कि स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों या पुलिस को निशाना न बनाएं क्योंकि ये आपकी मदद के लिए हैं। ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिसमें कोविड-19 से प्रभावित लोगों के साथ-साथ स्वास्थ्य कर्मियों, सफाई कर्मियों और पुलिस कर्मियों के साथ संक्रमण की आशंका से भेदभाव किया जा रहा है। यहां तक कि जो लोग कोविड-19 से ठीक हो चुके हैं, उनके साथ भी भेदभाव किया जा रहा है। ऐसे पूर्वाग्रहों का तत्काल निराकरण करने की जरूरत है।

उप्र में घर से निकलने पर अब मास्क पहनना जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : उत्तर प्रदेश में अब घर से बाहर निकलने पर मास्क लगाना अनिवार्य होगा। हर व्यक्ति ट्रिपल लेयर मास्क अनिवार्य रूप से लगाएगा। अगर मास्क नहीं है तो साफ कपड़े, रुमाल, गमछे या दुपट्टे को तीन परत में लपेटकर मास्क के रूप में मुंह पर बांधा जा सकता है। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि अब यदि कोई व्यक्ति बिना मास्क के बाहर घूमता मिला तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह आदेश एपिडेमिक एक्ट 1897 और उत्तर प्रदेश एपिडेमिक डिजीज कोविड-19 विनियमावली 2020 के तहत जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि किसी भी परिस्थिति में इस्तेमाल किए हुए मास्क या फेस कवर को बिना धोए दोबारा मुंह और नाक नहीं ढकना चाहिए। उन्होंने बताया कि एन-95 मास्क केवल चिकित्साकर्मियों को पहनने की संस्तुति की गई है।

मध्य प्रदेश में लगाया गया एस्मा

राज्य ब्यूरो, भोपाल : मध्य प्रदेश में कोरोना वायरस के फैलाव को देखते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वास्थ्य सेवाओं को अत्यावश्यक सेवा घोषित कर दिया है। इसके तहत अब स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाएं देने से कोई इन्कार नहीं कर सकेगा।

अब न तो स्वास्थ्य का अमला ड्यूटी पर आने से मना कर सकता है और न दवा दुकानदार दुकान खोलने या निर्माता दवा या उपकरण बनाने से इन्कार कर सकता है। यदि किसी ने ऐसा किया तो उसके खिलाफ अत्यावश्यक सेवा अनुरक्षण कानून (एस्मा) के तहत कार्रवाई होगी।

एस्मा लगाना समझ से परे : कमल नाथ : उधर, पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ ने स्वास्थ्य सेवाओं पर एस्मा लागू करने के फैसले को समझ से परे बताया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि जब चिकित्सक, मेडिकल स्टाफ, सरकारी अधिकारी-कर्मचारी सभी बेहद ईमानदारी से काम कर रहे हैं तो फिर एस्मा का फैसला समझ नहीं आता। राज्यसभा सदस्य विवेक तन्खा ने भी मप्र सरकार के इस फैसले पर आपत्ति जताई है।

तब्लीगियों की हरकतें देशद्रोही, सख्त धाराएं लगें : इंद्रेश कुमार

जासं, नई दिल्ली : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने कहा कि पकड़े जा रहे तब्लीगी जमात के लोगों की हरकतें देशद्रोही और समाजद्रोही हैं। इन पर सख्त से सख्त धाराएं लगनी चाहिए। राज्य सरकारों को भी इनसे सख्ती से निपटना चाहिए। इंद्रेश कुमार अखंड भारत मोर्चा की वेबसाइट को लांच करने के बाद फेसबुक लाइव के माध्यम से कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने देश के मुस्लिम नेताओं और धर्मगुरुओं पर कटाक्ष किया कि अब तक किसी भी बड़े मुस्लिम नेता ने तब्लीगी जमात को यह समझाने की कोशिश नहीं की है कि वे असामाजिकता न करें।

कोरोना संक्रमण फैलाने की अफवाह के बाद भिड़े दो समुदायों के लोग, एक की हत्या

जागरण संवाददाता, गुमला

- झारखंड के गुमला में मंगलवार रात हुई घटना, आधा दर्जन घायल

झारखंड में गुमला के सिसई में कोरोना संक्रमण फैलाने की अफवाह में मंगलवार रात दो समुदायों के बीच हिंसक झड़प हो गई। इसमें एक समुदाय के युवक की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई, जबकि दोनों समुदायों के आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। इनमें दो लोगों का रांची के रिम्स में इलाज चल रहा है। घटना को लेकर दूसरे दिन भी सिसई में तनाव रहा। एहतियात के तौर पर पूरे इलाके में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी लगातार इलाके में कैंप कर रहे हैं। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए लोगों को घरों से निकलने पर पूर्ण पाबंदी लगा दी गई है। पुलिस दोनों पक्षों से 22 लोगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ कर रही है। आइजी नवीन कुमार सिंह ने बताया कि अफवाह फैलाने वालों को चिन्हित कर लिया गया है। उन्हें बख्शा नहीं जाएगा।

दो-तीन दिनों से फैली थी अफवाह : बताया जाता है कि सिसई में दो-तीन दिनों से कोरोना का संक्रमण फैलाने को लेकर अफवाह फैली थी। इसी बीच मंगलवार शाम अनिस आलम नामक दिव्यांग युवक चेकनाका के समीप कुदरा गांव में चला गया था। लोगों ने मुहल्ले में आने का कारण पूछते हुए उसकी जमकर पिटाई कर दी। समुदाय विशेष के युवक की पिटाई की खबर फैली तो कुछ लोगों ने दोनों समुदाय के लोगों के अलग-अलग गोलबंद होने की खबर फैला दी। इसके बाद सिसई खास बस्ती के लोग हरवे-हथियार लेकर सिसई बस्ती की ओर निकल पड़े। फिर चोर-चोर का शोर मचाना शुरू कर दिया। आवाज सुन दूसरे समुदाय के लोग भी पहुंच गए। उनके पहुंचते ही सिसई खास बस्ती के लोगों ने घातक हथियारों से उनपर हमला बोल दिया। इस हमले में बोलवा उरांव की मौत हो गई।

मां के दूध ने दी ताकत, दो साल के मनजिंदर ने दी कोरोना को मात

सुशील पांडे, नवांशहर

कोरोना के विजेता

दो साल के मनजिंदर सिंह ने मां के दूध से मिली ताकत से कोरोना जैसी बीमारी को मात दी है। आइसोलेशन वार्ड में भी वह मां का दूध पीता रहा। डॉक्टरों के मुताबिक दवाइयों और मां के दूध ने बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी बढ़ा दी है कि अब कोरोना वायरस दोबारा उसे संक्रमित नहीं कर सकता है। हालांकि मां भी कोरोना संक्रमित है, लेकिन उससे बच्चे को कोई खतरा नहीं है। इस मासूम की मंगलवार को दूसरी रिपोर्ट नेगेटिव आई तो मां की आंखों से आंसू निकल आए। उसने बच्चे को सीने से लगाकर परमात्मा का शुक्रिया अदा किया। दो दिन पहले ही डॉक्टरों ने अस्पताल में बच्चे का दूसरा जन्मदिन मनाया था। बच्चे के दादा बुजुर्ग पाठी की 18 मार्च को कोरोना से मौत हुई थी।

मासूम मनजिंदर का इलाज करने वाले डॉक्टर गुरपाल कटारिया का कहना है कि बच्चा बहुत समझदार है। नर्सिंग स्टाफ जब उसे दवा पिलाता था तो वह बिना जिद किए पी लेता था। दवा पिलाने पर कभी नहीं रोया। बच्चे को आइसोलेशन वार्ड में भी घर जैसा माहौल मिला। इसी वार्ड में उसकी मां सहित परिवार के छह अन्य सदस्य रखे गए थे। वह एक तरह से परिवार के साथ ही रहता था। कई बार बाहर जाने की जिद करता था, लेकिन परिवार के लोग उसे समझा देते थे। डॉ. गुरपाल के अनुसार बच्चा आइसोलेशन वार्ड में अपनी मां के पास ही रहता है। मां के हाथ से ही खाना खाता है और अब भी मां का दूध पीता है। डॉक्टर के अनुसार यह वायरस मां के दूध के साथ ट्रांसमिट नहीं होता है। बच्चे को समय-समय पर दवाई दी गई। इसके साथ मां का दूध भी बहुत लाभकारी रहा है। वह अब भी मां के पास ही रहेगा। मनजिंदर की मां की रिपोर्ट पांच दिन बाद आएगी। अगर रिपोर्ट भी नेगेटिव आएगी तो फिर दोनों को एक साथ डिस्चार्ज किया जाएगा।

परिवार के तीन अन्य बच्चे भी हुए कोरोना से मुक्त : बुजुर्ग पाठी के परिवार के तीन अन्य बच्चे भी कोरोना से मुक्त हो गए हैं। आठ वर्षीय गुरलीन फतेह सिंह की बेटी है, जो सोमवार को ही ठीक हो गई थी। 18 वर्षीय हरप्रीत कौर व 12 वर्षीय किरणप्रीत कौर सगी बहनें हैं। डॉक्टर के अनुसार तीनों बच्चे डॉक्टर का हमेशा ही कहना मानते थे। बच्चे के चाचा फतेह सिंह ने भी कोरोना पर विजय पाई थी।

फिल्म निर्माता करीम मोरानी भी कोरोना पॉजिटिव

मुंबई, प्रेट्र : फिल्म निर्माता करीम मोरानी में भी कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई है। एक दिन पहले ही उनकी दोनों बेटियों शजा और जोया कोरोना संक्रमित पाई गई थीं। उनसे पहले बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर और अभिनेता पूरब कोहली भी कोरोना संक्रमित पाए गए थे। शजा और जोया छह अप्रैल को कोरोना संक्रमित पाई गई थीं और दोनों का अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। फिल्म निर्माता के भाई मुहम्मद मोरानी ने बताया, 'करीम भाई कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। उनकी जांच रिपोर्ट बुधवार सुबह मिली है। हम उन्हें नानावटी अस्पताल में भर्ती करवा रहे हैं। उनकी पत्नी और घर के स्टाफ कोरोना निगेटिव पाए गए हैं। शजा और जोया की तबीयत अब बेहतर है। शजा के दो टेस्ट और होंगे।' करीम मोरानी शाह रुख खान की फिल्म रा.वन, चेन्नई एक्सप्रेस, हैप्पी न्यू ईयर और दिलवाले के सहनिर्माता रहे हैं।

कार्रवाई

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भोपाल के सीएमएचओ डॉ डेहरिया का किया तबादला

शिवराज ने जिस अधिकारी को सराहा, उसी को हटा दिया

राज्य ब्यूरो, भोपाल

- आठ दिन पहले ही सुधीर को कर्मठ और समर्पित अधिकारी बता सैल्यूट किया था

कोरोना संकट के दौर में भोपाल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमएचओ) सुधीर डेहरिया को अचानक हटाकर सीहोर भेज दिया गया है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आठ दिन पहले ही डेहरिया को कर्मठ और समर्पित अधिकारी बता सैल्यूट करते हुए कहा था, 'हमें आप पर गर्व है। लेकिन, बुधवार को यकायक उनको हटाए जाने के निर्णय कर लिया, जिस पर सवाल उठने लगे हैं।

बताया जाता है कि भोपाल में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ने को लेकर वरिष्ठ स्तर पर समीक्षा के बाद यह पाया गया कि स्वास्थ्य विभाग में अपेक्षित सतर्कता का ध्यान नहीं रखा जा रहा। स्वास्थ्य विभाग के कई कर्मचारी इस समय कोरोना की चपेट में हैं। विभाग ने इस दौरान जरूरी सुरक्षात्मक उपाय अपनाने में ढील बरती और समुचित स्क्रीनिंग भी नहीं की जा रही। एक दिन पूर्व ही अतिरिक्त मुख्य सचिव मोहम्मद सुलेमान को स्वास्थ्य विभाग की कमान सौंपी गई है। उनके साथ ही स्वास्थ्य संचालक बतौर सुदाम खाडे की पदस्थापना के आदेश जारी किए गए हैं। इस बीच जब नए सिरे से भोपाल की समीक्षा की गई तो डॉ. डेहरिया को हटाने का फैसला कर दिया गया। यह भी बताया गया कि डॉ. डेहरिया को लेकर कई स्तर पर शिकायतें की गई कि वे कोरोना नियंत्रण पर कम ध्यान दे रहे हैं, जबकि प्रचार-प्रसार पर उनका ज्यादा फोकस है।

शिवराज सिंह चौहान फाइल

एक सप्ताह पहले भी हटाए गए थे

डॉ. डेहरिया को सीएमएचओ के पद पर ही सीहोर भेजा गया है। सीहोर के डॉ. प्रभाकर तिवारी को भोपाल का नया सीएमएचओ बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि एक सप्ताह पहले भी डेहरिया को सीएमएचओ पद से हटाकर जेपी अस्पताल में बतौर विशेषज्ञ पदस्थ कर दिया गया था, लेकिन बाद में एक प्रशासनिक अधिकारी के कहने पर छह घंटे के भीतर ही उन्हें वापस सीएमएचओ बना दिया गया था।

घर की दहलीज से लौटने पर आए थे सुर्खियों : डॉ. डेहरिया उस वक्त सुर्खियों में आए थे, जब कोरोना संक्रमण के चलते वह लगातार पांच दिन की ड्यूटी के बाद थोड़ी देर के लिए अपने घर पहुंचे थे। 30 मार्च को घर के बाहर चबूतरे पर बैठकर उन्होंने अपने परिजनों से मुलाकात की और चाय पीकर वापस ड्यूटी पर लौट आए थे। डॉ. डेहरिया की यह फोटो जमकर वायरल हुई और उन्हें लोगों की तारीफ भी मिली। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी 31 मार्च को डॉ. डेहरिया के इस फोटो को अपने ट्विटर पर टैग कर उन्हें 'कोरोना वॉरियर' बताते हुए शत-शत नमन किया और गर्व भी जताया था।

कोरोना संक्रमित शवों का ऐसे करें अंतिम संस्कार

कोरोना संक्रमण से जीते-जी ही नहीं, दुर्भाग्यवश मौत के बाद भी संकट है। संक्रमण फैलने के डर से अपने परिजन भी अंतिम दर्शन और संस्कार से कन्नी काट रहे हैं। लेकिन भारतीय संस्कृति में शवों का अनादर पाप माना जाता है। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि कोरोना संक्रमित व्यक्तियों के शवों को कैसे दफन करें या उनका दाह संस्कार करें। दरअसल, यह मामला इसलिए प्रासंगिक बन गया है, क्योंकि पिछले सप्ताह बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) ने एक सर्कुलर जारी किया था कि कोविड-19 संक्रमितों के शवों का नजदीकी श्मशान में बिना किसी रस्म-रिवाज या अनुष्ठान के दाह संस्कार किया जाएगा। बाद में उसमें संशोधन कर बड़े कब्रगाहों में दफनाने की भी अनुमति दी गई।

क्यों आया यह आदेश

महानगरपालिका के आयुक्त कहते हैं कि यह सर्कुलर इसलिए जारी किया गया कि एक समुदाय के नेता ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि कब्रगाह घनी आबादी वाले क्षेत्र में स्थित है। इस कारण आसपास के रहवासी क्षेत्र में संक्रमण फैलने का खतरा है। हिंदुजा अस्पताल में कोविड-19 संक्रमित एक जनरल सर्जन की मौत हो गई थी। उनके परिवार वालों ने शव के अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद 27 मार्च को निकाय कर्मियों की गैरमौजूदगी में ही उसे दफना दिया। इस घटना के बाद बीएमसी को इस बात की चिंता हुई कि क्या शव दफनाने में सतर्कता बरती गई?

क्या हुई सिफारिश

बीएमसी ने कहा कि ऐसे शवों के संस्कार बिजली या पाइप्ड प्राकृतिक गैस सुविधाओं वाले श्मशान में किए जाएं। सर्कुलर में यह भी कहा गया कि शव को प्लास्टिक में पैक करके भी दफनाने में संदूषण (कन्टैमनेशन) का खतरा रहेगा, क्योंकि प्लास्टिक में विघटन (डिकंपोजिशन) देरी से होगा। यह भी कहा गया कि अंतिम क्रिया में पांच लोग से ज्यादा नहीं होने चाहिए।

कितनी जल्दी करें संस्कार?

मुंबई के केईएम अस्पताल के फॉरेंसिक विभाग के प्रमुख डॉ. हरीश पाठक का कहना है कि शव का जल्द से जल्द संस्कार कर दिया जाना चाहिए। यदि इसे शवगृह में रखा जाता है तो इसे 4-6 डिग्री सेल्सियस तापमान में रखा जाना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक, संक्रामक शव को उचित भस्मक (इन्सिनरेटर) में जलाया जाना चाहिए, जिसके प्राथमिक चैंबर का तापमान 800 डिग्री सेल्सियस और द्वितीयक चैंबर का तापमान 1000 डिग्री सेल्सियस हो। बायोमेडिकल कचड़े के निपटारे के लिए ऑटो-क्लेव मशीन का इस्तेमाल होना चाहिए।

क्या हैं केंद्रीय दिशा-निर्देश

कोविड-19 रोगियों के शवों के बारे में स्वास्थ्य मंत्रालय का विस्तृत दिशा-निर्देश है। इसमें दाह-संस्कार और दफन - दोनों की अनुमति है और शवों को दफनाये जाने से संक्रमण के खतरे का कोई उल्लेख नहीं है

ये बरतें एहतियात

- शव को लीक प्रूफ प्लास्टिक बैग में पैक किया जाए।
- बैग को खोलते समय सिर्फ चेहरा ही दिखे।
- शव को नहलाने, चूमने या उससे किसी को लिपटने नहीं दिया जाए।
- परिजन धार्मिक पाठ और पवित्र जल के छिड़काव में शव को छुए नहीं।
- कोविड-19 रोगी के शव का लेपन या उसके पोस्टमार्टम से बचें।
- यदि ट्यूब या कैथेटर को निकाला जाए तो घाव को एक फीसद हाइपोक्लोराइट वाले घोल से विसंक्रमित कर लीक-प्रूफ पट्टी बांधी जाए ताकि शव से कोई रिसाव नहीं हो।
- नाक और मुंह को भी इस तरह बंद किया जाए कि शरीर का द्रव बाहर नहीं आ पाए।
- शव को बैग में रखने के बाद भी उसे भी हाइपोक्लोराइट से विसंक्रमित करें।
- बैग को परिवार द्वारा दिए गए कपड़े से ढका जा सकता है।
- वैसे तो विसंक्रामित बैग के परिवहन या हैंडलिंग में संक्रमण का खतरा नहीं होता, लेकिन उसे हैंडल करने वालों को निजी सुरक्षा कवच (पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट- पीपीई) पहनना चाहिए।

लेकिन दफनाने की परंपरा का क्या?

इसके लिए कहा गया कि दफनाने की अनुमति तभी होगी, जब कि कब्रगाह बड़ा होगा और आसपास की आबादी को संक्रमण का खतरा नहीं होगा। लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि किस आकार के कब्रगाह में दफनाने की अनुमति होगी। महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे का कहना था कि शवों के संस्कार के बारे में केंद्र सरकार की गाइडलाइन का पालन किया जाना चाहिए।

क्या दफनाने से संक्रमण का खतरा है?

महाराष्ट्र स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के संयुक्त निदेशक डॉ. सतीश पवार बताते हैं कि एचआइवी तथा सार्स-कोरोना वायरस-2 से संक्रमित लोगों के शव बायोसेफ्टी लेवल दो और तीन के तहत आते हैं। इनके शव को सील कर दफनाना सुरक्षित माना जाता है। शव विघटन (डिकंपोज) में अमूमन 7-10 दिन लगता है और 3-4 दिन में शव का द्रव सूख जाता है। सैद्धांतिक तौर पर शव का द्रव सूखने तक वायरस जीवित रह सकते हैं। लेकिन कोविड-19 का संक्रमण ड्रॉपलेट्स (खांसने-छींकने से निकलने वाले बूंदों) से फैलता है। फिलहाल, इस ऐसा कोई मामला सामने नहीं आया है कि शव से रिसे द्रव से भूमिगत जल दूषित हुआ हो और संक्रमण फैला हो। यदि शव का दाह-संस्कार किया जाता है तो राख से खतरा नहीं है। संक्रमण का खतरा सिर्फ श्मशान कर्मी, पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर तथा शव को हैंडल करने वालों को होता है। लेकिन यदि सभी एहतियात बरते जाएं तो दफनाना या दाह संस्कार करना - दोनों ही सुरक्षित हैं। लेकिन इसमें बड़े जमावड़े से बचा जाना चाहिए, क्योंकि यह संभव है कि परिजन संपर्क में रहे हों।

(स्रोत: मीडिया रिपोर्ट)

देशभर में संक्रमितों का आंकड़ा 5500 के पार

कोरोना का कहर ▶ महाराष्ट्र में 11 सौ और तमिलनाडु में सात सौ से ज्यादा लोग हुए संक्रमित

उपचार के बाद पांच सौ लोग पूरी तरह से ठीक हुए

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस से पीड़ितों की संख्या 55 सौ को पार कर गई है। 500 लोग पूरी तरह से ठीक भी हुए हैं। पौने दो सौ से ज्यादा लोगों की अब तक जान जा चुकी है। देश में अब तक एक लाख 20 हजार से ज्यादा लोगों की कोरोना जांच की गई है। रोजाना जांच के मामलों में भी वृद्धि हो रही है।

विभिन्न राज्य सरकारों की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक बुधवार को 360 कोरोना पॉजिटिव मामले सामने आए। इनको मिलाकर संक्रमितों का आंकड़ा 5699 पर पहुंच गया है। महाराष्ट्र में आठ और कर्नाटक में एक व्यक्ति की मौत भी हुई है और मृतकों की संख्या 180 हो गई है। वहीं, शाम पांच बजे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले चौबीस घंटे में 485 नए केस मिले हैं और संक्रमितों की कुल संख्या 5,274 हो गई है। इनमें 71 विदेशी भी शामिल हैं। इस दौरान 25 लोगों की मौत हुई है और मृतकों की संख्या 149 हो गई है। 410 लोग स्वस्थ भी हुए हैं। हालांकि, इससे पहले, शाम चार बजे के नियमित प्रेस कांफ्रेंस में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने पिछले चौबीस घंटे यानी सोमवार सुबह नौ बजे से मंगलवार नौ बजे के बीच 32 लोगों की मौत हुई और 773 नए मामले सामने आने की बात कही थी। आंकड़ों में अंतर के बारे में अधिकारियों का कहना है कि राज्यों से आंकड़ें देर से मिलने के चलते राज्यों और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से जारी होने वाले आंकड़ों में अंतर होता है। इसके अलावा अलग-अलग राज्यों से देर रात तक आंकड़ें जारी होते रहते हैं।

देश में महाराष्ट्र की स्थिति सबसे चिंता की वजह बनी हुई है। बुधवार को भी राज्य में 117 नए मामले आए और संक्रमितों की संख्या 1135 हो गई है। सबसे बड़ी चिंता एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती मानी जाने वाली मध्य मुंबई की धारावी में संक्रमण का बढ़ता प्रकोप है। अब तक इस बस्ती में 13 लोग संक्रमित पाए गए हैं। आठ लोगों की मौत के साथ ही राज्य में मरने वालों की संख्या 72 हो गई है। इसके अलावा नासिक में 22 संदिग्धों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

तमिलनाडु में 48 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 738 हो गई है। महाराष्ट्र के बाद तमिलनाडु में ही सबसे ज्यादा संक्रमित हैं। तेलंगाना में भी 49 नए केस मिले हैं और पीड़ितों का आंकड़ा 453 पर पहुंच गया है। आंध्र प्रदेश में 19 नए केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 348 हो गई है। केरल में नौ केस मिले हैं और 345 संक्रमित हो गए हैं, जबकि कर्नाटक में छह नए केस सामने आए हैं और पीड़ितों की संख्या 181 पर पहुंच गई है।

गुजरात में 11 नए केस मिले हैं और संक्रमित 186 हो गए हैं। जम्मू-कश्मीर में 33 पॉजिटिव केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 158 हो गई है। इसी तरह पंजाब में छह नए केस के साथ 106 संक्रमित हो गए हैं। जबकि, हरियाणा में 11 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 141 हो गई है।

उत्तराखंड में भी दो नए मामले सामने आए हैं और दोनों जमाती हैं। राज्य में कुल 33 संक्रमित हो गए हैं। उत्तर प्रदेश में भी सात नए मामले मिले हैं और पीड़ित 343 हो गए हैं। बंगाल में दो नए केस मिले हैं और आंकड़ा 71 हो गया है। 19 नए केस के साथ मध्य प्रदेश में कुल 346 संक्रमित हैं। जबकि, राजस्थान में भी 21 नए केस सामने आए हैं और संक्रमितों का आंकड़ा 364 हो गया है।

अब तक 1,21,271 लोगों की जांच : भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के मुताबिक देश में अब तक 1,21,271 लोगों की जांच की गई है। मंगलवार को एक दिन में 13,345 जांच की गई, जिसमें से 2,267 जांच निजी लैबों में हुई। आइसीएमआर के तहत 139 लैब संचालित हैं, जबकि 65 निजी लैब को भी जांच करने की अनुमति दी गई है।

सड़क पर पेंटिंग बना कोरोना से बचाव का संदेश : मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पथरिया निवासी देवेंद्र प्रजापति और उनके बच्चों ने सड़क पर पेंटिंग बनाकर कोरोना योद्धाओं के योगदान व महामारी से बचाव के उपायों को छतरी से दर्शाया है। जो कोरोना से बचाव करता है। इसमें प?लिस, डॉक्टर्स, मीडिया और सफाईकर्मियों को तीलियों के रूप में चित्रित करने के साथ घर में ही रहने, शारीरिक दूरी बनाए रखने, मास्क पहनने व हाथों को सैनिटाइज करने का संदेश भी दिया है। पेंटिंग बनाने में देवेंद्र की मदद उनके 11 वर्षीय भतीजे कृष्णा प्रजापति ने की। हरवेंद्र सिंह

देश में कहां कितने संक्रमित

राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	1,135
तमिलनाडु	738
दिल्ली	576
केरल	345
उत्तर प्रदेश	343
आंध्र प्रदेश	348
राजस्थान	364
मध्य प्रदेश	346
तेलंगाना	453
कर्नाटक	181
गुजरात	186
जम्मू-कश्मीर	158
हरियाणा	152
पंजाब	106
बंगाल	71
उत्तराखंड	33
बिहार	38
असम	26
ओडिशा	42
चंडीगढ़	18
लद्दाख	14
हिमाचल प्रदेश	28
अंडमान-निकोबार	10
छत्तीसगढ़	10
गोवा	7
पुडुचेरी	4
झारखंड	4
मणिपुर	2
मिजोरम	1
त्रिपुरा	1

भारत मे भी समूह टेस्टिंग जरूरी

प्रियम, नोएडा

विशाल आबादी, लेकिन फिर भी मृत्यु दर बहुत कम। यह आश्चर्य और शोध का विषय है कि घनी जनसंख्या के बावजूद बाकी दुनिया के मुकाबले भारत अभी तक कोरोना के संक्रमण को रोक पाने में सफल रहा। लेकिन अब उसे लॉकडाउन को लेकर अत्यधिक सख्ती बरतनी होगी और बड़ी संख्या में समूह टेस्ट भी कराने होंगे। कारण यह कि ऐसे भी लोग हो सकते हैं जिनमें बीमारी का कोई लक्षण भले न हो लेकिन, वे कोरोना संक्रमित हों। अभी ऐसे संक्रमितों की जांच नहीं हो रही है।

लॉकडाउन बढ़ने की चर्चाओं के बीच बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के मेडिसिन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अभिषेक पाण्डेय सबसे पहले तो इस बात पर जोर देते हैं कि हर व्यक्ति को सरकार के निर्देशों का पालन करना चाहिए। भारत में जांच का दायरा बढ़ाना होगा और अब समूह टेस्टिंग की तरफ जाना होगा। डा. पाण्डेय के मुताबिक दक्षिण कोरिया का उदाहरण विश्व के सामने है जिसने काफी कम समय में कोरोना की व्यापकता को रोक लिया। क्योंकि, उसने बीमारी का पता चलते ही समूह टेस्टिंग शुरू कर दी थी। ज्यादा से ज्यादा लोगों का टेस्ट किया गया और साथ में पाजिटिव मिले लोगों को मोबाइल एप के जरिए निगरानी में रखा गया। दक्षिण कोरिया की जनसंख्या पांच करोड़ से अधिक है और वहां छह सौ टेस्टिंग लैब में लगभग बीस हजार लोगों के टेस्ट प्रतिदिन किए जाते थे।

दरअसल, कोविड-19 के 'स्पर्शोन्मुख वाहक' बीमारी फैलाने के काफी बड़े कारण हैं। बड़े पैमाने पर की गई टेस्टिंग से हम ऐसे लोगों का पता लगा सकते हैं और बीमारी फैलने से रोक सकते हैं। डॉ पाण्डेय कहते हैं कि इस समय सबसे बड़ी जरूरत निजी और सामाजिक स्तर पर सुरक्षा उपाय अपनाते हुए लॉकडाउन के बाद के जीवन की तरफ बढ़ने की है।

क्या है 'स्पर्शोन्मुख वाहक' : 'स्पर्शोन्मुख वाहक' ऐसे लोग होते हैं जिनमें बीमारी के कोई लक्षण नहीं होते पर वो दूसरों को संक्रमित कर सकते हैं। कोविड-19 में भी ' स्पर्शोन्मुख वाहक' को बीमारी के लक्षण जैसे कि बुखार, सूखी खांसी, कमजोरी, जुकाम आदि नहीं होता पर उनके संपर्क में आने पर दूसरों को बीमारी फैल सकती है। जांच से समूह की प्रतिरक्षा (हर्ड इम्यूनिटी) और स्पर्शोन्मुख तथा रोग सूचक वाहक संक्रमितों की संख्या पता चलती है।

प्रो. डॉ. अभिषेक पांडेय की फाइल फोटो। सौजन्य: डॉ. अभिषेक

बाहर निकलें तो

- सैनिटाइजर, मास्क और दस्ताने का हमेशा प्रयोग करें।
- दुकानों पर शारीरिक दूरी का पालन हो।
- दुकानों या संस्थानों में क्षमता की केवल एक तिहाई उपस्थिति होनी चाहिए।
- मेडिकल उपकरणों की आपूर्ति पर तत्काल ध्यान दिया जाना चाहिए।
- पीपीई (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण) कोविड 19 के संपर्क में आने वाले सभी स्वास्थ्यकर्मियों के लिए जरूरी है।

खुद बनाएं सुरक्षा चक्र

डॉ पाण्डेय कहते हैं कि हमें घबराने की जरूरत नहीं क्योंकि ज्यादातर लोगों में यह संक्रमण अपने आप ठीक हो जाता है। हमारी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत होना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम संतुलित आहार लें, नियमित व्यायाम करें और सुरक्षा इंतजामों के साथ ही घर से बाहर निकलें।

सीडीआरआइ के खजाने में छुपी भविष्य की उम्मीदें

रूमा सिन्हा, लखनऊ

एंटी मलेरियल ड्रग पर लंबा शोध करने वाले केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ) के पूर्व वैज्ञानिक का दावा है कि सीडीआरआइ के खजाने में क्लोरोक्विन से मिलते-जुलते एक हजार से अधिक ऐसे ड्रग मॉलीक्यूल (एनालॉग) हैं, जिनको कोविड-19 के उपचार के लिए परखा जाना जरूरी है। क्लोरोक्विन का प्रयोग मलेरिया, कालाजार के साथ ही कैंसर व अर्थराइटिस के उपचार में भी किया जाता है। ऐसे में ये ड्रग मॉलीक्यूल वायरल के साथ ही अन्य जटिल रोगों के उपचार में भविष्य की संभावित औषधि साबित हो सकते हैं ।

तीस साल के लंबे शोध अध्ययनों के बाद ऐसे प्रभावी ड्रग मॉलीक्यूल की पहचान की गई थी, जिन पर किन्हीं कारणवश शोध आगे संभव नहीं हो पाया। इस शोध से जुड़े इंडियन सोसायटी ऑफ केमिस्ट एंड बायोलॉजिस्ट के महासचिव डॉ. पीएमएस चौहान बताते हैं कि ये ड्रग मॉलीक्यूल सीडीआरआइ की रिपोजिटरी में सुरक्षित हैं। डॉ. चौहान कहते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में जिस प्रकार हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन का प्रयोग कोविड-19 से लड़ने में कारगर साबित हो रहा है, तो यह जरूरी होगा कि इससे मिलते जुलते इन ड्रग मॉलीक्यूल पर भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर पुनः शोध आरंभ किया जाए। हमें औषधि विकास को महत्व देना होगा। कारण यह है कि कोई भी युक्ति तब कारगर होती है, जब तक संक्रमण न फैला हो, लेकिन जब बीमारी फैलकर महामारी बन जाए, तो हमें दवाओं की ही जरूरत होती है। कोविड-19 की गंभीरता को देखते हुए इंडियन सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री बायोलॉजी यह सुझाव जल्द सरकार को भेजेगी।

नहीं सुधर रहे लोग...

कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए जारी लॉकडाउन के बीच मुंबई में बुधवार को फ्रीवे पर यातायात भीड़ को नियंत्रित करता पुलिसकर्मी। लॉकडाउन के बावजूद लोग घर से निकलने से बाज नहीं आ रहे हैं। प्रेट्र

झारखंड में होम क्वारंटाइन में रहने वालों को भेजनी होगी सेल्फी

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड सरकार होम क्वारंटाइन में रहने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखेगी। इसके लिए सरकार के निर्देश पर सूचना तकनीक सह ई गवर्नेंस विभाग ने एक एप का निर्माण किया है जिसके माध्यम से ऐसे लोगों पर ऑनलाइन निगरानी रखी जाएगी। क्वारंटाइन का उल्लंघन करने पर उनके विरुद्ध संबंधित कार्रवाई भी की जाएगी।

होम क्वारंटाइन में रहने वाले लोगों को अपनी सेल्फी भेजनी होगी जिससे पता चलेगा कि वे क्वारंटाइन का पालन कर रहे हैं या नहीं। ऐसे सभी लोगों को रोजाना सुबह 6 से रात 10 बजे तक प्रत्येक चार घंटे पर सेल्फी भेजकर अपनी स्थिति बतानी होगी। सूचना तकनीक सह ई-गवर्नेंस विभाग ने इसके लिए कोरोना सेफ एप तैयार किया है। इधर स्वास्थ्य सचिव डॉ. नितिन मदन कुलकर्णी ने सभी उपायुक्तों और सिविल सर्जनों को इसका अनुपालन सुनिश्चित करने को कहा है।

लॉकडाउन में गांव तक पहुंच रहे मगरमच्छ

नईदुनिया, बिलासपुर

लॉकडाउन के कारण शहर और गांवों में शांति छाई हुई है। सड़कों पर न तो लोगों की आवाजाही है और न ही वाहनों का शोर। इससे वन्य प्राणी भ्रमित हो रहे हैं। उन्हें अब अहसास ही नहीं हो रहा है कि उनकी सीमा कहां तक है। किस दायरे के बाद उनको आगे नहीं जाना है। विशेषकर मगरमच्छों पर इसका ज्यादा ही प्रभाव दिख रहा है। यही वजह है कि छत्तीसगढ़ में बिलासपुर के पेंडारी गांव में आबादी में मगरमच्छ पहुंच गया। रतनपुर मुख्य मार्ग पर भी मगरमच्छ के छोटे बच्चे इधर-उधर भटकते देखे गए। अचानक आए इस बदलाव से लोग भी आश्चर्यचकित है।

पेंडारी गांव में इससे पहले कभी मगरमच्छ नहीं आया था। यही कारण है कि यहां के अधिकांश लोगों ने कभी इतने करीब से मगरमच्छ को नहीं देखा था। बुधवार को लोगों की नींद खुली तो महामाया चौक के पास मालती वस्त्रकार के घर के दरवाजे पर मगरमच्छ देखा गया। कुछ ही देर में यह सूचना गांवभर में फैल गई। इसके बाद मगरमच्छ को देखने के लिए ग्रामीणों की भीड़ लग गई।

बिलासपुर के पेंडारी गांव में एक घर के दरवाजे पर पहुंचे मगरमच्छ को देखने जुटे ग्रामीण। नई दुनिया

मुंबई में सभी के लिए मास्क पहनना अनिवार्य : उद्धव ठाकरे

राज्य ब्यूरो, मुंबई

▶ सीएम ने सेना की स्वास्थ्य सेवा में काम कर चुके लोगों से भी मांगी मदद

मुंबई के म्युनिसिपल कारपोरेशन (बीएमसी) ने महानगर के सभी निवासियों के लिए मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया है। संभवतः यह देश में पहला मामला है जब किसी शहर में सभी लोगों को मास्क अनिवार्य किया गया है। उधर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भी राज्य के लोगों से कहा कि घर से निकलने पर मास्क का प्रयोग अवश्य करें। भले ही यह मास्क रुमाल के रूप में ही क्यों न हो। मुख्यमंत्री ने इसके साथ ही सेना की स्वास्थ्य सेवा में काम कर चुके अवकाशप्राप्त लोगों एवं अन्य प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों से कोरोना की जंग में शामिल होने की अपील की है।

बीएमसी के कमिश्नर प्रवीन परदेशी ने बताया कि सभी लोगों के लिए मास्क अनिवार्य कर दिया गया है। घर के बाहर आने पर मास्क पहनना जरूरी है। अध्ययन में पाया गया है कि मास्क पहनने से एक दूसरे में संक्रमण होने की आशंका बहुत कम हो जाती है।

इस बीच मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने फेसबुक लाइव के जरिए लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि चीन के वुहान शहर के सामान्य होने की खबरें आ रही हैं। यह अच्छी खबर है। यानी स्थिति पर काबू पाया जा सकता है। लेकिन हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि वुहान को लंबे समय तक लॉक डाउन का सामना करना पड़ा है।

माना जा रहा है कि उद्धव ने यह कहते हुए राज्य के लोगों को महाराष्ट्र में लॉक डाउन बढ़ाये जाने का संकेत दे दिया है। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि आपको लॉकडाउन से तकलीफ हो रही है। लेकिन कोरोना को हराने के लिए हमारे पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

महाराष्ट्र के गृहमंत्री देशमुख का डोभाल पर सीधा हमला

राज्य ब्यूरो, मुंबई

▶ तब्लीगी जमात मामले में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार पर दागे सवाल

महाराष्ट्र के गृहमंत्री अनिल देशमुख ने केंद्रीय गृहमंत्रालय एवं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल पर सीधा हमला बोलते हुए दिल्ली के तब्लीगी मरकज मामले को लेकर उनपर कई सवाल दाग दिए हैं। उन्होंने सवाल उठाया है कि अजीत डोभाल से मुलाकात के दूसरे दिन से ही मौलाना साद कहां फरार हो गए और अब वे कहां हैं?

अनिल देशमुख शरद पवार की पार्टी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कोटे से महाराष्ट्र विकास आघाड़ी सरकार में गृहमंत्री हैं। बुधवार को उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए प्रेस को संबोधित करते हुए गृहमंत्रालय एवं अजीत डोभाल पर कई सवाल उठाए।

उन्होंने पूछा है कि मुंबई के निकट वसई में 15 व 16 मार्च को 50 हजार तब्लीगी इकट्ठा होनेवाले थे। लेकिन महाराष्ट्र सरकार के गृह विभाग ने उसकी इजाजत नहीं दी। तब केंद्र के गृह मंत्रालय ने निजामुद्दीन, दिल्ली के तबलीगी मरकज में इज्तेमा के आयोजन की इजाजत कैसे दे दी?

उनका दूसरा सवाल है कि दिल्ली में तब्लीगी मरकज के बिल्कुल नजदीक निजामुद्दीन पुलिस थाना है। इसके बावजूद उन्होंने इसे क्यों नहीं रोका। क्या इसके लिए केंद्रीय गृहमंत्रालय जिम्मेदार नहीं है?

उन्होंने सवाल उठाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल को रात को दो बजे निजामुद्दीन मरकज में क्यों भेजा गया? क्या यह काम राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार का है या दिल्ली के पुलिस आयुक्त का?

देशमुख ने यह भी जानना चाहा है कि अजीत डोभाल एवं तब्लीग के मुखिया मौलाना साद रात को दो बजे मरकज में कौन सी गुप्त मंत्रणा कर रहे थे? देशमुख पूछते हैं कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एवं दिल्ली के पुलिस आयुक्त की तरफ से इस संबंध में अभी तक कोई बयान क्यों नहीं दिया गया है? इसके बाद वह किसके तब्लीगियों के साथ क्या संबंध हैं?

देशमुख ने आगे कहा कि मरकज के कार्यक्रम में इजाजत तुम्हारी। कार्यक्रम होने से रोका तुमने नहीं। तब्लीगी समाज से संबंध तुम्हारे। तो इन सारे सवालों के जवाब कौन देगा?

इस खास निमोनिया का तोड़ तलाश रहे हैं वैज्ञानिक

कोरोना वायरस से जंग लड़ रहे वैज्ञानिकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पहले तो यह कैसे एकदम सटीक रूप से फैलता है, किन लोगों पर इसका भयानक असर पड़ता है, कैसे कोरोना मानव शरीर पर अपना भयानक असर छोड़ता है, क्यों एक चौथाई संक्रमितों में कोई लक्षण नहीं दिखाई देता है। इसी तरह की एक समस्या है निमोनिया की। यों तो निमोनिया दुनियाभर में आम है और इसकी दवाएं भी उपलब्ध हैं लेकिन, कोरोना जिस तरह का निमोनिया पैदा करता है वो बहुत घातक होता है और इसके होने पर मरीज की मौत की आशंका काफी अधिक बढ़ जाती है। रॉयल ऑस्ट्रेलियन कॉलेज ऑफ फिजिशियन के अध्यक्ष और दुनियाभर में मशहूर प्रो. जॉन विल्सन इस संबंध में शोध कर रहे हैं। उन्होंने काफी मरीजों के फेफड़ों के सीटी स्कैन कराए और सभी में एक तरह का खास पैटर्न उभरकर सामने आता है। कोरोना वायरस इंसान के फेफड़ों के बाहर से एक लेयर बना लेता है, जो एक प्रकार की जैली जैसा दिखता है। जैसे-जैसे संक्रमण बढ़ता है, वैसे-वैसे यह फेफड़ों को फूलने की जगह को कम करता चला जाता है। इसका असर यह होता है कि शरीर में ऑक्सीजन की सप्लाई कम होती चली जाती है और अंत बहुत कष्टकारी होता है।

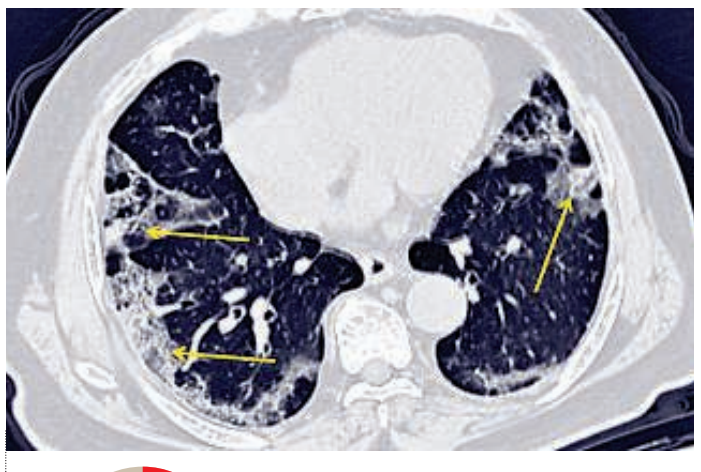

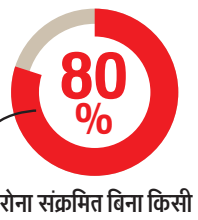

कोरोना संक्रमित विना किसी खास उपचार के विभिन्न बुखारों के इलाज में इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं से ही सही हो जाते हैं

25
सैंपल लेने के बाद भारत में एक सैंपल कोरोना पॉजिटिव मिलता है

30
संक्रमितों में से एक ही मौत अब तक भारत में रिकॉर्ड की गई है

3%
ही सैंपल पूरी दुनिया में औसतन कोरोना पॉजिटिव मिले हैं

स्रोत : गार्जियन

छह में से एक मरीज की हालत हो जाती है खराब

प्रो. विल्सन बताते हैं कि कोरोना संक्रमित छह मरीजों में से केवल एक ही गंभीर रूप से बीमार पड़ता है। रेस्परेटरी ट्री (श्वसन तंत्र) में सूजन आ जाती है। इससे शरीर भयंकर परेशानी महसूस करता है। यहां तक कोरोना संक्रमण की तीसरी स्टेज चल रही होती है। प्रो. विल्सन बताते हैं कि शरीर की ही गैसों के माध्यम से कोरोना छिटककर फेफड़ों के निचले हिस्से में पहुंच जाता है और वहां सूजन पैदा कर देता है। फ्लूड के माध्यम से यह तेजी से फैलता है और फेफड़े के ऊपरी हिस्से में भी पहुंच जाता है।

होती है भयंकर परेशान

जैसे-जैसे कोरोना वायरस फेफड़ों को अपनी जद में लेना शुरू करता है वैसे-वैसे फेफड़ों की ऑक्सीजन हासिल करने और उसे छोड़ने की क्षमता कम होना शुरू हो जाती है। इसके साथ ही शरीर से कार्बन डाई ऑक्साइड जमा करके उसे बाहर छोड़ने की प्रक्रिया भी प्रभावित हो जाती है, जिससे कई तरह की दिक्कतें शरीर में पैदा होने लगती हैं। पूरा श्वसन तंत्र बैठने लगता है और पूरे शरीर की कोशिकाएं भारी दबाव में आ जाती हैं।

कोरोना का निमोनिया अलग कैसे

ऑस्ट्रेलियन लंग्स फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. क्रिश्चियन विल्सन बताते हैं कि हम कई तरह के निमोनिया को जानते-पहचानते हैं। ज्यादातर बैक्टीरिया के कारण होते हैं। उनके सटीक इलाज भी हमारे पास हैं। लगभग सभी में एंटीबायोटिक का बहुत फायदा मिलता है। कोरोना वायरस है, ऐसे में इस पर एंटीबायोटिक दवाओं का असर नहीं पड़ रहा है। डॉ. जेनिंग्स ने बताया कि आखिरकार क्यों कोरोना का निमोनिया बहुत खतरनाक है। उन्होंने बताया कि सामान्य तरह के निमोनिया में फेफड़े का एक हिस्सा प्रभावित होता है, जबकि कोरोना पूरे फेफड़े को चपेट में ले लेता है।

सटीक इलाज नहीं है उपलब्ध

डॉ. जेनिंग्स बताते हैं कि कोरोना जिस तरह का निमोनिया पैदा करता है उसका सटीक इलाज इस वक्त हमारे पास नहीं है। हम कई तरह की वायरल और एंटी-वायरल दवाओं के कॉम्बिनेशन को आजमा रहे हैं। इसके साथ ही शरीर में ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा का स्तर बनाए रखने की कोशिश करते हैं। अगर शरीर के अन्य अंग ऑक्सीजन की प्रचुर खुराक के कारण सामान्य कामकाज करने को प्रेरित होते हैं तो हमारे पास रिकवरी का अच्छा मौका होता है।

संक्रमितों को बांट सकते हैं 4 वर्गों में

- पहले वर्ग में वो संक्रमित होते हैं, जिनमें कोई लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। इन्हें सब क्लीनिकल मरीज कहा जाता है। विभिन्न शोधों और अमेरिका की संचारी रोग संस्था (सीडीसी) का मत है कि लगभग 25 फीसद मरीजों को ऐसे वर्ग में रखा जा सकता है।
- दूसरे वर्ग में वो संक्रमित आते हैं जिन्हें खांसी, सिरदर्द और बुखार की शिकायत होती है। प्रो. विल्सन बताते हैं कि ऐसे मरीजों को सांस लेने में भी हल्की दिक्कत महसूस होती है। इनका इलाज आइसोलेशन में रखकर या फिर अस्पताल के सामान्य वार्ड में रखकर किया जा सकता है। इनकी मृत्यु दर लगभग शून्य ही है।
- तीसरे वर्ग में मरीजों को सांस लेने में भयानक दिक्कत होती है। ये बात तक नहीं कर पाते हैं। कई मानसिक दिक्कतें भी इन्हें पेश आती हैं, क्योंकि शरीर में ऑक्सीजन की सप्लाई कम हो जाती है। इन्हें आइसीयू में शिफ्ट करने की जरूरत होती है। इन मरीजों की मृत्यु की आशंका रहती है। इटली में ऐसे मरीजों की काफी मृत्यु हुई है।
- चौथे वर्ग में ऐसे मरीजों को रखा जाता है जिन्हें निमोनिया हो जाता है। इनके बचने की संभावना कम होती है। प्रोफेसर विल्सन बताते हैं कि 6% से भी कम मरीजों में यह स्थिति देखी गई है। बुजुर्ग मरीजों में यह ज्यादा देखी गई है। वैसे भी साधारण निमोनिया भी बुजुर्गों में ज्यादा होता है।

कोरोना को हराने के करीब पहुंचा लद्दाख

जम्मू, राज्य ब्यूरो : केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख कोरोना के खिलाफ लड़ाई में नजीर बनकर उभरा है। यहां पहला मरीज मार्च के पहले पखवाड़े में और आखिरी दो अप्रैल को सामने आया था। यहां 14 लोग पॉजिटिव मिले थे, जिसमें 11 स्वस्थ हो चुके हैं। अन्य का उपचार चल रहा है। सुखद यह है कि एक भी व्यक्ति की मौत नहीं हुई।

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के कमिश्नर सेक्रेटरी रिग्जिन सैंफल ने बुधवार को लेह में उपचाराधीन लद्दाख के 11वें मरीज के भी ठीक होने की पुष्टि कर दी। उन्होंने ट्विटर पर लिखा है कि यह अच्छी खबर है कि लद्दाख में संक्रमित हुए 14 मरीजों में से अब तक 78 प्रतिशत मरीज ठीक हो गए हैं।

संक्रमित 14 लोगों में से 11 ठीक हुए, अन्य का चल रहा उपचार

दरअसल, यहां लोगों ने जागरूकता दिखाई और प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई की। पहला केस सामने आते ही न सिर्फ प्रदेश की सीमाएं सील कर दीं, अपितु उन गांवों को भी पूरी तरह से क्वारंटाइन कर दिया जो पॉजिटिव केस मिले। ईरान में जियारत के लिए गए दो बुजुर्ग जांच के बाद इस बीमारी से पॉजिटिव पाए गए थे। तुरंत उनके संपर्क में आए सभी लोगों को क्वारंटाइन कर दिया गया था।

स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में : लद्दाख में अब स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है। लद्दाख से छह अप्रैल तक 496 सैंपल दिल्ली के नेशनल सेंटर फार डिजिज कंट्रोल में भेजे जा चुके हैं। लेह के सोनम नारबू मेमोरियल अस्पताल से छुट्टी होने के बाद 11 मरीजों को एहतियातन अभी क्वारंटाइन में ही रखा गया है।

चुशोत व सांखु गांव में अभी भी सख्ती

लेह के चुशोत व कारगिल के सांखु गांव में अभी भी सख्ती बरती जा रही है। इन दोनों गांवों में कोरोना के मरीज मिले थे। मामला सामने आने के बाद तुरंत ही दोनों गांवों को सील कर दिया गया था। लद्दाख के कोरोना मुक्त घोषित होने के बाद सील किए गए गांवों में भी लोगों की क्वारंटाइन समयावधि समाप्त हो जाएगी।

राजस्थान का भीलवाड़ा ऐसे बना कोरोना विजेता

सफलता ▶ 27 पॉजिटिव केस मिलने के बाद शासन-प्रशासन ने शानदार पहल कर बढ़ने नहीं दिया आंकड़ा

अब मात्र तीन पॉजिटिव बचे, अगले चार-पांच दिन में कोरोना मुक्त जिला बन जाएगा

नरेंद्र शर्मा, जयपुर

राजस्थान का भीलवाड़ा जिला कोरोना संक्रमण से निपटने के मामले में देश के सामने एक नजीर बन गया है । मार्च के तीसरे और चौथे सप्ताह में भीलवाड़ा में जब एक साथ 24 कोरोना पॉजिटिव केस सामने आए तो ऐसा लगा था कि जैसे देश का कोरोना जोन बन गया हो, लेकिन जिस तरह से राज्य सरकार खासकर जिला प्रशासन ने एक्शन लिया उसके नतीजे मिसाल बन गए।

अब जिले में मात्र तीन लोग कोरोना पॉजिटिव बचे हैं, जिनके स्वास्थ्य में भी लगातार सुधार हो रहा है । अगर हालात में सुधार की यही रफ्तार रही तो अगले चार-पांच दिन में भीलवाड़ा देश का पहला कोरोना मुक्त जिला बन सकता है। पिछले पांच दिन से यहां एक भी कोरोना पॉजिटिव अथवा खांसी-जुकाम का मरीज नहीं मिला है। इससे सभी राहत की सांस ले रहे हैं।

स्थानीय प्रशासन का कहना है कि जब यहां कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या बढ़ी तो घर-घर स्क्रीनिंग कराई गई। जिले की सीमा पूरी तरह सील कर कर्फ्यू लगा दिया गया। राजनेता हो या सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि या प्रशासनिक अधिकारी सभी को कर्फ्यू पास जारी करने से इन्कार कर कम्युनिटी ट्रांसमिशन रोका गया। लाखों लोगों की जांच की गई। एक समय ऐसा था, जब यहां 27 लोग पॉजिटिव थे, मगर इसके बाद यह आंकड़ा आगे नहीं बढ़ा। इससे भीलवाड़ा जिला कोरोना संक्रमण रोकने के मामले में देश का रोल मॉडल बन गया है।

कर्फ्यू के दौरान सड़क पर निगरानी करता पुलिस का जवान।

भीलवाड़ा के सरकारी अस्पताल के 10 डॉक्टरों व अन्य चिकित्साकर्मियों ने अस्पताल को ही घर बना लिया है। कोरोना संक्रमितों के इलाज में जुटे चिकित्साकर्मी 13 दिन से अपने घर नही गए हैं।

सभी फोटो सौजन्य : जिला प्रशासन

भीलवाड़ा में जिस तरह से कोरोना संक्रमण को काबू किया गया, उसका एक प्रेजेंटेशन तैयार किया गया है। इसमें कोरोना से निपटने को लेकर अपनाई गई रणनीति है। यह प्रेजेंटेशन सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों और 225 कलेक्टरों को भेजा जाएगा। केंद्रीय कैबिनेट सचिव राजीव गाबा ने भीलवाड़ा मॉडल की तारीफ की है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी इसका प्रेजेंटेशन मंगवाया है।

-अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सीएम से सीधा संपर्क

- कलेक्टर राजेंद्र भट्ट का मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से सीधा संपर्क रहा । बीच में किसी अधिकारी या मंत्री के नहीं रहने के कारण फैसले तत्काल लिए जा सके।
- स्थानीय प्राइवेट अस्पताल के एक डॉक्टर और पांच अन्य लोगों के संक्रमित मिलते ही जिला प्रशासन ने तत्काल शहर में कर्फ्यू लगा दिया। जिले की सभी सीमा सील कर दी गई ।
- राशन सामग्री की आपूर्ति जिला प्रशासन द्वारा की गई । पहले 14 दिन का कर्फ्यू और फिर तीन अप्रैल से 10 दिन का महाकर्फ्यू लगा दिया गया। इसमें मेडिकल टीम के अलावा किसी को शहर में प्रवेश नहीं दिया गया। पूर्व में जारी पास रद कर दिए गए।

ऐसे मिली कामयाबी

लाखों की तादात में की गईं जांचें

नो मूवमेंट जोन बनाया गया। सबसे पहले कोरोना संक्रमित जिले के छह इलाके चिह्नित किए गए। घर-घर सर्वे शुरू किया गया। तीन चरणों में 3,072 टीमों ने 6,56,600 घरों के 33,11,315 लोगों की स्क्रीनिंग की। इनमें 4,258 लोग सामान्य खांसी, जुकाम और बुखार के पीड़ित मिले। इनके सैंपल लिए गए जो नेगेटिव आए। करीब 1500 लोगों को होम आइसोलेट किया गया।

होटल, गेस्ट हाउस व हॉस्टल किए अधिग्रहित : जिले के सभी होटल, गेस्ट हाउस,अस्पताल और हॉस्टल को प्रशासन ने अधिग्रहित कर लिया। करीब 7620 लोगों को इनमें क्वारंटाइन किया गया । इनके इलाज के लिए मेडिकल टीम तैनात की गई। जिन लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ उन्हें धीरे-धीरे घर भेजा जाता रहा, लेकिन उन्हें घर से बाहर नहीं निकलने की हिदायत दी गई ।

प्रशासन ने सप्लाई की खाद्य सामग्री : शहरी और ग्रामीण इलाकों में लगातार हाइपोक्लोराइड का छिड़काव कराया गया, जिससे संक्रमण नहीं फैले । घरों में छिड़काव कराने के साथ ही सब्जी, खाद्य सामग्री, दूध प्रशासन ने ही सप्लाई कराया ।

कलेक्टर ने बताया-कैसे पाया काबू

जिला कलेक्टर राजेंद्र भट्ट।

कलेक्टर राजेंद्र भट्ट ने दैनिक जागरण को बताया कि 19 मार्च को एक प्राइवेट अस्पताल के चिकित्सक के कोरोना पॉजिटिव मिलते ही सबसे पहले उसके अस्पताल की ही स्क्रीनिंग कराई गई । वहां कुल 18 लोग पॉजिटिव मिले तो 20 मार्च को शहर में कर्फ्यू लगा दिया । जिले की सीमा सील कर दी गई। इसके बाद अगले पांच दिन में पॉजिटिव केस की संख्या 27 पर पहुंच गई । सरकार के निर्देश पर थ्री लेयर स्क्रीनिंग कराई गई । कम्युनिटी ट्रांसमिशन रोकने के लिए सख्ती की गई और उसकी बदौलत शहर में पॉजिटिव मरीजों का आंकड़ा नहीं बढ़ सका । 27 में से 22 पॉजिटिव मरीजों को इलाज के बाद घर भेज दिया गया । दो बुजुर्गों का निधन हो गया। उन्हें लकवा, हॉर्ट और मधुमेह की बीमारी थी। अब मात्र तीन पॉजिटिव केस बचे हैं। उनकी स्थिति में लगातार सुधार हो रहा है । कर्फ्यू के बाद महाकर्फ्यू लगाने से भी लाभ मिला ।

अखबार से कोराना वायरस संक्रमण नहीं फैलता

संतोष शर्मा, अलीगढ़

कोरोना वायरस से जुड़ी भ्रामक खबरों पर कतई ध्यान न दें। सोशल मीडिया पर ऐसी खबरों को प्रचारित करने वालों को देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। उन्हें समझना होगा कि ऐसी खबरों से दूसरे लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सोशल मीडिया से जुड़े लोग भी ऐसी खबरों पर कतई विश्वास न करें जो सत्यता से परे हों। विश्वसनीय स्रोतों से मिलने वाली खबरों पर ही भरोसा करें। ऐसे में अखबार सबसे बेहतर माध्यम है। अखबार से कोरोना वायरस के संक्रमण का भी खतरा नहीं है। ऐसा एक भी केस सामने नहीं आया है जिसमें अखबार के जरिए संक्रमण फैलने की बात आई हो।

यह मानना है अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय (एएमयू) के जवार लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन डिपार्टमेंट के प्रो. मोहम्मद शोएब जहीर का। उनका कहना है कि कोरोना जब तक देश से खत्म नहीं हो जाता, सतर्कता बरतनी होगी। अखबार पढ़ने के बाद साबुन से हाथ साफ कर लें। सैनिटाइजर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अखबार को घर तक पहुंचाने वाले लोगों को भी सेहत के प्रति सचेत रहना होगा। किसी भी तरह की कोई परेशानी है तो उसे छुपाएं नहीं। डॉक्टर की सलाह जरूर लें। लॉकडाउन का जिस तरह लोग पालन कर रहे हैं वह काबिले तारीफ है। लड़ाई खत्म नहीं हुई है। हमें हर खतरे के मुकाबले के लिए सचेत रहना होगा।

प्रो. मोहम्मद शोएब जहीर। जागरण

मंडियों में उमड़ती भीड़ का समाधान दे रहा संघ का 'वेजिटेबल बास्केट'

ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई

- महाराष्ट्र के नासिक में ग्राहक और किसानों के बीच सेतु बने स्वयंसेवक
- वाट्सएप ग्रुप बनाकर लोगों तक पहुंचाई जा रहीं सब्जियां

सब्जी मंडियों को छोड़कर लगभग पूरे देश में लॉकडाउन का ठीक से पालन हो रहा है। सभी शहरों की सब्जी मंडियों की स्थिति कमोवेश एक जैसी है, लेकिन नासिक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) किसानों और ग्राहकों के बीच सेतु बनकर इस समस्या का समाधान ढूंढने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि कल लॉकडाउन उठ भी जाए तो लोगों के बीच शारीरिक दूरी कुछ महीनों तक बरकरार रहे।

महाराष्ट्र में लॉकडाउन देश के अन्य हिस्सों से पहले ही शुरू हो गया था। इसके साथ ही सब्जी-भाजी एवं रोजमर्रा के सामान की आपूर्ति की समस्या भी शुरू होने लगी थी। नासिक में संघ के स्वयंसेवकों ने इसका समाधान निकाला सोशल मीडिया के सार्थक उपयोग से। उन्होंने भोसला मिलिट्री स्कूल के आसपास स्थित सातपुर, अशोक नगर, गंगापुर रोड, सावरकरनगर, फिरीन मेडोज आदि इलाकों के निवासियों के मोबाइल नंबर इकट्ठा कर एक वाट्सएप ग्रुप बनाया।

संघ के गट प्रमुख श्रीपाद दाबक बताते हैं कि इस एकतरफा वाट्सएप ग्रुप पर प्रतिदिन शाम करीब चार बजे तक अगले दिन मिल सकनेवाली सब्जियों की सूची उनके भाव के साथ प्रकाशित कर दी जाती है। ग्राहक अपनी जरूरत की सूची दिए गए एक मोबाइल नंबर पर वाट्सएप कर देता है। अगले दिन दोपहर 12 बजे से शाम पांच बजे के बीच उनकी सोसायटी के बाहर छोटे टेंपो पर उनकी जरूरत की सब्जियां पहुंच जाती हैं। शारीरिक दूरी का पालन करते हुए ये सब्जियां उन्हें सौंप दी जाती हैं। बुजुर्गों को उनके आग्रह पर यह वेजिटेबल बास्केट उनके घरों तक भी पहुंचाया जाता है।

श्रीपाद दाबक बताते हैं कि यह सेवा शुरू करने के लिए नासिक के गिरनारे गांव के करीब 35 किसानों से संपर्क किया गया। गांवों के 10 एवं शहरों के 20 स्वयंसेवक इस कार्य में लगे। शुरू में यह काम बिना किसी सरकारी अनुमति के शुरू कर दिया गया, लेकिन एक बार टेंपो रोके जाने पर अधिकारियों को इस मॉडल की पूरी जानकारी देकर अनुमति ले ली गई। अब कोई दिक्कत नहीं होती। ग्राहकों को ताजी सब्जियां घर बैठे मिल रही हैं और किसानों की फसल बर्बाद होने से बच रही है।

संघ के पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत प्रचार प्रमुख दिलीप क्षीरसागर कहते हैं कि किसानों एवं ग्राहकों के बीच सेतु के रूप में कार्य करने का यह मॉडल आज भले ही आपातकाल की जरूरत के तौर पर सामने आया हो, लेकिन इसे सामान्य दिनों में भी पूरे देश में युवा आगे आकर सफलतापूर्वक संचालित कर सकते हैं। इससे किसान एवं ग्राहक दोनों फायदे में रहेंगे। साथ ही बड़े पैमाने पर रोजगार भी सृजित होगा।

कोरोना वैक्सीन विकसित करेगी आइआइएल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड (आइआइएल) कंपनी ने ऑस्ट्रेलिया के ग्रिफिथ यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर कोविड-19 के लिए एक वैक्सीन विकसित करने का फैसला किया है। इसके लिए दोनों के बीच एक समझौता हुआ है। भारतीय कंपनी आइआइएल राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की सहायक कंपनी है। इन कंपनियों के चेयरमैन दिलीप रथ ने बताया कि इस वैक्सीन विकसित करने वाली इस परियोजना में आइआइएल और ग्रिफिथ यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से काम करेंगे। परियोजना के तहत कोडन डे-आप्टिमाइजेशन तकनीक की मदद से एक लाइव अटाइनोवाटेड सार्स-कोव-2 या कोविड-19 वैक्सीन विकसित की जाएगी। यह वैक्सीन लंबे समय तक सुरक्षा प्रदान कर सकती है।

रथ ने बताया कि अनुसंधान पूरा हो जाने के बाद वैक्सीन स्ट्रेन को आइआइएल में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि आइआइएल कंपनी पशु चिकित्सा के क्षेत्र में एक बड़ी कंपनी है, जो मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में वैक्सीन विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसमें तैयार होने वाली वैक्सीन उच्च गुणवत्ता के साथ किफायती भी हो सकती है। कंपनी पशुओं में होने वाले 'खुरपका-मुंहपका' जैसे वायरल रोग के लिए वैक्सीन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी है। ऑस्ट्रेलिया की ग्रिफिथ यूनिवर्सिटी के साथ यह कंपनी पहले से ही जीका वैक्सीन के क्षेत्र में अनुसंधान व विकास कर रही है। फिलहाल यह वैक्सीन क्लीनिकल विष विज्ञान परीक्षण के चरण में है। उम्मीद की जा रही है कि कंपनी को कोरोना वैक्सीन विकसित करने में जल्द ही सफलता मिल जाएगी।

राय

सार्स कोरोना वायरस पर हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन पाया गया था प्रभावी, कोरोना के इलाज में भी कारगर मानी जा रही है मलेरिया की 80 साल पुरानी दवा

हर किसी के लिए संजीवनी नहीं है क्लोरोक्विन

नीलू रंजन, नई दिल्ली

कोरोना काल में मलेरिया की जिस दवा हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन को संजीवनी बूटी माना जा रहा है और पूरे विश्व में उसको लेकर रुचि बनी हुई है, उसका उपयोग दरअसल बहुत सावधानी से किए जाने की जरूरत है। वैज्ञानिक इस दवा को आम जनता के लिए खुले इस्तेमाल करने की छूट देने को लेकर सशंकित हैं। इसीलिए पिछले कुछ दिनों से तेजी से बढ़ रही कोरोना संक्रमितों की संख्या के बावजूद यह दवा केवल मरीजों के इलाज में जुटे स्वास्थ्यकर्मियों को ही दी जा रही है। दूसरों के लिए यह वर्जित है क्योंकि स्वास्थ्यकर्मी की स्वास्थ्य की जांच लगातार हो रही है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर के अनुसार इस दवा के कुछ साइड-इफेक्ट भी हैं। यदि कोई व्यक्ति पहले से किसी दूसरी बीमारी से ग्रसित है, तो यह खतरनाक भी साबित हो सकती है। इसी तरह इसकी अधिक मात्रा भी सेहत को स्थायी नुकसान पहुंचा सकती है। इसीलिए इस दवा की खुली बिक्री प्रतिबंधित है। उन्होंने कहा कि आइसीएमआर कोरोना वायरस के खिलाफ हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन के प्रभावी होने का अध्ययन कर रहा है और नतीजे सही आने पर आम जनता को भी इसके इस्तेमाल की अनुमति दे दी जाएगी।

सार्स कोरोना वायरस पर हो चुका है परीक्षण : नए कोरोना वायरस फैलने के बाद इसके इलाज के लिए हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन की तरफ दुनिया भर के वैज्ञानिकों का ध्यान यूं ही नहीं नहीं गया। दरअसल 2002 में सार्स कोरोना वायरस के फैलने के बाद प्रयोगशाला में परीक्षण के दौरान हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन को इस वायरस को रोकने में सफल पाया गया था। शोध में सामने आया था कि हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन मानव शरीर की कोशिकाओं में कुछ ऐसा रसायनिक परिवर्तन कर देता है कि सार्स कोरोना का वायरस मानव कोशिका से जुड़कर अपनी संख्या बढ़ाने में असमर्थ हो जाता है। जबकि वायरस के पनपने व अपनी संख्या बढ़ाने के लिए इसका मानव कोशिका से जुड़ना जरूरी है। इस कारण वायरस का प्रभाव सीमित हो जाता है और धीरे-धीरे स्वतः समाप्त हो जाता है। प्रयोगशाला में यह प्रयोग तो सही पाया गया, लेकिन उसके बाद मानव शरीर के भीतर इसका परीक्षण नहीं हो सका। कोरोना वायरस भी सार्स की तरह कोरोना फैमली का एक वायरस है।

प्रतीकात्मक

क्लोरोक्वीन और हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन एक समान

हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन और क्लोरोक्विन में कोई खास अंतर नहीं है और दोनों ही समान रूप से प्रभावी हैं। दरअसल क्लोरोक्विन का ही परिमार्जित रूप हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन है। जिसमें क्लोरोक्विन के कुछ दुष्प्रभावों को हटा दिया गया है।

क्लोरोक्विन के इस्तेमाल पर आइसीएमआर की गाइडलाइंस

नए कोरोना वायरस के मरीजों के इलाज में लगे स्वास्थ्यकर्मियों के लिए आइसीएमआर की ओर से पहले दिन 400 एमजी की हाइड्रोक्सी-क्लोरोक्विन की दो गोली लेने और बाद में सात हफ्ते तक हर हफ्ते एक-एक गोली लेने की सलाह दी गई है। लेकिन कोरोना के मरीजों के करीब रहने वालों के लिए तीन हफ्ते तक इसका इस्तेमाल करने को कहा है। स्वास्थ्यकर्मियों के लिए लंबे समय तक इस्तेमाल करने की इजाजत इसीलिए दी गई है वे लगातार किसी न किसी कोरोना मरीज के संपर्क में रहते हैं और उससे ग्रसित होने का खतरा बना रहता है। जबकि मरीज के करीबी उसके ठीक होने के बाद इस खतरे से मुक्त हो जाते हैं।

डोनर नहीं आ पा रहे तो डॉक्टर खुद करने लगे रक्तदान

मिसाल ▶ लखनऊ का एसजीपीजीआइ दे रहा देशभर के चिकित्सा संस्थानों को संदेश

भर्ती कैंसर और थैलेसीमिया मरीजों के लिए रक्त की पड़ रही जरूरत

कुमार संजय, लखनऊ

शोध और चिकित्सा क्षेत्र में विश्व स्तरीय उपलब्धियों के लिए प्रख्यात लखनऊ का संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआइ) अक्सर व्यवहार और कार्यशैली संबंधी उदाहरण भी स्थापित करता है। लॉकडाउन के कारण संस्थान के ब्लड बैंक में रक्त के अभाव को देखते हुए यहां के डॉक्टर खुद रक्तदान कर रहे हैं। यहां भर्ती कैंसर और थैलेसीमिया मरीजों के लिए रक्त की जरूरत है जिसे पूरा करने के लिए संस्थान के पांच डॉक्टरों ने रक्तदान किया। यहां अन्य राज्यों से भी इस रोग से पीड़ित मरीज आते हैं।

संस्थान के कई अन्य डॉक्टरों ने आवश्यकता पड़ने पर रक्तदान करने की इच्छा जताई है। 24 मार्च से लॉकडाउन के कारण रक्तदाता एसपीजीआइ नहीं पहुंच पा रहे। संस्थान में ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के प्रो. अतुल सोनकर और प्रो. राहुल ने बताया कि रक्त की कमी को पूरा करने के लिए कई स्तरों पर कोशिश की जा रही है। कुछ स्वैच्छिक रक्त दाताओं को पास बनवा कर भेजे गए जिनमें कुछ लोगों ने आकर रक्तदान किया। इससे 400 यूनिट रक्त का स्टाक हो गया है। इस समय रोजाना 45 से 50 यूनिट खून की जरूरत है।

डॉ. कुलदीप।

प्रो. कुंतल कांति दास।

प्रो. कमलेश सिंह वैसवार।

इन चिकित्सकों ने किया रक्तदान

बुधवार को न्यूओटोलाजिस्ट प्रो. अमित केसरी, न्यूरो सर्जन प्रो. कमलेश सिंह बैसवार, न्यूरोसर्जन प्रो. कुंतल कांति दास, पैथोलाजी के प्रो. राघवेंद्र और ट्रामा सेंटर के मैक्सीफेशियल सर्जन प्रो. कुलदीप ने रक्त दान किया।

प्रो. अमित केशरी।

प्रो. राघवेंद्र।

सभी फोटो जागरण

कैंपस के आसपास रहने वालों से की अपील

प्रो. अमित का कहना है कि हम लोगों ने संदेश देने की कोशिश की है कि जो लोग कैंपस में या आसपास रहते है, वे आगे आकर रक्त दान करें जिससे भर्ती मरीजों को खून की कमी न पड़े। यहां डायलसिस पर चल रहे किडनी मरीजों के आलावा अन्य विभागों में भर्ती मरीजों को भी खून की जरूरत पड़ती है। यह ऐसा प्राकृतिक तत्व है जो केवल मनुष्य से ही मिल सकता है। प्रो. कमलेश और प्रो. कुतंल कांति कहते हैं कि दूर से लोग नहीं आ सकते, लेकिन आसपास के लोग पीजीआइ आकर स्वैछिक रक्त दान कर मानव जीवन बचाने में मदद करें।

42 दिन में खराब हो जाता है रक्त

प्रो. राहुल ने बताया कि रक्त का इस्तेमाल न होने पर वह 42 दिन में खराब हो जाता है। मांग इतनी अधिक है कि रक्त खराब नहीं हुआ, लेकिन मांग न होने की दशा में भी स्टाक रखना होता है क्योंकि कोरोना के मरीजों में भी रक्त की जरूरत पड़ सकती है।

मेडिकल स्टाफ के लिए सोनू सूद ने खोले अपने होटल के दरवाजे

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई : हाल में अभिनेता शाह रुख खान ने अपने चार मंजिला ऑफिस को क्वारंटाइन सेंटर बनाने के लिए बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) को दिया था। अब अभिनेता सोनू सूद स्वाथ्यकर्मियों की मदद के लिए सामने आए हैं। उन्होंने मुंबई के जुहू में स्थित अपने होटल में मेडिकल स्टाफ के लिए मुफ्त में ठहरने की व्यवस्था की है।

सोनू का कहना है कि इस समय देश के चिकित्सा कर्मचारी आगे आकर इस वायरस के खिलाफ लड़ रहे हैं। ऐसे में उनके सहयोग के लिए आगे आना जरूरी है। उनका कहना है कि लाखों लोगों की जिंदगी बचाने के लिए दिन-रात काम कर रहे देश के डॉक्टर, नर्स और पैरामेडिकल स्टाफ के लिए कुछ भी कर पाना उनके लिए सम्मान की बात है। वह देश के इन वास्तविक हीरो के लिए अपने होटल के दरवाजे खोलकर बहुत खुश हैं। हम कोरोना के खिलाफ इस जंग को एकजुटता के साथ लड़ते हुए जीत सकते हैं। वह पहले भी लोगों से घर पर रहने व शारीरिक दूरी बनाए रखने की अपील कर चुके हैं।

कश्मीर में कमजोर वर्ग के लिए बीएसएफ ने बढ़ाए हाथ

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- शिविरों के आसपास जरूरतमंदों को खोजकर मदद की जा रही
- जरूरी स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध करा रहा सीमा सुरक्षा बल

कोरोना वायरस की महामारी और लॉकडाउन के बीच बीएसएफ (सीमा सुरक्षा बल) के जवान कश्मीर में गरीब तबके के लिए अन्नदाता बनकर आए हैं और श्रमिकों को भुखमरी से बचाने के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं। बीएसएफ के शिविर के आसपास के इलाकों में श्रमिकों व अन्य कमजोर वर्ग के लोगों को खाने-पीने समेत स्वास्थ्य सुविधाएं दी जा रही हैं।

बीएसएफ के आइजी राजेश मिश्रा ने बताया कि वादी में जहां भी बीएसएफ तैनात है, वहां सभी संबंधित यूनिट कमांडेंट को निर्देश दिया गया है कि वह लोगों की दिक्कतों को यथासंभव न्यूनतम बनाने के प्रयास करें। लॉकडाउन के कारण बहुत से लोगों के आय के स्रोत बंद हो चुके हैं। दिहाड़ीदार और समाज के कमजोर वर्गों के लिए स्थिति काफी मुश्किल भरी है। हम ऐसे लोगों को चिन्हित कर उन्हें आवश्यक सामान उपलब्ध करा रहे हैं।

पांपोर में सौ श्रमिकों को दिया राशन : आइजी राजेश मिश्रा ने बताया कि बुधवार सुबह हमने श्रीनगर-जम्मू हाईवे पर पांपोर में 100 श्रमिक परिवारों में राशन व अन्य आवश्यक सामान वितरित किया है। हम इन लोगों की हालात सामान्य होने तक पूरी मदद करेंगे। आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध कराएंगे।

जवानों के लिए भी कार्ययोजना : बीएसएफ ने भी अपने जवानों व अधिकारियों को कोविड-19 के संक्रमण से बचाए रखने के लिए एक विशेष कार्ययोजना तैयार की है। इस कार्ययोजना का पूरी तरह पालन किया जा रहा है।

सीमा सुरक्षाबल के जवान भी शारीरिक दूरी, पर्सनल हाईजीन का पूरा ध्यान रखे हैं। सभी जवानों और अधिकारियों के स्वास्थ्य की नियमित जांच हो रही है। पूरी सतर्कता बरती जा रही है।

जन-जागरण संग राहत पहुंचाने में भी जुटी 'टीम जागरण'

जागरण विशेष

संजय कुमार सिंह, भागलपुर

सैकड़ों तृप्त आंखें मानों अपनी दुआओं से फिर किसी और दहलीज पर जाने का नया हौसला दे रही हों, जहां कोरोना की दहशत के साये में एक मुस्कान बिखेरनी है। दैनिक जागरण की टीम किसी और जरूरतमंद की तलाश में निकल पड़ती है...। उप्र, बिहार, हरियाणा सहित देश के विभिन्न भागों में जनसहयोग की स्वस्फूर्त श्रृंखला तैयार हो चली है।

संकट की इस घड़ी में पत्रकारीय दायित्व का निर्वहन करते हुए जागरूकता की मुहिम। लोगों की जरूरतों को भी पूरा कर पाने की कोशिश में एक अपील भर पर जुड़ता समाज। यह उनके भरोसे की अनमोल पूंजी ही है। तो आइये बिहार के भागलपुर का रुख करें, जहां की यह तस्वीर जिसमें मां की गोद में चिपकी बच्ची खाने की थाली को भरोसे की उसी सहजता से ग्रहण कर रही है जिसे मानवीयता कहते हैं।

बरारी की मलिन बस्ती में सैकड़ों आंखों में झलक रही निश्छल मुस्कान इस मकसद को एक मुकाम दे जाती है। एक उदाहरण भर है, जब जागरण टीम हाथों में खाना लेकर ऐसी बस्तियों में पहुंचती है। गांव से शहर तक कोरोना की दहशत में लॉकडाउन के बीच लोगों की हरसंभव मदद का एकमात्र ध्येय लिए। पूर्व बिहार से लेकर कोसी-सीमांचल तक समाज के साथ से एक शृंखला बनती चली गई है।

ऐसे काम कर रही है यह शृंखला : गांव की पगडंडियों से लेकर शहर की गलियों तक पर नजर रख रहे दैनिक जागरण के अनेक संवाददाता-छायाचित्रकार एक-एक सूचना एकत्र करते चलते हैं। कहां किस बात की कमी है, कहां किस चीज की आवश्यकता आन पड़ी है। समाज के हर तबके के लोगों का एक ग्रुप बनाया गया है। खाना हो या राशन या दवाएं, संबंधित स्रोतों से इसे सुनिश्चित किया जाता है। सूचना मिली नहीं कि तत्काल उपलब्ध माध्यम से वहां तक राहत पहुंचाई जाती है। ईस्टर्न बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स, गौशाला समिति, युवा मारवाड़ी समाज, वी केयर, केंद्रीय रेलवे यात्री संघ, जीवन जागृत सोसाइटी से लेकर जनप्रतिनिधियों तक का साथ इसमें मिलता जा रहा है। इसी के बूते ही जागरण की यह अपील प्रासंगिक हो रही है कि- कोरोना को हराना है!

कोरोना संदिग्धों पर भी नजर : अब तक दो हजार से ज्यादा लोगों तक भोजन-पानी, सैकड़ों कर्मयोगियों (बता दें कि दैनिक जागरण अपने उन अग्रणी सहयोगियों को, जो आपके घरों तक आपका जागरण अबाध पहुंचाते हैं, कर्मयोगी कह संबोधित-सम्मानित करता है) को राशन मुहैया कराने से लेकर जरूरतमंदों को अस्पताल तक पहुंचाने की निरंतर मुहिम जारी है। इस पर भी नजर कि किसी भी कोरोना संदिग्ध के बारे में प्रशासन को तत्काल जानकारी दी जाए। कई परिवारों को जांच व उपचार के लिए आवश्यक सहायता इस रूप में मुहैया कराई जा रही है।

महिलाओं की चिंता : गर्भवती महिलाओं की समस्याएं, उनका चेकअप जैसे कई सवाल थे। जागरण के पत्रकारों के साथ संगिनी क्लब की सदस्य भी मैदान में कूद पड़ीं। टीम ने इसके लिए भी एक चेन बनाई। सदस्यों ने घूम-घूमकर ऐसी जरूरतमंद महिलाओं का नाम दर्ज किया। परामर्श के लिए डॉक्टर भी आ रहे हैं। संगिनी क्लब भी राहत कार्य में जुटा हुआ। कड़ी-दर-कड़ी जुड़ती चली जा रही है, पर शारीरिक दूरी बनाते हुए।

बिहार के भागलपुर में खाद्य सामग्री का वितरण करता टीम जागरण का सदस्य। जागरण

इस संकट की घड़ी में जरूरतमंदों की मदद से बड़ा कार्य और कुछ भी नहीं। दैनिक जागरण हर सही सूचना तो दे ही रहा है, जागरण की पूरी टीम का मानवीय दृष्टिकोण औरों को भी प्रेरित कर रहा है। इस संकट की घड़ी में हम पूरी तरह इस मुहिम के साथ हैं।

– विष्णु खेतान, अध्यक्ष, केंद्रीय रेलवे रेल यात्री संघ

कोरोना के इस दौर में दैनिक जागरण ने लोगों के मन में जागृति पैदा की है। राहत वितरण कार्य तक में जागरण परिवार के पत्रकारों का उत्साह सराहनीय है। अभी जो हालात हैं, उसमें रिस्क लेकर कर्तव्य पथ पर डटे रहना आसान नहीं है। इस मुहिम में चैंबर ऑफ कॉमर्स जागरण के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता रहेगा। **-अशोक भिवानीवाला, अध्यक्ष, ईस्टर्न बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स**

बीमार माता-पिता को छोड़ पीड़ितों की सेवा में देश की बेटी

<< सिविल अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात सतनाम कौर उर्फ सिमरन।

>> घर पर सतनाम कौर उर्फ सिमरन फिजिकल डिस्टेंस का भी ख्याल रख रही हैं। पिता भी दूर से ही उसे उम्मीद भरी आंखों से देखते हैं।

कोरोना के योद्धा

सिविल अस्पताल में कोरोना के मरीजों के लिए बनाए गए आइसोलेशन वार्ड में जाने से जहां कई अस्पतालों का स्टाफ कतरा जाता है वहीं सिविल अस्पताल में कॉन्ट्रेक्ट बेस पर तैनात महिला वार्ड अटेंडेंट कोरोना से लोहा ले रही हैं। वह भी उन परिस्थितियों में जब उनके माता-पिता गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। चंडीगढ़ मार्ग पर स्थित जमालपुर क्षेत्र की रहने वाली 25 वर्षीय सतनाम कौर उर्फ सिमरन की मां पिछले करीब 10 साल से शुगर की बीमारी से जूझ रही हैं जबकि पिता को पांच साल पहले अधरंग हो गया था। दोनों बिस्तर पर हैं दो भाई हैं जो प्राइवेट जॉब करते हैं लेकिन उनका हौसला भी बढ़ा रहे हैं।

परिजनों ने बढ़ाया हौसला

जब सिमरन के माता पिता को इस बात का पता चला कि उनकी ड्यूटी कोरोना मरीजों को लेकर बनाए गए आइसोलेशन वार्ड में लगाई गई है तो बीमार माता-पिता ने उन्हें यह कहकर देश-सेवा के लिए प्रेरित किया कि देश सबसे पहले है और वह दोनों बाद में। रोजाना करीब 12 घंटे तक वह वार्ड में रह कर मरीजों की सेवा कर अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रही हैं।

सेवा से बड़ा कुछ नहीं

नौ महीने से अस्पताल में बतौर वार्ड अटेंडेंट काम कर रहीं सतनाम कौर कहती हैं कि आइसोलेशन वार्ड में ड्यूटी का उन्हें कोई डर नहीं है। मौत से डर कैसा वह तो एक न एक दिन आनी ही है। आपदा के इस दौर में देश की सेवा कर सकूं यह गर्व की बात होगी। क्योंकि जिन लोगों की सेवा में वे लगीं हुई हैं अगर वह इस संकट से उबर जाते हैं तो यह उन मरीजों के साथ साथ पूरे देश और उसके लिए सौभाग्य की बात होगी। ● प्रस्तुति : लुधियाना से **अश्वनी पाहवा**

कोरोना से जंग लड़ने को बहाल किए जाएंगे निलंबित पुलिसकर्मी

राज्य ब्यूरो, जयपुर : राजस्थान में कोरोना से युद्ध लड़ने के लिए निलंबित पुलिसकर्मियों को बहाल किया जाएगा। राज्य के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) भूपेंद्र सिंह ने इस बारे में आदेश जारी किए हैं। आदेश में कहा गया है कि सामान्य प्रवृत्ति के मामलों में गत छह माह से अधिक समय से निलंबित पुलिसकर्मियों को जांच जारी रखते हुए बहाल किया जाए। इन दिशा-निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि एसीबी के मामलों, आपराधिक प्रवृत्ति के मामलों एवं गंभीर प्रवृत्ति के मामलों, जैसे हिरासत में मौत आदि के मामलों में निलंबन के मामलों में बहाली नहीं होगी। ६६प्रदेश के समस्त पुलिस रेंज महानिरीक्षकों, पुलिस आयुक्तों, उपायुक्तों, पुलिस अधीक्षकों एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे उनके अधीनस्थ पुलिस कांस्टेबल से निरीक्षक स्तर तक के मामलों में निलंबन की बहाली कर इस बहाली को सक्षम स्तर से अनुमोदित करवा कर मुख्यालय को सूचित करें। हालांकि, नेता प्रतिपक्ष और पूर्व गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने इस निर्णय को सही नहीं माना है। उनका कहना है कि कोरोना से बचाव-रोकथाम के दौरान सरकार भले ही निलंबित पुलिस कर्मचारियों की सेवाएं लेने के लिए इनका उपयोग कर ले, लेकिन यदि इसके पीछे पूर्व में जो अपराध इन पुलिसकर्मियों ने किए हैं, उसे बिना जांच किए मुक्त करने की मंशा है तो फिर वह गलत होगा।

घर का इकलौता कमाने वाला हूं कोरोना को तो हराना ही था

शरणम अस्पताल के वार्ड ब्वॉय हैं सूरज कुमार। अस्पताल में कई मौत देख चुके हैं, लेकिन सामने अपनी मौत देखी तो इस दुनिया में रहने और चले जाने का फर्क क्या है, महसूस किया। वह कोरोना से लड़ाई में जीत गए हैं। रिपोर्ट निगेटिव आने के बाद अभी पटना के एक होटल में क्वारंटाइन हैं। 14 दिन बाद घर लौटेंगे। कहते हैं कि कोरोना मुझे इतना जल्दी इतना बदल देगा, कभी सोचा ही नहीं था। सुनिए उनकी जुबानी उनके इस दौरान के अनुभवों की कहानी :

कोरोना के विजेता

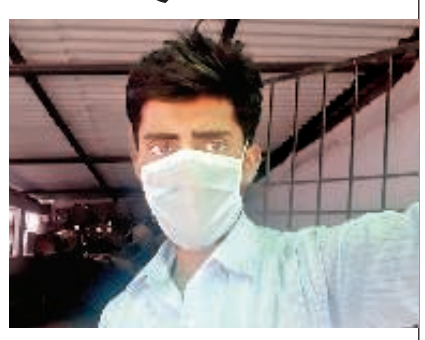

साथ के लोगों ने बढ़ाई हिम्मत

मुंगेर निवासी कोरोना पॉजिटिव जिस युवक की मौत पटना एम्स में हुई थी वह पहले खेमनीचक स्थित शरणम हॉस्पिटल आया था। अस्पताल के कई कर्मियों समेत मैंने भी उस युवक को आइसीयू में शिफ्ट किया था। इसके बाद 21 मार्च का सभी का सैंपल लिया गया। 24 मार्च को जब पता चला कि रिपोर्ट पॉजिटिव है, तो डर गया। एनएमसीएच में भर्ती किया गया। पहले लगा कि सब कुछ खत्म हो गया फिर डॉक्टरों, अस्पतालकर्मियों और दूसरे मरीजों ने मेरी हिम्मत बढ़ाई।

मेरे बाद क्या होगा, सोचकर रात में सुबकता था

मैं और मेरा परिवार खेमनीचक स्थित किराये के एक कमरे में रहता है। पिता बाबू लाल सिंह लकवा से ग्रसित हैं। बहन विवाहित हैं। भाई बीए में पढ़ रहा है। मां घरेलू महिला है। पूरे परिवार का मुझ पर ही निर्भर है। भर्ती रहने के दौरान हमेशा यही चिंता रहती थी कि मुझे कुछ हो गया तो पापा का इलाज, घर का खर्च, मकान का किराया, भाई की पढ़ाई का क्या होगा? कई रात रोया। फिर सोचा कि मुझे इन सभी के लिए जीना होगा। इसी जरूरत ने मुझ में कोरोना को हराने की हिम्मत दे डाली। मेरी दो जांच रिपोर्ट निगेटिव होने के बाद छह अप्रैल को एनएमसीएच से डिस्चार्ज किया गया। सीधे घर आया। इसी बीच एक एंबुलेंस आई और मुझे पाटलिपुत्रा होटल ले आई। मैं यहां आइसोलेट हूं।

भरोसा करें, सकारात्मक रहें

सूरज कहते हैं कि कोरोना पॉजिटिव और सशंकित होने वालों से कहूंगा कि बिल्कुल भी न डरें। परिस्थिति का हिम्मत से मुकाबला करें। ईश्वर के साथ स्वास्थ्य व्यवस्था पर भरोसा करें। सब ठीक होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यदि आपको खुद पर विश्वास है और अपनी जिम्मेदारियों का अहसास है तो हर परिस्थिति में जीत मुमकिन है।

● प्रस्तुति : पटना से **अहमद रजा हाशमी**

प्रेरक

कोरोना से जंग को गांव की कमान संभाल रही आठवीं की छात्रा, दोनों वक्त करती है अनाउंसमेंट, बिटिया के कहने पर प्रधान ने गांव में लगवाया पब्लिक एड्रेस सिस्टम

स्वस्थ समाज

सुबह-शाम करती है सावधान, देती है देश-दुनिया की जानकारी

जिज्ञासू वशिष्ठ, कासगंज

मैं हर्षिता बोल रही हूं, आप सभी से अपील करती हूं कि घर से अकारण बाहर न निकलें। कोरोना वायरस का संक्रमण आपको अपना शिकार बना सकता है। मोदी जी ने सभी को घरों से बाहर न निकलने यानी लॉकडाउन का पालन करने को कहा है ताकि लोग इस बीमारी से बचे रहें...।

कासगंज, उत्तर प्रदेश के सोरों क्षेत्र से करीब 15 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत कैंडी में हर सुबह और शाम को लाउडस्पीकर पर यह आवाज गूंजती है। ग्रामीणजन अपने-अपने घरों में ही एकाग्रचित होकर इसे सुनते हैं और अलर्ट हो जाते हैं। गांव में यह सिलसिला लॉकडाउन के साथ ही शुरू हुआ है। ठेठ देहात में बसे लोगों को यह भी जानकारी दी जाती है कि कोरोना देश और दुनिया में किस कदर महामारी मचाए हुए है। सरकार क्या इंतजाम कर रही है। लोगों को किस-किस बात का ध्यान रखना है। सरकार का क्या निर्देश है। हर दिन सुबह-शाम नियम से यह जानकारी सुन लोगों को राहत तो मिलती ही है, साथ ही एकजुटता की भावना भी उत्पन्न होती है। प्रधान के जरिये गांव में सभी का हाल भी पता चल जाता है।

आठवीं की छात्रा हर्षिता की मां सरोज देवी गांव की प्रधान हैं। पिता शैलेंद्र सिंह विद्युत विभाग में कार्यरत हैं। कोरोना वायरस से बचाव के लिए सरकार ने जब सतर्कता की अपील की तो हर्षिता ने ही ग्रामीणों को जागरूक करने की यह पहल की। बेटी के कहने पर माता-पिता ने पब्लिक एड्रेस सिस्टम लगवाया। घर पर कंट्रोल रूम बनाया। गांव में ऊंची छतों पर चार लाउडस्पीकर रखवाए हैं, जिनकी जद में पूरा गांव आ जाता है।

हर्षिता हर सुबह-शाम इसी सिस्टम से ग्रामीणों को बीमारी से बचने को आगाह करती है। बचाव के उपायों के अलावा देश-दुनिया में कोरोना के कहर के बारे में भी बताती है। कोई नई जानकारी होने पर दिन में भी अक्सर एनाउंस करती है। हर्षिता कहती है कि अखबार और टीवी से जो जानकारी मिलती है, उसके बारे में भी ग्रामीणों को बताती हूं। इसके लिए पहले खुद समझती हूं और फिर आसान तरीके से गांव वालों को समझा देती हूं। खुशी है कि गांव के लोग मेरी बात को गौर से सुनते हैं और अमल भी कर रहे हैं। हर्षिता के कहने पर प्रधान ने गांव की दीवारों-सड़कों पर भी जागरूकता संबंधी संदेश लिखवाए हैं।

हर्षिता की मम्मी ग्रामप्रधान सरोज बताती हैं कि प्रशासन के निर्देश पर हमने गांव के बाहर स्कूल में क्वारंटाइन सेंटर बनाया है। दूसरे शहरों से आने वाले लोगों को पहले यहीं रोका जाता है। शुक्रवार तक यहां पर पांच लोग थे, जो 14 दिनों तक रुके थे और परीक्षण में सब ठीक मिलने पर अपने-अपने घर चले गए। गांव की आबादी 2200 के करीब है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

पब्लिक एड्रेस सिस्टम पर ग्रामीणों को कोरोना के बारे में जागरूक करती हर्षिता। जागरण

कैंडी गांव में सड़कों पर भी इस तरह के स्लोगन प्रधान की ओर से लिखवाए गए हैं, ताकि घर से बाहर निकलने वाले इसे पढ़कर गली में न आएं। जागरण

लॉकडाउन की घोषणा हुई तो बेटी हर्षिता ने कहा कि सुबह-शाम अगर हम अनाउंस करें तो ज्यादा ठीक रहेगा। लोगों को जरूरी जानकारी आसानी से समझाई जा सकेगी ताकि वे सरकार के निर्देशों को जल्द से जल्द समझ और अपना सकें। उन्हीं की भाषा में समझाएंगे तो हमारी बात को समझेंगे भी। रोज घोषणा होगी तो लोग जागरूक होंगे। इस सलाह पर ही हमने पब्लिक एड्रेस सिस्टम लगवाया।

-ग्रामप्रधान सरोज, हर्षिता की मम्मी

किसानों ने जरूरतमंदों को दो हजार किलो सब्जी मुफ्त में दी

नईदुनिया, बिलासपुर : लॉकडाउन में जरूरतमंदों की मदद में लोग बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। छोटे किसान, जिनके लिए मौसमी सब्जी की खेती ही आय का प्रमुख जरिया होती है, वह भी दरियादिली दिखाने में पीछे नहीं हैं। छत्तीसगढ़ में मुंगेली जिले के 67 किसानों ने अपने-अपने खेतों से करीब दो हजार किलो सब्जी तोड़ी और उसे जरूरतमंदों में मुफ्त में बांट दी। ये किसान प्रतिदिन सब्जी बांट रहे हैं।

मुंगेली जिले के ग्राम पंडरभठ्ठा, सुरदा, डाडगांव, देवरी व देवगांव के इन 67 किसानों ने बुधवार सुबह खेतों से सब्जी तोड़ी और उसे वाहन में लादकर सहायक संचालक उद्यानिकी के कार्यालय में पहुंचे। किसानों ने इस सब्जी को जरूरतमंदों के बीच दान करने की बात की। किसानों ने दो हजार 176 किलोग्राम हरी सब्जी को अधिकारियों के साथ जरूरतमंदों में उनकी मांग के अनुरूप बांट दिया।

दैनिक जागरण

लोग आशा बहुत ज्यादा करते हैं, काम बहुत कम

लॉकडाउन की समय-सीमा

विभिन्न दलों के संसदीय दल के नेताओं के साथ प्रधानमंत्री की बैठक से यही स्पष्ट हुआ कि फिलहाल लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। हालांकि इस संदर्भ में कोई निर्णय प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों के साथ होने वाली बैठक के बाद ही होगा, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कई मुख्यमंत्री लॉकडाउन बढ़ाने का आग्रह कर चुके हैं और कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने की जो स्थिति है वह भी इसकी अनुमति नहीं देती कि 14 अप्रैल को देश को लॉकडाउन से मुक्त कर दिया जाए। अब जब लॉकडाउन की अवधि बढ़ना तय-सा माना जा रहा है तब फिर इस पर विचार आवश्यक हो गया है कि क्या देश के उन हिस्सों में कोई सशर्त ढील दी जाए जो कोरोना के संक्रमण से बचे हुए हैं और जहां यह अंदेशा नहीं है कि संक्रमण फैल सकता है? इस प्रश्न पर विचार इसलिए होना चाहिए, क्योंकि देश को लॉकडाउन की भारी आर्थिक कीमत चुकानी पड़ रही है। आवश्यक सेवाओं को छोड़कर करीब-करीब सारी कारोबारी गतिविधियां ठप हैं। इसके चलते केवल कारोबार जगत को ही नुकसान नहीं उठाना पड़ रहा, बल्कि कामगारों के सामने भी रोजी-रोटी का संकट गहरा रहा है।

बेहतर होगा कि कोरोना प्रभावित इलाकों में तो लॉकडाउन को और सख्ती से लागू किया जाए, लेकिन कोरोना के संक्रमण से बचे क्षेत्रों में आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों को सीमित स्तर पर ही सही, गति देने के उपाय किए जाएं। ऐसा करते समय वैसी ही सावधानी बरतना सुनिश्चित किया जाना चाहिए जैसी आवश्यक सेवाओं से जुड़ी आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों के संचालन में बरती जा रही है। चूंकि फसल कटाई का काम शुरू होने जा रहा है और उसे रोका नहीं जा सकता इसलिए केंद्र सरकार के साथ राज्य सरकारों को इस पर भी ध्यान देना होगा कि ग्रामीण इलाकों में कृषि कार्य तो संपन्न हों, लेकिन संक्रमण फैलने का खतरा न पनपने पाए। निःसंदेह ऐसे उपाय करने के साथ ही उन कारणों का निवारण भी प्राथमिकता के आधार पर करना होगा जिनके चलते कोरोना वायरस की चपेट में आने वालों की संख्या कम होने का नाम नहीं ले रही है। यह शुभ संकेत नहीं कि बीते 24 घंटों में सात सौ से अधिक कोरोना मरीज मिले। इससे इन्कार नहीं कि हर दिन ज्यादा से ज्यादा लोगों के परीक्षण का काम तेज करने की जरूरत है, लेकिन इसके साथ ही समाज की ओर से ऐसा माहौल बनाना भी समय की मांग है कि कोरोना के संदिग्ध रोगी अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराने के लिए स्वेच्छा से आगे आएं। कोरोना वायरस की चपेट में आना गुनाह नहीं, लेकिन उसके संक्रमण को छिपाना आपराधिक लापरवाही के अलावा और कुछ नहीं।

सबको मिले राशन

कोरोना वायरस से लड़ाई कब तक चलेगी, स्पष्ट रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन इसकी वजह से कोई भूखा न रहे, यह बड़ी चुनौती है। हालांकि सरकार ने पूरी व्यवस्था की है कि कोई भी भुखमरी की स्थिति से न गुजरे। इसके लिए लगातार बैठकें हो रही हैं। निगरानी भी हो रही है, मगर सच ये भी है कि कई जगहों पर ग्रामीणों को राशन नहीं मिल रहा। दो दिन पहले ही गोड्डा की डुमरिया पंचायत के ग्रामीणों को राशन और भोजन नहीं मिलने की शिकायत मिली थी। डुमरिया में संताली जनजाति के लोगों की संख्या अधिक है। उनके पास राशन कार्ड नहीं है। राशन की क्या कहें, नमक भी नहीं मिल रहा। यह जानकारी मुख्यमंत्री को हुई तो उन्होंने गोड्डा के उपायुक्त को निर्देश दिया कि वहां के ग्रामीणों को तुरंत राशन मुहैया कराएं। राज्य के कृषि मंत्री ने भी कहा है कि कोरोना से जंग में सरकार संसाधन और पैसे की कमी नहीं होने देगी। गड़बड़ी करने वाले डीलर सख्त कार्रवाई के दायरे में आएंगे। सभी बीडीओ को भी तीन-तीन लाख रुपये दिए गए हैं। खर्च होने पर पांच-पांच लाख रुपये और दिए जाएंगे। जिला स्तर पर भी अच्छी-खासी रकम दी गई है। उद्देश्य है कि सबको राशन और जरूरी चीजें मिलें। मगर कई लोग हैं, जो इस स्थिति का फायदा उठाकर अपनी झोली भरने में लगे हैं। धनबाद में ऐसा ही मामला सामने आया। पीडीएस दुकानदारों को गरीबों को अप्रैल-मई का राशन मुहैया कराना है। मगर कतरास इलाके की आठ पीडीएस दुकानों में से छह में सच्चाई इससे उलट दिखी। ये छह दुकानें बंद थीं। एक में एक माह का ही अनाज बंट रहा था। कुछ जगहों पर लाभुकों को यह कहकर राशन नहीं दिया गया कि वे बाहर से आए हैं और उनसे बीमारी फैलने की आशंका है। जानकारी होने पर मुख्यमंत्री ने सभी जिला प्रशासन को निर्देश दिया कि राशन के रास्ते में अफवाह का रोड़ा नहीं आना चाहिए। यह पहल अच्छी है कि अगर राशन मिलने में परेशानी हो रही है तो निःशुल्क नंबर 1967 पर शिकायत करें। एकजुट होकर इस विकट स्थिति से निकलना है।

सरकार ने पूरी व्यवस्था की है कि कोई भी भुखमरी की स्थिति से न गुजरे, मगर कई जगहों पर ग्रामीणों को राशन नहीं मिल रहा

निराश करता मुस्लिम नेतृत्व

डॉ. एके वर्मा

मुस्लिम विद्वान भी मुसलमानों को यह नहीं समझा सके हैं कि गंगा-जमुनी तहजीब बनाए रखने की जिम्मेदारी उनकी भी उतनी ही है जितनी हिंदुओं की

अवधेश राजपूत

आज जब पूरा देश कोरोना से लड़ रहा है तब मुस्लिम समाज के एक छोटे समूह तब्लीगी जमात ने उसमें व्यवधान डाला है। इससे मुस्लिम समाज भी चिंतित है। उसे कुशल मुस्लिम नेतृत्व चाहिए, लेकिन अवांछित तत्वों ने मुस्लिम नेतृत्व हथिया लिया है। मुस्लिमों में नेतृत्व को लेकर शुरू से चुनौतियां रही हैं। 1947 में जो विभाजनकारी रेखा हिंदुओं और मुसलमानों के बीच खिंची वह ऐतिहासिक सत्य है। जो मुसलमान भारत में रह गए, हिंदू समाज ने उनको अपनत्व दिया, बावजूद इसके कि पाकिस्तान में हिंदुओं के साथ दुर्व्यवहार होता रहा। आज से 60-70 वर्ष पहले मुस्लिम मित्रों के यहां जाना और उनका हमारे घरों में आना, खाना-पीना-खेलना सामान्य दिनचर्या थी। जब संयुक्त परिवार कम हुए तो हिंदू-मुस्लिम परिवारों में भी आना-जाना कम हो गया। धीरे-धीरे मुस्लिम समाज अपने में सिमटता चला गया और उन मंचों का अभाव भी होता चला गया जहां हिंदू-मुस्लिम मिलन होता था, जहां गंगा-जमुनी संस्कृति फलती-फूलती थी।

समय के साथ मुस्लिम समाज की एकाकी अस्मिता बलवती होती गई और वह मुख्यधारा से कटती चली गई। इसे दो प्रवृत्तियों ने और मजबूत किया। एक, स्वतंत्रता-संग्राम का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस ने गांधीजी की सलाह के विरुद्ध स्वयं को राजनीतिक पार्टी बना दिया और चुनावी स्पर्धा में मुस्लिमों को वोट-बैंक के रूप में देखने लगी। कांग्रेस ने मुसलमानों को आरएसएस और जनसंघ का भय दिखाकर और स्वयं को उनका हितैषी और सेकुलरिज्म का समर्थक बताकर उनकी अल्पसंख्यक अस्मिता को बलवती किया। इसी से अल्पसंख्यकवाद और मुस्लिम तुष्टीकरण की विषबेल पनपी। इसके चलते मुस्लिमों में पीड़ित और वंचित होने का भाव जगा, जिससे उनमें हिंदुओं के प्रति रोष उपजा। अन्य अनेक दल भी उनके हितैषी होने का स्वांग कर उनका राजनीतिक शोषण करते रहे और उन्हें मुख्यधारा में आने से रोकते रहे। दूसरा कारण मुस्लिम नेतृत्व की विफलता रही। स्वतंत्रता के बाद मुस्लिम समाज से कोई नेतृत्व नहीं निकला। जो नेता निकले भी वे कांग्रेस की कृपा से निकले।

चार नवंबर, 1947 को दिल्ली में मुस्लिमों को संबोधित करते हुए मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कहा था, 'वे शपथ लें कि यह देश हमारा है और इसके भविष्य का निर्णय तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक हम उसमें शिरकत नहीं करेंगे।' दुर्भाग्य की बात है कि मौलाना आजाद और उनके सरीखे रफी अहमद किदवई की मृत्यु के बाद उनकी जगह लाए गए हाफिज इब्राहिम और एमसी छागला मुस्लिम समाज को अपेक्षित राजनीतिक नेतृत्व न दे सके। 1961 में जबलपुर और 1964 में जमशेदपुर एवं राउरकेला में हिंदू-मुस्लिम दंगे हुए। 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद जब अब्दुल हमीद को मरणोपरांत सर्वोच्च सैनिक सम्मान परमवीर चक्र दिया गया तो पुनः मुस्लिमों के मुख्यधारा में आने की आशा जगी, लेकिन अनेक मुस्लिम नेता वैसा रवैया न अख्तियार कर सके जैसी वक्त की मांग थी।

मुस्लिमों की नई पीढ़ी अपने को भारतीय मानती थी। बरेलवी हों या देवबंदी, वे भारत के प्राचीन इतिहास में अपने पूर्वजों को तलाशने लगे, लेकिन फिर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, उर्दू और मुस्लिम पर्सनल लॉ मुस्लिम अस्मिता के नए प्रतीक बन गए। 1971 के बांग्लादेश युद्ध से भी हिंदू-मुस्लिम अलगाव उभरा। इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल में जब आरएसएस और जमात-ए-इस्लामी नेताओं को जेलों में बंद किया गया तो दोनों समुदायों के पास आने की आस जगी। संपूर्ण-क्रांति के प्रणेता जयप्रकाश बाबू के सुझाव पर आरएसएस ने मुसलमानों के लिए अपने द्वार खोलने का आश्वासन भी दिया, पर 1979-80 में ईरान में अयातुल्ला खोमैनी की क्रांति से भारत में इस्लामिक-उफान सा आ गया। कश्मीर तो हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द में विभाजक तत्व रहा, अन्य मुद्दे जैसे शाहबानो, राममंदिर, गोधरा-कांड और गुजरात दंगे भी उसे हवा देते रहे। 1992 में बाबरी ढांचा ढहाए जाने से भी हालात बदले।

सांप्रदायिक सौहार्द के लिए मुसलमानों को सही बौद्धिक नेतृत्व भी नहीं मिला। अपवादों को छोड़, मुस्लिम विद्वान मुस्लिम-केंद्रित अध्ययन-शोध में लीन रहकर यह प्रमाणित करते रहे कि मुस्लिम उपेक्षित और असुरक्षित हैं। सांप्रदायिक दंगों में वे मुस्लिमों के प्रति पुलिस की सख्ती को रेखांकित करते, लेकिन यह सत्य छिपाते रहे कि पुलिस को ऐसा करना क्यों पड़ता है? अधिकतर दल राजनीतिक लाभ के लिए मुस्लिम तुष्टीकरण का प्रयास करते हैं और हिंदुओं की असुरक्षा और संवेदनाओं की घोर उपेक्षा करते हैं। मुस्लिम विद्वान भी मुसलमानों को यह नहीं समझा सके कि उनका भी हिंदुओं के प्रति कुछ फर्ज बनता है और गंगा-जमुनी तहजीब बनाए रखने की जिम्मेदारी उनकी भी उतनी ही है जितनी हिंदुओं की। मुस्लिम विश्वविद्यालय भी हिंदू-मुस्लिम सद्भाव के संवाहक नहीं बन सके, जबकि हिंदू-मुस्लिम विद्वानों में बेहद प्रेम है। इसी की आड़ लेकर कट्टरपंथी धर्मगुरुओं ने मुस्लिम बुद्धिजीवियों से नेतृत्व छीन लिया। कट्टरपंथी धर्मगुरु 'पैन-इस्लामिज्म' को लक्ष्य करते हैं, इसलिए उनकी तकरीरों में मुस्लिम-अस्मिता को मजबूत करने का प्रयत्न होता है, न कि मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने का। इसी कारण तब्लीगी जमात के मौलाना साद जैसे तत्व मुसलमानों को शर्मसार करते हैं और सूफी किस्म के धर्मगुरुओं के सांप्रदायिक-सौहार्द के प्रयासों पर पानी फेरते हैं।

राजनीति में अपराधियों के बढ़ते प्रभाव और मुस्लिमों को वोट-बैंक की तरह देखने के कारण दलों ने स्थानीय स्तर पर मुस्लिमों का राजनीतिक नेतृत्व हथियाने के लिए आपराधिक किस्म के लोगों को प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार राजनीतिक, बौद्धिक, धार्मिक और सामाजिक मुस्लिम नेतृत्व के अभाव ने न केवल मुस्लिम अस्मिता, वरन सांप्रदायिक विद्वेष और राष्ट्र-विरोध को भी बलवती किया है। काश मुस्लिम नेतृत्व की कोई ऐसी धारा फूटती जो मुसलमानों को देश की मुख्यधारा, गंगा-जमुनी संस्कृति और सांप्रदायिक सौहार्द की ओर ले जाती।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं)

response@jagran.com

दांव पर लगी अमेरिका की साख

हर्ष वी पंत

कोरोना संकट से वह अमेरिका लड़खड़ा रहा है जिस पर आपदा के समय दुनिया की उम्मीदें टिकी होती थीं

पूरी दुनिया कोरोना महामारी के शिकंजे में है। हालात अभी भी भयावह दिख रहे हैं। तमाम चर्चाओं के बीच एक बड़ा सवाल चीन के रवैये को लेकर है। शुरुआती हफ्तों में कोरोना संकट से निपटने में कम्युनिस्ट पार्टी के संदिग्ध रवैये, महामारी के खिलाफ जागरूकता की अलख जगाने वालों पर ही सख्ती, सूचनाओं का अपने कूटनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल को लेकर तो चीन सवालों के घेरे में है ही, इसे लेकर भी है कि जब उसने इस आपदा पर एक बड़ी हद तक काबू पा लिया तो वह खुद को पीड़ित देशों के रहनुमा के रूप में पेश कर रहा है। ऐसे सवाल स्वाभाविक हैं, क्योंकि वैश्विक व्यवस्था दांव पर लगी हुई है। विमर्श अमेरिका को लेकर भी हो रहा, क्योंकि वहां का राजनीतिक नेतृत्व कोरोना वायरस के संक्रमण से उपजे संकट और उससे हो रही फजीहत को रोक पाने में नाकाम दिख रहा है। जब पूरा संसार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के सबसे बड़े संकट से जूझ रहा है तब वह देश यानी अमेरिका खुद लड़खड़ा रहा है जिस पर किसी भी आपदा के समय दुनिया की उम्मीदें टिकी होती थीं। इस आपदा से निपटने के अमेरिकी रवैये से अमेरिका की साख और विश्वसनीयता भी दांव पर लग गई है। अब वह चीन, इटली और स्पेन को पछाड़कर कोविड-19 महामारी का वैश्विक केंद्र बन गया है। अगले एक महीने में वहां महामारी चरम पर पहुंच सकती है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अभी तक जिस तरह का नेतृत्व किया है उससे तमाम सवाल उठ खड़े हुए हैं। हफ्तों तक उन्होंने इस बीमारी को गंभीरता से लिया ही नहीं। कुछ हफ्ते पहले तक मृतकों के शुरुआती आंकड़ों को लेकर वह कह रहे थे कि यह तादाद अमेरिका में फ्लू या सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों से भी कम है। यह बात उन्होंने देशवासियों को यह आश्वस्त करने के लिए कही थी कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने यह भी कहा था कि हमारा देश कभी बंद नहीं हुआ। वास्तव में वह तो आश्वस्त थे कि अमेरिका में मध्य-अप्रैल तक यानी ईस्टर की छुट्टियों तक सब कुछ सामान्य हो जाएगा और कारोबार फिर से जोर पकड़ेगा। साफ है कि वह दीवार पर लिखी इबारत नहीं पढ़ पाए।

ट्रंप प्रशासन की घोर लापरवाही का पता तभी चल गया था जब अमेरिका में शुरुआती मामले सामने आने के बाद उसने कोई तात्कालिक कदम उठाना जरूरी नहीं समझा और कहा कि स्थिति नियंत्रण में है। उसने यह मुगालता भी पाल लिया कि तापमान बढ़ने के बाद यह महामारी किसी चमत्कार की तरह गायब हो जाएगी। कोरोना संकट की गंभीरता को समझने के बजाय ट्रंप ट्विटर पर उन डेमोक्रेट गवर्नरों से उलझने में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे थे जो अधिक ठोस कदमों की मांग कर रहे थे। इसके बाद जब महामारी ने अपना विकराल रूप दिखाना शुरू किया तो अपर्याप्त मेडिकल आपूर्ति और परीक्षण के मोर्चे पर अक्षमता को लेकर अमेरिका की कलई खुल गई। अब अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग देश भर में एक से दो लाख मौतों की आशंका जता रहा है। इस कड़वी हकीकत का आभास ट्रंप को हाल में तब हुआ जब उन्हें यह कहना पड़ा कि प्रत्येक अमेरिकी को मुश्किल वक्त के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि आने वाला समय बहुत पीड़ादायक होने वाला है।

कोरोना से बदहाल होती अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए अमेरिकी कांग्रेस ने हाल में 2 ट्रिलियन डॉलर का राहत पैकेज मंजूर किया है जो उसके इतिहास में अभी का सबसे बड़ा पैकेज है। इसमें अमेरिका के दोनों दलों ने एकजुटता दिखाई। इसके बावजूद वहां राजनीतिक तल्खी कायम है। प्रतिनिधि सभा की स्पीकर नैंसी पेलोसी ने सदन की एक नई समिति गठित की है जो महामारी से मुकाबला करने की संघीय सरकार की नीतियों-कार्यक्रमों के सभी पहलुओं की समीक्षा करेगी। ट्रंप ने इसे बेवजह निशाना बनाने वाली कवायद करार दिया है। अमेरिकी राजनीति में ऐसे तल्ख स्वरों का उभरना स्वाभाविक ही है, क्योंकि इस साल वहां राष्ट्रपति चुनाव होने हैं जिसमें ट्रंप और डेमोक्रेट्स दोनों का बहुत ऊंचा दांव लगा हुआ है। हालिया ओपिनियन पोल्स के नतीजों में यह झलकता भी है। करीब 94 प्रतिशत रिपब्लिकन मानते हैं कि ट्रंप इस आपदा से बखूबी निपट रहे हैं। वहीं ऐसा मानने वाले डेमोक्रेट्स का आंकड़ा महज 27 प्रतिशत है। ट्रंप की स्वीकार्यता रेटिंग भी इस समय 49 प्रतिशत है जो खासी ध्रुवीकृत राजनीति में उनके हिसाब से बहुत अच्छी है। बहरहाल आने वाले दिनों में यह आपदा किस प्रकार अपना असर दिखाती है और ट्रंप उससे कैसे निपटते हैं, इसका नवंबर में होने राष्ट्रपति चुनावों के नतीजों पर काफी असर पड़ेगा।

जहां तक अमेरिका के वैश्विक नेतृत्व का सवाल है तो उसे लेकर सवाल दिन-प्रतिदिन गंभीर होते जा रहे हैं। तमाम कमियों के बावजूद चीन वैश्विक नेतृत्व के लिए अपना एक मॉडल पेश कर रहा है जो दुनिया के एक बड़े हिस्से को लुभा सकता है। दुनिया में बहुत ही कम देश इस आपदा से निपटने और इस गाढ़े वक्त में विश्व का नेतृत्व करने के लिए अमेरिका से मनुहार कर रहे हैं। यह अमेरिकी नीति-निर्माताओं के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। यहां तक कि वाशिंगटन के करीबी दोस्त भी उससे उम्मीदें नहीं लगा रहे। असल में अमेरिका ने खुद को अलग रखने की जो कवायद शुरू की थी वह कोरोना संकट के समय प्रत्यक्ष दिखने लगी। वैश्विक व्यवस्था के साथ अमेरिकी रिश्ता एक दोराहे पर है, क्योंकि शेष विश्व ने भी नए समीकरणों की थाह लेना शुरू कर दिया है। इसके व्यापक निहितार्थ होंगे।

(लेखक लंदन स्थित किंग्स कॉलेज में इंटरनेशनल रिलेशंस के प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

शांति-अशांति

हम किसको शांति मानें, किसको अशांति? सदा अनुकूल परिस्थिति का निर्माण हो, ऐसा दुनिया में कभी नहीं होता। प्रतिकूल परिस्थितियां भी बनती रहती हैं। स्थायी शांति तो वहां है जहां अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों प्रकार की स्थिति आने पर भी मनुष्य का मन क्षुब्ध नहीं होता। मनचाहा हुआ तो भी शांति। मनचाहा नहीं हुआ तो भी शांति। यह वृत्ति बनती है तब शांति का अर्थ समझ में आ सकता है, लेकिन हर व्यक्ति में इतना सामर्थ्य नहीं है। जब तक सुख और दुख में संतुलन का विकास करने की क्षमता विकसित नहीं होती, तब तक व्यक्ति दुख को सुख में बदलने की कला से लैस नहीं हो सकता।

जिसका चिंतन सकारात्मक होता है, वह दुख को सुख, अभाव को भाव, अशांति को शांति और अंधेरों को प्रकाश में बदलने में सफल हो सकता है। जो इस तरह की कला जानते हैं, उन्हीं का जीना सार्थक है। जिंदगी में शांति हालात को ठीक करने से नहीं मिलती, बल्कि यह जान लेने से मिलती है कि आप भीतर से क्या हैं? सुख से प्यार और दुख से घृणा की मनोवृत्ति ने ही इंसान को विरोधाभासी जीवन दिया है। जब मन में शांति के फूल खिलते हैं तो कांटों में भी फूलों का दर्शन होता है। जब मन में अशांति के कांटे होते हैं तो फूलों में भी चुभन और पीड़ा का अनुभव होता है।

शांति की तलाश करते हुए हमें चीजों की तह में जाना होगा। इसके बिना बात नहीं बनेगी। सच्चाई है कि जिसे हमने शांति का साधन मान रखा है, वह हमें शांति नहीं दे रहा है। जो है, उसे छोड़कर, जो नहीं है उस ओर भागना हमारा स्वभाव है। फिर चाहे कोई चीज हो या रिश्ते। कई बार सब मिल जाने के बावजूद वही कोना खाली रह जाता है, जो हमारा अपना होता है। दुनियाभर से जुड़ते हैं, पर अपने ही छूट जाते हैं, यही अशांति का कारण है। मदर टेरेसा ने कहा है, 'अगर दुनिया बदलना चाहते हैं तो शुरुआत अपने घर से करें, परिवार को प्यार करें।'

ललित गर्ग

कोरोना के नाम पर साइबर ठगी

शशांक द्विवेदी

कोरोना की आड़ में साइबर ठगों से बचें। किसी भी तरह के संदेहास्पद लिंक को मोबाइल या मेल से क्लिक न करें

दुनियाभर में कोरोना वायरस के बढ़ते प्रसार के साथ-साथ साइबर ठगी और साइबर हमलों का खतरा भी बढ़ रहा है। पिछले दिनों दिल्ली पुलिस की साइबर सेल ने प्रधानमंत्री राहत कोष के नाम पर फर्जी अकाउंट बनाकर ठगी करने के मामले में एक एफआइआर दर्ज किया। साइबर ठगों ने प्रधानमंत्री राहत कोष की फर्जी यूपीआइ आइडी बनाकर लोगों से पैसा हड़पने की कोशिश की। महाराष्ट्र साइबर सेल के मुताबिक लोगों के मोबाइल और ईमेल पर एक लिंक भेज कर उन्हें धोखाधड़ी का शिकार बनाया रहा है। उस लिंक पर क्लिक करते ही लोगों के बैंक खातों से जुड़ी जानकारी उन लोगों तक पहुंच रही है, जो इस साजिश के पीछे हैं। साइबर सेल ने बताया कि हैकर लोगों की इस जानकारी का इस्तेमाल उनके बैंक खातों में सेंध लगाने में कर सकते हैं।

इंटरनेट वायरस अथवा हैकिंग के जरिये सेंधमारी वह अपराध है जिसमें आमतौर पर अपराधी घटनास्थल से दूर होता है। कई बार तो वह किसी दूसरे देश में होता है और ज्यादातर मामलों में उसकी पहचान छिपी ही रहती है। साइबर सेंधमारी करने वाले तत्वों की पहचान भी मुश्किल है और उन तक पहुंच भी। यह ठीक है कि भारत में साइबर सुरक्षा के प्रति सजगता बढ़ी है, लेकिन इसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। साइबर सुरक्षा को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए जैसे तंत्र का निर्माण अब तक हो जाना चाहिए था वह नहीं हो सका है। यह सही है कि साइबर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई संस्थाएं बनाई गई हैं, लेकिन उनके बीच अपेक्षित तालमेल का अभाव अभी भी दिखता है। भारत में ही पिछले तीन महीने के दौरान 10,000 स्पैम अटैक किए गए। ऑस्ट्रेलिया में 6,000, तो इंडोनेशिया में 5,000 के करीब साइबर हमले के प्रयास हुए। यही नहीं चेक रिपब्लिक में कोरोना टेस्टिंग की सबसे बड़ी लैब को निशाना बनाते हुए साइबर हमला किया गया है। ईमेल हैकर्स विश्वास बनाए रखने के लिए किसी एनजीओ या विश्व स्वास्थ्य संगठन के नाम पर मेल भेजते हैं, ताकि कोई शक न हो। इसके अलावा ऐसी भाषा का भी प्रयोग करते हैं कि लोग डर के या फिर उत्सुकता में मेल में दिए लिंक को क्लिक करें। साइबर विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना वायरस से जुड़ा कोई भी संदेश जब यूजर्स क्लिक करता है तो वायरस मोबाइल में डाउनलोड हो जाता है, जिसके जरिये मोबाइल की पूरी जानकारी हैकर को मिल सकती है। इसके जरिये हैकर आपके पेटीएम, डिजिटल मनी से जुड़े अकाउंट में आसानी से सेंध लगा सकता है। कोरोना की आड़ में साइबर ठगों से बचें, किसी भी तरह के संदेहास्पद लिंक को मोबाइल या मेल से क्लिक न करें। किसी से भी अपने किसी बैंक, सोशल मीडिया अकाउंट या ईमेल अथवा अन्य किसी अकाउंट की जानकारी शेयर न करें।

(लेखक मेवाड़ यूनिवर्सिटी में डायरेक्टर हैं)

असहयोग से बाज आएं

राजीव सचान द्वारा 'घोर संकट के समय घनघोर संकीर्णता' शीर्षक से लिखे लेख में वैश्विक संकट के इस दौर में भी कुछ लोगों के अविवेकपूर्ण आचरण को दुर्भाग्यपूर्ण बताना स्वाभाविक है। वस्तुतः संकट की इस घड़ी में जब देश-दुनिया को धैर्य और संयम बरतने की जरूरत है, तब कुछ लोग यदि इसके विपरीत आचरण करने लगें तो यह घोर असंवेदनशीलता और अमानवीयता है। इस संबंध में विश्व महाशक्ति अमेरिका और चीन के राष्ट्राध्यक्षों की अहंकारी प्रवृत्ति पर केवल क्षोभ व्यक्त किया जा सकता है। इससे भी अधिक निंदनीय कृत्य देश-विदेश के उन तब्लीगी जमातियों द्वारा किया गया जिन्हें सुन्नी मुस्लिम समाज अपना पथ-प्रदर्शक मानता है। रही-सही कसर मीडिया के एक वर्ग और तब्लीगी जमात के हिमायतियों ने पूरी कर दी जो यह मानने के लिए तैयार ही नहीं हैं कि इस्लामिक धार्मिक शिक्षा का प्रचार करने वाली तब्लीगी जमात के मौलाना कोई गलती भी कर सकते हैं। इनकी नजर में तो भारत सरकार इन जमातियों को कोरोना संक्रमण का गुनहगार बताकर व्यर्थ ही बदनाम कर रही है, लेकिन इन जमातियों की बेजा हरकतों से युक्त हकीकत अब किसी से छुपी नहीं है। भारत में कोरोना संक्रमण के बढ़ते आंकड़े निजामुद्दीन मरकज द्वारा धर्मांधता में की गई गैरजिम्मेदाराना हरकत को बयां कर रहे हैं। बावजूद इसके भारत सरकार संयमित होकर निजामुद्दीन मरकज से बाहर आकर इधर-उधर छुप गए तब्लीगी जमातियों से अनुरोध कर रही है कि वे स्वेच्छा से बाहर आकर स्वयं को स्वास्थ्य कर्मियों के हवाले कर दें, ताकि उनकी जांच कर उन्हें क्वारंटाइन किया जा सके, लेकिन अभी भी कुछ संक्रमित जमाती इस अनुरोध पर गौर नहीं कर रहे हैं। ऐसे मूढ़ और संवेदनहीन जमातियों और जानबूझकर लॉकडाउन तोड़ने का अपराध करने वाले लोगों को कोरोना संकट की इस घड़ी में सरकार का असहयोग करने से बाज आना चाहिए, क्योंकि अब ऐसे लोगों के साथ सरकार सख्ती से पेश आने का मूड बना चुकी है।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

मेलबाक्स

प्रकृति की रक्षा जरूरी

दैनिक जागरण के 7 अप्रैल के अंक में प्रकाशित एम. वैंकैया नायडू का लेख, स्वस्थ पृथ्वी ही करेगी हमारी सुरक्षा, में लेखक ने प्रकृति और जीव जंतुओं पर मनुष्य द्वारा डाले गए नकारात्मक प्रभाव को बहुत सटीक ढंग से पेश किया है। देश में चल रहे लॉकडाउन के दौरान आश्चर्यजनक बदलाव देखने को मिले हैं। गंगा और जमुना के जल का स्वच्छ होना, नोएडा की सड़कों पर नील गाय का दिखना, जालंधर में दूर से पर्वतों का दिखना यह दर्शाता है कि मनुष्य ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति और जीव-जंतुओं के जीवन को तहस नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। कुछ महीने पहले, भारत के जिन शहरों का एयर इंडेक्स 400-500 से भी ऊपर हुआ करता था, इस समय उन्हीं शहरों के प्रदूषण का स्तर 100 के करीब है, जो कि सामान्य श्रेणी में आता है। एक मानव का शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश कुल 5 तत्वों से बनता है। मानव ने इन्हीं तत्वों में एक-एक करके उसमें विष समान प्रदूषण, गंदगी घोल दी है। आज कोरोना महामारी ने मनुष्य को बहुत बड़ी सीख दी है। कोरोना महामारी से फैले इस संकट की घड़ी में अब सभी मनुष्यों को यह समझना होगा कि हमें पृथ्वी पर रहना है तो प्रकृति और जीव जंतुओं का भी ध्यान रखना होगा। हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम प्रकृति को नुकसान नहीं पहुचाएंगे।

अखिल सिंघल, नई दिल्ली

सोशल मीडिया की जिम्मेदारी

आज सोशल मीडिया भी समाचार साझा करने का एक सशक्त माध्यम बन गया है, लेकिन इस पर भरोसे की खबरें एवं सूचनाएं नहीं होती हैं। इसका एक बड़ा कारण इस पर सक्रिय लोगों द्वारा बिना खबर को जांचे परखे आगे बढ़ा देना है। बहुत से लोग इन खबरों को सच मान बैठते हैं। इससे लोगों में भ्रांति फैलती है। सरकार भी इन भ्रामक खबरों पर अंकुश नहीं लगा पा रही है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया की तरह सोशल मीडिया की भी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए।

अमन माहेश्वरी, शाहदरा, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

97,597 करोड़ रुपये हुई मार्च महीने में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) वसूली, जो लक्ष्य से 27,403 करोड़ रुपये कम है।

आजकल

स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता देने का समय

कोरोना वायरस के संक्रमण से जनित समस्याओं ने देश का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है कि स्वास्थ्य सेवाओं के मद में व्यापक धन का प्रावधान करना होगा। स्वास्थ्य क्षेत्र पर खर्च की दृष्टि से भारत विश्व के विकसित देशों से बहुत पीछे है। अधिकांश विकसित देशों में यह खर्च पांच हजार से दस हजार डॉलर प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है, जबकि भारत में यह 70 डॉलर से भी कम है। भारत में जीडीपी का महज दो प्रतिशत स्वास्थ्य क्षेत्र पर खर्च दिया जाता है। समय आ गया है कि बजट की प्राथमिकताओं में स्वास्थ्य को भी लाया जाए

प्रो. लल्लन प्रसाद
पूर्व विभागाध्यक्ष, बिजनेस इकोनॉमिक्स विभाग, दिल्ली विवि

कोविड-19 ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित कर दिया है। वर्ष 2008-09 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के बाद वर्ष 2020 में पुनः अप्रत्याशित असाधारण आर्थिक मंदी की स्थिति आ गई है। तब दुनिया की वित्त व्यवस्था चरमरा गई थी, आज पूरी अर्थव्यवस्था और मानव जाति का स्वास्थ्य एवं जीवन संकट में है। कल-कारखाने, बाजार बंद हैं। आवागमन रुक गया है। पर्यटन, आयात-निर्यात, आंतरिक-विदेशी व्यापार सब कुछ ठप हो गया है। लॉकडाउन के कारण जीवन ठहर गया है। वर्ष 2008 में मंदी अमेरिका से शुरू हुई थी। वर्ष 2020 का संकट विश्व को चीन की देन है। दुनिया का कोई भी देश बचा नहीं है, जहां कोरोना वायरस पहुंचा नहीं है। विकसित देश इससे सर्वाधिक प्रभावित हैं। भारत में समय रहते कदम उठा लिया गया जिससे क्षति अपेक्षाकृत कम हुई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार इससे निपटने के लिए विश्व की जीडीपी का दस प्रतिशत तक खर्च करना होगा। जी 20 के सदस्य देशों ने पांच खरब डॉलर की निधि गठित करने का निश्चय किया है।

कोरोना जनित कारणों से देश की जीडीपी नीचे जा रही है। अभी यह पांच प्रतिशत के आसपास है। विभिन्न रेटिंग एजेंसियों का वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अलग-अलग अनुमान है। जहां एशियन डेवलपमेंट बैंक के अनुसार यह चार प्रतिशत तक जा सकता है, वहीं एसीपी ग्लोबल रेटिंग 3.5 प्रतिशत, चार्टर्ड बैंक 2.7 प्रतिशत तक का अनुमान दे रही हैं। ये अनुमान भी इस आधार पर हैं कि अगली तिमाही से कोरोना का असर कम हो जाएगा और अर्थव्यवस्था पटरी पर आने लगेगी। शेयर बाजार की हालत भी पस्त है। शेयरधारकों को लाखों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसमें कब और कितना सुधार होगा इस बारे में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता।

कारखानों के उत्पादन में भारी गिरावट आई है। आवश्यक वस्तुएं बनाने वाले कारखाने जो कुल विनिर्माण का करीब एक-तिहाई हिस्सा हैं, उसके अलावा कारखानों में या तो पूरा लॉकडाउन है या आंशिक रूप से उत्पादन हो रहा है। ऑटो उद्योग रोजगार का बड़ा साधन है, वह पूरी तरह से ठप है। यातायात सेवाएं बंद हैं। रेलें केवल आवश्यक वस्तुएं ढो रही हैं। घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बंद हैं। मेट्रो स्टेशनों पर ताला लगा है, कुछ सरकारी बसों को छोड़कर बस सेवाएं बंद हैं। होटल, रेस्टोरेंट और टूरिज्म से संबंधित सारे उद्योग एवं सेवाएं बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं। खाने-पीने और दवा की दुकानों को छोड़कर खुदरा व्यापार नहीं के बराबर रह गया है जिससे करोड़ों परिवारों की रोजी-रोटी चलती है। खेतों में फसल तैयार है, किंतु किसान उसे अपने घरों तक नहीं ला पा रहे हैं। मंडी तक अनाज, सब्जियां, फल आदि लाने के साधनों की कमी है, सरकारी खरीद भी रुकी हुई है। विदेश व्यापार में गिरावट आई है, क्योंकि लॉकडाउन तकरीबन विश्वव्यापी है, आवश्यक वस्तुओं को छोड़कर बाकी चीजों के ऑर्डर नहीं आ रहे हैं। हालांकि इसके कारण व्यापार घाटे में कमी आई है। विश्व बाजार में कच्चे तेल की कीमत में भारी गिरावट आई है जिससे विदेशी मुद्रा की बचत अवश्य हो रही है, तेल का भंडार बढ़ाने का भी अच्छा अवसर आया है।

सरकारी राजस्व के अधिकांश स्रोत घटे हैं, जबकि खर्चों में व्यापक वृद्धि हुई है। मार्च महीने में जीएसटी वसूली 97,597 करोड़ रुपये हुई जो लक्ष्य से 27,403 करोड़ रुपये कम है। आयकर, कस्टम, टोल टैक्स और सभी राजस्व के स्रोतों से वसूली में कमी आएगी। कोरोना के कारण अर्थव्यवस्था और लोगों के स्वास्थ्य एवं जीवन पर जो भारी संकट आया है उससे निपटने के लिए सरकार ने एक लाख सत्तर हजार करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की है। इसके अंतर्गत विभिन्न मदों में खर्च किए जाने का प्रावधान है। इसके अलावा अन्य अनेक प्रावधान किए गए हैं जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं-गरीबों के लिए पांच किलो गेहूं या चावल और एक किलो दाल प्रति व्यक्ति तीन माह के लिए, जन-धन खाता धारकों के लिए 500 रुपये प्रति माह प्रति खाता तीन माह के लिए, मनरेगा के श्रमिकों को 182 की जगह 202 प्रति दिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से, गरीब वरिष्ठ नागरिकों, विधवाओं एवं दिव्यांगों को एक हजार रुपये का अनुदान, प्रधानमंत्री किसान योजना में अप्रैल में मिलने वाले दो हजार रुपये प्रति किसान की किश्त का अग्रिम भुगतान। इसके अलावा लघु, छोटे एवं मध्यम क्षेत्र के उद्यमियों को कारोबार के लिए कर्ज के ब्याज दर में तीन प्रतिशत तक की कमी एवं इन उद्योगों की परिभाषा में बदलाव किया जा रहा है, ताकि अधिक संख्या में ये उद्योग लाभान्वित हो सकें। करों की अदायगी एवं दिवालिया नियमों में कुछ ढील दी गई है। लॉकडाउन के कारण नकदी की कमी न हो और उद्योगों तथा व्यक्तिगत कर्ज बैंक कम दर पर मुहैया करा सकें इसके लिए रिजर्व बैंक ने रेपो रेट में 90 बेसिक प्वाइंट की कटौती की है जो पिछले कुछ वर्षों की सबसे बड़ी कटौती है। सभी कर्जों की अदायगी पर तीन महीने का समय बढ़ा दिया गया है। रिजर्व बैंक के ये कदम वित्तीय व्यवस्था में 1.37 लाख करोड़ रुपये तक की बढ़ोतरी में सहायक होंगे।

कोरोना ने आज स्वास्थ्य क्षेत्र को सरकार की पहली प्राथमिकता बना दी है। इस क्षेत्र की मूलभूत सुविधाएं बढ़ाने के लिए 15,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस धन का उपयोग अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड एवं आइसीयू बढ़ाने, वेंटिलेटर और डॉक्टरों के लिए पीपीई यानी पर्सनल प्रोटेक्शन इक्विपमेंट के निर्माण समेत हेल्थ वर्कर्स के प्रशिक्षण हेतु किया जाएगा। निजी क्षेत्र की कंपनियों को वेंटिलेटर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। चालीस हजार वेंटिलेटर बनाने के ऑर्डर भी दिए जा चुके हैं। यह सब बताता है कि सरकार अब स्वास्थ्य क्षेत्र को गंभीरता से ले रही है।

अंत्योदय के विचार से कोरोना से जंग

श्रीनिवास
राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

दीनदयाल जी के एकात्म मानव दर्शन की प्राणधुरी अंत्योदय का विचार है। अंत्योदय का सरल अर्थ है समाज के अंतिम पायदान पर खड़े सर्व साधारण जन के कल्याण को उद्देश्य मानकर चलना। वर्तमान भारत सरकार अंत्योदय के विचार को अपना ध्येय मानती है। कुछ लोग विचारधारा की अहमियत को नहीं मानते हैं। उनके अनुसार विचारधारा सिर्फ आस्था या दिखावे का विषय होती है, परंतु वास्तविकता यह है कि विचारधारा एक महत्वपूर्ण प्रेरणा होती है जो व्यक्ति या सरकार के कर्म की दिशा और गति का निर्धारण भी करती है। जिस प्रकार से दीनदयाल जी के विचारों और सनातन परंपरा से स्वयं को प्रेरित बताने वाली सरकार के मुखिया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंत्योदय के विचार को जन-लाभकारी नीतियों के रूप में परिवर्तित किया है वह आज विचारधारा की विरासत निभाने का चमकता हुआ उदाहरण है। आज यही नीतियां और योजनाएं कोरोना के विरुद्ध चल रही हमारी जंग में सहायक सिद्ध हो रही हैं। कोरोना भारत के सामने एक भयावह चुनौती बन कर आया जिससे निपटने के लिए सरकार ने कुछ ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं।

कोरोना को हराने के लिए सरकार के उद्देश्यपूर्ण निर्णयों में हमें लोकहित के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दिखाई देती है। समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक शासन की नीतियों का लाभ पहुंचे इसके लिए वर्तमान सरकार ने काफी पहले से तैयारी की थी। जैसे जन-धन बैंक खातों, आधार और मोबाइल से सभी गरीब लाभार्थियों को सीधे मुख्यधारा में जोड़ देने के प्रयास कोरोना संकट से पांच-छह वर्ष पूर्व शुरू हुए थे। यदि वे प्रयास सफलतापूर्वक न किए गए होते तो कोरोना की तमाम नृशंसताओं के बावजूद कोई शासन लॉकडाउन नहीं कर पाता। आज यदि सभी लाभार्थियों के पास जन-धन खाते न होते तो उन्हें शीघ्र भुगतान कभी प्राप्त नहीं हो पाता। और यदि सभी खाते आधार से नहीं जुड़े होते तो अनेक भ्रष्ट, अपात्र और बिचौलिए गरीबों का हक डकार जाते।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में बेहद दूरदर्शिता के साथ नीति-निर्माण और उसके क्रियान्वयन का कार्य हुआ है। पूर्व में बनी योजनाएं अंत्योदय के विचार का ही प्रतिफल हैं जिसमें समाज के अंतिम व्यक्ति के लिए करुणामय चिंतन है और उसका कष्ट दूर करने के लिए सार्थक उपाय हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने दीनदयाल जी की सोच को अपने योजनाबद्ध संकल्प से धरातल पर उतारा है। प्रधानमंत्री ने जब 15 अगस्त, 2014 को लाल किले से देश में घर-घर शौचालय बनवाने की बात की थी तो समाज की जमीनी सच्चाई से कट चुके वामपंथी रुझान वाले तथाकथित बुद्धिजीवियों ने उनकी हंसी उड़ाई थी। प्रधानमंत्री ने उसी वर्ष स्वच्छता के पुजारी महात्मा गांधी की जयंती दो अक्टूबर को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। आज कोरोना से बचाव के लिए साफ-सफाई को आवश्यक बताया जा रहा है तो सरकार द्वारा गरीबों के घर में बनवाए गए शौचालय अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

जैसे किसी भवन का निर्माण करने के लिए पहले नींव डाली जाती है और उसके बाद एक के ऊपर एक ईंट रख कर ढांचा बनाया जाता है, उसी प्रकार से भारत सरकार ने भी पिछले कुछ वर्षों में क्रमिक ढंग से कई महत्वपूर्ण योजनाएं बनाई हैं और उन्हें सही तरह से क्रियान्वित भी किया है। जाहिर है आज कोरोना महामारी के रूप में आए संकट के समय पहले से मौजूद इस ढांचे का प्रयोग करके ही आवश्यक व्यवस्थाएं की जा सकी हैं। भारत सरकार की अंत्योदय के प्रति प्रतिबद्धता ने पूरे देश को आवश्यक संबल प्रदान किया है जिसके कारण कोरोना के खिलाफ हम सावधानीपूर्वक लड़ रहे हैं।

खरी-खरी

संचारबंदी में शब्दों की प्रयोगशाला

शशांक दुबे

आजकल जबसे दिन में दो बार रामायण और एक बार महाभारत देखने का सिलसिला शुरू हुआ है, तबसे पूरा घर संस्कृतनिष्ठ शब्दों की प्रयोगशाला बन गया है। अब ओ बई की जगह हे माते और बाबूजी के लिए पिताश्री जैसे शब्द ही निकलते हैं। पत्नी पहले दिन से मुझे आर्यपुत्र बुला रही है। कोरोना के लिए पूर्व देश प्रदत्त संसर्गज विषाणु, मास्क के लिए मुखावरण पट्टिका और सैनिटाइजर के लिए स्वच्छक द्रव जैसे नए-नकोर शब्द अपने आप निकलने लगे हैं। हालत यह है कि सुबह उठते ही ब्रश के लिए सफाई कुंड (वॉश बेसिन) पहुंचने पर टूथपेस्ट के लिए दंत प्रलेप, टूथ ब्रश के लिए दंत स्वच्छ-डंडिका, मोइश्चराइजर के लिए आर्द्रता अवशोषक जैसे शब्द प्रस्फुटित हो रहे हैं। शेविंग क्रीम के लिए कोई शब्द इसलिए नहीं सूझ रहा, क्योंकि रामायण, महाभारत काल में कोई दाढ़ी बनाताइच नहीं था।

दूसरी ओर भार्या (पत्नी) भी प्रसाधन मेज (ड्रेसिंग टेबल) पर पहुंचते ही पावडर के लिए अंग राग, नेल पॉलिश के लिए नख रंजिका, लिपस्टिक के लिए अधर वृत्तिका और स्किन लोशन के लिए चर्म मल्हम जैसे शब्द इस्तेमाल कर रही हैं। अब तो आलम यह है कि घर भर की सारी आचार संहिता (कोड ऑफ कंडक्ट) इसी संस्कृतनिष्ठ हिंदी में लिखी जा रही है। इन दिनों गुरुकुल की छुट्टियां चल रही हैं, इसलिए सारे बटुक जब अपने सहनिवास (कॉलोनी) के दूसरे बटुकों के संग अंतःद्वार क्रीड़ा (इनडोर गेम्स) खेलने जाते हैं तो माताश्री उनकी भोजन मंजूषा (लंच बॉक्स) में श्वेत नर्म रोटियों (ब्रेड) के साथ टमाटर का सालन रख देती हैं। हालांकि वे बड़े स्वाद-लोलुप (चटोरे) हैं। सखा के घर गोटी पटल (कैरम बोर्ड) खेलते-खेलते मिष्ठ-भोंगली (क्रीम रोल) उदरस्थ कर लिया करते हैं। बिटिया की अंतःद्वार क्रीड़ा में रुचि न होने से उसे अपने कक्ष में विश्राम करने की अनुमति दी गई है, लेकिन इस निर्देश के साथ कि स्थिर वैद्युतिक संयंत्रों से दूर रहे।

जहां तक मधुमेह (डायबिटीज) से पीड़ित माताजी का प्रश्न है, उन्हें दंडवत प्रणाम करते हुए हीम-मलाई (आइसक्रीम) से परहेज का अनुरोध किया है।

ट्वीट-ट्वीट

स्कूल-कॉलेज में 50 प्रतिशत खर्च वेतन मद में होता है और शेष 50 फीसद परिवहन, लैब सामग्री और अन्य सुविधाओं में। चूंकि मार्च के महीने से अधिकांश संस्थान बंद हैं तो वेतन को छोड़कर उनका खर्च शून्यप्राय है। आखिर स्कूल इन महीनों के लिए अपनी फीस आधी क्यों नहीं घटा देते?
सृजन पाल सिंह कलाम@srijanpalsingh

फॉक्स न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका में कोविड-19 की जो वैक्सीन विकसित की जा रही है उसे भारत को शुरुआती दौर में ही उपलब्ध कराया जाएगा, क्योंकि पीएम मोदी ने क्लोरोक्विन को लेकर उनका अनुरोध माना। यही वजह है कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में एकजुटता कितनी जरूरी है। आपको पता नहीं कि मदद करते-करते कब आपको मदद की जरूरत पड़ जाए।
राहुल कंवल@rahulkanwal

उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में लॉकडाउन को आगे बढ़ाने के संकेत सही दिशा में हैं। हम कोई जोखिम नहीं ले सकते। इस मोड़ पर तो बिल्कुल भी नहीं, अन्यथा यह बहुत बड़ी तबाही मचाएगा।
अभिषेक सिंघवी@DrAMSinghvi

कोरोना से लड़ाई को भाजपा शासित और कांग्रेस शासित प्रदेश के नजरिये से देखने का दृष्टिकोण क्षुद्र है। यह लड़ाई हम सब मिलकर लड़ रहे हैं। सेलेक्टिव न बनें। प्रजातंत्र को लज्जित न करें।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या देशव्यापी लॉकडाउन की अवधि बढ़ाई जानी चाहिए?

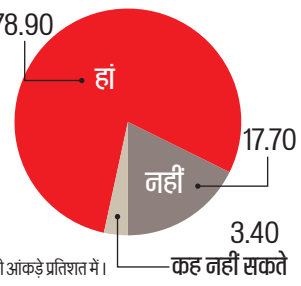

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या सांसद निधि को दो साल के लिए स्थगित करने के सरकार के फैसले पर विपक्ष की आपत्ति उचित है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

हनुमत की संजीवनी है यह क्लोरोक्वीन,
जिसकी स्तुति में हुई दुनिया सारी लीन।
दुनिया सारी लीन किंतु सेक्युलर जमाती,
पीटा करते बैठ बेवजह अपनी छाती।
दुनिया पूरब जाय मगर पश्चिम इनका मत,
होगा नहीं सुधार भले खुद आएं हनुमत।
– ओमप्रकाश तिवारी

नवनीत शर्मा
राज्य संपादक, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश डायरी

तब्लीगियों में कोरोना, सबका रोना

कोरोना के साथ जारी जंग में कुछ दिनों पहले जब निजामुद्दीन में तब्लीगियों के जलसे की बात आई, कुछ सूचियां सामने आईं। दिल्ली में रह रहे एक तब्लीगी के साथ फोन पर बात हुई तो उसने कहा, हम तो ठीक हैं, बाकी सब तो सिर्फ खबरों का ही है। यहां तो कुछ नहीं है ऐसा। यह व्यक्ति हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले का था जहां से जुड़े कई तब्लीगी पॉजिटिव पाए गए। औसत से भी कम शिक्षा प्राप्त वह व्यक्ति यह नहीं समझ पा रहा था कि यह उस व्यक्ति का किया धरा है जो दावे कर रहा था कि जब तक आप मस्जिद में हैं कोरोना कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

समूचा देश कोरोना के खिलाफ युद्धरत है। लेकिन कोरोना के साथ जंग लड़ना एक बात है, कोरोना से पहले जो वर्गीय और वैचारिक संक्रमण है, देश उसके साथ भी जंग लड़ रहा है। अब यह जाहिलपना है, नालायकी है, सनक है या कुछ और, लेकिन सच यह है कि इन सबने देश को कमजोर किया। हिमाचल प्रदेश इस पीड़ा को इसलिए समझ रहा है, क्योंकि इस समय तक 20 पॉजिटिव मामले हैं जो सब तब्लीगी जमात से जुड़े हैं। दुनिया देख रही है कि कैसे एक वर्ग संक्रमण का संवाहक बन कर अपनी और दूसरों की जान खतरे में डाल रहा है। वह भी एक ऐसे आदमी के लिए जिसके पास ऐश-ओ-आराम के तमाम साधन हैं, जो तब्लीग में आने वालों से तो तन-मन-धन की अपेक्षा करता है, स्वयं सबको मौत के मुंह में धकेल कर गायब हो गया है। यह इरादतन है या नहीं, जांच का विषय है, लेकिन इतना जाहिर है कि इसके पीछे जो भी है, अच्छा नहीं है।

तब्लीग से लौटने का तथ्य छुपाना, आते-आते सबको पेठे या अन्य चीजों का प्रसाद बांटना, देश भर में डॉक्टरों पर थूकना, नर्सों के साथ अभद्र व्यवहार

करना और पुलिस के साथ देश के कई हिस्सों में मारपीट ऐसे तथ्य हैं जो कुछ बताते हैं। ये लोग तो कम पढ़े लिखे हैं, मदरसे की रेखा से बंधे हुए हैं, उनकी भूमिका भी इतिहास में दर्ज होगी जो इन्हें समझाना तो दूर, इनका पक्ष लेते रहे। एक खास वर्ग के कुछ पत्रकार, शायर, चिंतक सब सहानुभूति के स्वर लेकर इसे हिंदू-मुस्लिम का रंग देने में जुट गए। याद उन्हें भी रखा जाएगा जो इस बहस से ऊपर उठ कर इनकी हरकतों का विरोध करते रहे। इतिहास इन शर्मनाक अध्यायों को छुपा नहीं पाएगा जिनमें थूक से लिथड़ी घृणा, पुलिस और प्रशासन की तरफ उठते डंडों की नफरत और प्रसाद के नाम पर बांटा गया मवाद शामिल रहेगा।

भला हो हिमाचल प्रदेश सरकार का जिसने एक समय सीमा दी कि अगर तब्लीगी सामने नहीं आए, किसी पॉजिटिव ने थूका तो हत्या का मामला चलेगा। दूसरे दिन 52 लोग सामने आए। दरअसल गिरोह कुमार्ग पर चलता है, लेकिन सजा व्यक्तियों को मिलती है। सूचना आई कि ऊना में नेगेटिव आए एक तब्लीगी ने-मैं किसी का दुश्मन नहीं, ऐसा लिख कर आत्महत्या कर ली। यह भी उतना ही दुखद है। असली विमर्श यही है कि रोगी केवल रोगी होता है, वह और कुछ नहीं होता। उसे इलाज की जरूरत होती है। लेकिन जो संक्रमित होकर भी उपचार न चाहे, एजेंसियों को भ्रमित करे, उसका क्या कर सकते हैं? कोरोना के खिलाफ जंग में एक और वर्ग है जिसका काम सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाना है। हिमाचल प्रदेश की एक कोरोना विजेता अस्पताल से घर पहुंची। वह शारीरिक रूप से तो स्वस्थ हैं, लेकिन उनकी शिकायत है कि उन्हें और उनके परिवार को इस तरह ट्रोल किया गया कि वह जिंदगी भर नहीं भूल सकतीं। ये अफवाहबाज न केवल बेहद जरूरी काम कर रहे प्रशासन को गैर जरूरी काम में लगने पर विवश करते हैं, बल्कि समाज में भय भी फैलाते हैं।

इधर विधायक निधि दो साल के लिए बंद हो गई है, मंत्रियों और विधायकों का तीस फीसद वेतन एक साल के लिए कम हो गया है। कोरोना के बीच बजट को पारित करने के लिए जिस दिन सब इकट्ठे हुए थे, उस दिन कोरोना के लिए कोई बजट नहीं था। उसी दिन पहल हो जाती तो और बेहतर होता। वह पहल कही जाती, अब इसे केंद्र के मॉडल को अपनाया जाना कहा जाएगा। बहरहाल फिर भी यह उचित कदम है। ऐसे में कुल्लू के डोभी की उमा महंत एक नायिका बन कर उभरती हैं जिन्होंने किरायेदारों का किराया माफ कर दिया। ऐसे में कोई एसडीएम धर्मेश रमोत्रा नायक बन उभरता है जिसने अपने कार्यालय में चौबीस घंटे का हेल्पलाइन कॉल सेंटर स्थापित किया है। कोई डीएसपी बलदेव दत्त जब हारमोनियम पकड़ कर सुरीला संदेश देता है कि घर में रहो, शारीरिक दूरी बनाए रखो तो आशा जगती है।

मंथन

कोरोना के सामाजिक प्रभाव

जो लोग रुकते नहीं थे, खुद के साथ रहते नहीं थे, कोरोना जनित समस्याओं ने उन सबको ठहर कर खुद के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर दिया है

साधना कुमारी शर्मा
मनोविज्ञान की जानकार

युद्ध और वैश्विक महामारियां मानव मन और उसके पूरे भविष्य को गंभीर व दीर्घकालिक रूप से परिवर्तित कर देती हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पुरुषों की कमी ने स्त्रियों के विकास का रास्ता खोला और उसके बाद का विश्व फिर कभी पहले जैसा न हो सका। अमेरिकी गृह युद्ध पर लिखे गए प्रसिद्ध उपन्यास-गोन विद द विंड, की नायिका युद्ध के बाद की परिस्थितियों में बेहद सशक्त बनकर उभरी, जो कि बिना युद्ध की परिस्थितियों के कदाचित संभव नहीं था। उसी तरह वैश्विक महामारियां विश्व को एक नई दिशा में मोड़ती हैं जिसके बाद लाखों-करोड़ों लोगों का जीवन कभी भी पहले के जैसा नहीं हो पाता है।

वर्तमान समय में कोरोना एक वैश्विक महामारी बन चुकी है, और निश्चित तौर पर वह भी मानव मन पर लघुकालिक एवं दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ जाएगी। कुछ लोगों का जीवन तो सदैव के लिए ही बदल जाएगा। कोरोना के प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं। यह प्रभाव सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और सबसे प्रमुख आर्थिक तक विस्तृत हो गए हैं।

कोरोना जनित कारणों ने दुनिया भर के देशों में नागरिक अधिकारों को बेहद सीमित कर दिया है। चीन व कुछ अन्य देशों में जहां नागरिक अधिकार पहले से ही सीमित थे, वहां उन्हें और प्रतिबंधित किया गया, किंतु इसका एक सकारात्मक परिणाम यह सामने आया कि वे कोरोना को नियंत्रित करने की दिशा में कामयाबी के साथ अग्रसर हैं और यह कहना गलत नहीं होगा कि जहां से इस बीमारी की उत्पत्ति हुई थी उस क्षेत्र में यह बीमारी अब तकरीबन नियंत्रण में है। अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता वाले देश जैसे यूरोपीय देश इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, स्पेन और अमेरिका, कनाडा आदि देश इसकी बड़ी कीमत चुका रहे हैं और अब वहां भी कठोरता से नागरिक अधिकार निलंबित किए जा रहे हैं। भारत में भी लॉकडाउन के दो-तीन दिनों बाद तक लगा कि हम इसे नियंत्रण में रखने में सफल होंगे, किंतु देश की राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में देश भर से जुटी हजारों की भीड़ ने भारत में कोरोना की भयावहता में वृद्धि कर दी है। विश्व आर्थिक मंदी की दहलीज पर है और आने वाली भयावह आर्थिक मंदी डिप्रेशन, आत्महत्या, तनाव, चिड़चिड़ापन आदि का बड़ा कारण बनेगी और लोगों का जीवन सदैव के लिए बदल जाएगा। हमारी वर्तमान अर्थव्यवस्था एक सुखद एवं निश्चित भविष्य की उम्मीद पर टिकी है। जैसे ही यह भविष्य की उम्मीद संकट में आती है अर्थव्यवस्था भी संकट में आ जाती है। ऐसा लग रहा है कि एक बड़ा बुलबुला अचानक फूट गया और सब कुछ समाप्त हो गया।

कोरोना ने एक ही दिन में हमें मानव मन के बारे में बहुत कुछ समझाया है। लोग एक ही दिन में अचानक राशन की दुकानों पर उमड़ पड़े, सब कुछ खरीदने की होड़ में मॉल, दुकानें खाली कर दीं और कालाबाजारी को जगह दी। यह दिखाता है कि हम अंदर से कितने असुरक्षित और आत्मकेंद्रित हैं। किसी भी तरह से मैं और मेरा परिवार जिंदा रहे, सुख से रहे, परोपकार के लिए सोशल मीडिया है ही, यही भावना हमारे व्यवहारों में दिखाई दी। यह तय है कि एक सीमा के बाद व्यक्ति परिवार की भी बलि चढ़ा कर स्वयं को बचाएगा। इटली के उदाहरण ने यही सिद्ध किया है। इटली में अस्पतालों में भीड़ हो जाने के बाद जब अस्पतालों ने और मरीजों को लेने से इन्कार कर दिया तो उन मरीजों को अपने परिवारों में भी रहने को जगह नहीं दी गई एवं उन्हें सड़कों पर या बाहर कहीं भी मरने के लिए छोड़ दिया गया। कोरोना लोगों को नजदीक भी लाया है। इसने जीवन की अनिश्चितता को एक ही बार में समझा दिया है। सारी योजनाएं स्थगित हो गई हैं और अचानक से समझ में आ गया है कि क्या-क्या जरूरी है और क्या-क्या गैर जरूरी है। अखबार में खबरें थीं कि जो पड़ोसी कई वर्षों से

आपस में बात नहीं कर रहे थे वे कोरोना की वजह से एक-दूसरे के नजदीक आ गए हैं और आपस में सहयोग कर रहे हैं। एक लड़की ने प्रेम विवाह किया था। तीन साल बाद उसके पिता ने उसे फोन किया, हालचाल जाना और लॉकडाउन के बाद घर आने का आमंत्रण दिया। इस बीच एक बड़ी समस्या यह सामने आई है कि पिछले करीब दो सप्ताह से भी अधिक समय से 24 घंटे घर के भीतर ही रहने से कई परिवार के सदस्यों में तनाव और चिड़चिड़ापन बढ़ गया है। निरंतर बढ़ता हुआ यह तनाव कई घरों में गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। कई लोगों के प्रेम संबंध प्रभावित होंगे तो कुछ लोगों के नए प्रेम संबंध भी बनेंगे। इस तरह कोरोना हमारी सामाजिक व्यवस्था को भी बदल रहा है।

बहुत सारे लोगों का व्यक्तित्व इसके बाद हमेशा के लिए बदल जाएगा, क्योंकि कोरोना ने अचानक सबकी दौड़ को रोक दिया है और सब कुछ ठहर सा गया है। कहते हैं कि हमने बेहतर जीवन व्यतीत किया या नहीं यह जानने का सबसे बेहतर तरीका है कि हम यह सोचें कि यदि हम आज मरने वाले हैं तो हमें अफसोस होगा अथवा नहीं। यदि हम मरने के बारे में घबराकर सोचते हैं एवं अफसोस के साथ सोचते हैं तो यह तय है कि हमने बेहतर जीवन नहीं व्यतीत किया।

वैश्विक व्यापार में बड़ी गिरावट की आशंका

जिनेवा, एएफपी : विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने बुधवार को कहा कि कोरोना महामारी की वजह से वैश्विक व्यापार में 2020 में एक तिहाई तक की गिरावट आने की आशंका है। संगठन ने कहा कि आंकड़े भयावह होंगे। डब्ल्यूटीओ के मुताबिक, 'वैश्विक व्यापार में 2020 में 13 से 32 प्रतिशत तक की गिरावट आने की आशंका है। इसका कारण कोरोना वायरस महामारी के कारण सामान्य आर्थिक गतिविधियां तथा जीवन बुरी तरीके से प्रभावित होना है।'

हम एक अप्रत्याशित स्थिति में फंसे हैं, जिसने पूरी दुनिया को गिरफ्त में ले लिया है। हमें अर्थव्यवस्था एवं सभी सेक्टर को उबारने के लिए कदम उठाना होगा। जल्द ही रियल एस्टेट के लिए विशेष गाइडलाइंस और रेगुलेटरी कदमों की घोषणा होगी।

— दुर्गा शंकर मिश्रा, आवास एवं शहरी मामले सचिव

एक लाख कारोबारी और 14 लाख करदाताओं को मिलेगी राहत

बड़ा कदम ▸ जीएसटी व आयकर रिफंड तत्काल जारी करने का फैसला

पांच लाख रुपये तक के सभी रिफंड जारी करने का निर्देश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना संकट में फंसी अर्थव्यवस्था में नकदी के प्रवाह को बढ़ाने के लिए सरकार ने तत्काल प्रभाव से आयकर व जीएसटी रिफंड जारी करने का फैसला किया है। फैसले के मुताबिक व्यावसायिक, उद्यमी और व्यक्तियों को तत्काल राहत प्रदान करने के उद्देश्य से पांच लाख रुपये तक के सभी लंबित आयकर रिफंड तत्काल जारी करने का निर्णय लिया गया है। इससे लगभग 14 लाख करदाता लाभान्वित होंगे।

सभी लंबित जीएसटी और कस्टम रिफंड भी जारी करने का निर्णय लिया गया है जिससे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) सहित लगभग एक लाख व्यावसायिक उद्यमी लाभान्वित होंगे। इस प्रकार स्वीकृत कुल रिफंड लगभग 18,000 करोड़ रुपये का होगा।

वित्त मंत्रालय ने एक और बड़ा फैसला लेते हुए राज्यों को कोरोना वायरस से लड़ने के लिए 3.20 लाख करोड़ रुपये बाजार से उठाने की अनुमति भी दे दी। राज्य इस साल अप्रैल से दिसंबर के बीच यह राशि बाजार से उधार ले सकेंगे। इनमें देश के 28 राज्य शामिल हैं। बाजार से अतिरिक्त उधार लेने के लिए राज्यों को केंद्र सरकार की इजाजत की जरूरत होती है। कोरोना वायरस से लड़ाई में वित्तीय दरकार को देखते हुए यह फैसला किया गया है। इससे राज्यों को मदद मिलेगी।

प्रतीकात्मक

- कोरोना संकट के बीच बाजार में नकदी बढ़ाने में मिलेगी मदद
- राज्यों को बाजार से 3.20 लाख करोड़ जुटाने की भी अनुमति

राज्यों को जीएसटी कंपनसेशन के 14 हजार करोड़ मिले

केंद्र सरकार ने जीएसटी कंपनसेशन के मद में राज्यों को 14,103 करोड़ रुपये की एक और किस्त दे दी है। इस किस्त के साथ ही राज्यों को नवंबर तक का कंपनसेशन मिल चुका है। केंद्र सरकार ने दो किस्तों में अक्टूबर और नवंबर का जीएसटी कंपनसेशन राज्यों को दिया है। इसमें 19,950 करोड़ रुपये की पहली किस्त 17 फरवरी को दी गई थी और 14,103 करोड़ रुपये की राशि मंगलवार को दी गई। केंद्र सरकार ने कंपनसेशन के मद में जल्द ही 34,000 करोड़ रुपये और देने की भी बात कही है। जीएसटी कानून के तहत केंद्र सरकार ने जीएसटी लागू होने के बाद पहले पांच साल तक राज्यों के राजस्व में होने वाले नुकसान की भरपाई की जिम्मेदारी ली है। जुलाई, 2017 से अब तक केंद्र सरकार 2.45 लाख करोड़ रुपये इस मद में राज्यों को दे चुकी है।

छत्तीसगढ़ का जीएसटी कलेक्शन 2093 करोड़ पहुंचा

नईदुनिया, रायपुर : लॉकडाउन के कारण आयकर रिटर्न सहित विभिन्न करों का भुगतान 30 जून तक टाल दिया गया है, ऐसे समय में भी जीएसटी कलेक्शन के मामले में छत्तीसगढ़ की स्थिति अन्य राज्यों से कहीं बेहतर है। छत्तीसगढ़ ने पंजाब, बिहार, उतराखंड, झारखंड जैसे राज्यों से आगे निकलते हुए मार्च में 2093 करोड़ का जीएसटी कलेक्शन किया है। यह कलेक्शन लक्ष्य से महज दो फीसद कम है। छत्तीसगढ़ से केंद्रीय जीएसटी भी 880 करोड़ है। यह अपने लक्ष्य 900 करोड़ पीछे है, लेकिन पिछले साल के कलेक्शन की अपेक्षा 10 फीसद अधिक है। विभागीय अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार मार्च में सर्वाधिक जीएसटी कलेक्शन महाराष्ट्र में 15,002 करोड़, इसके बाद कर्नाटक में 7,144 करोड़ और गुजरात में 6,820 करोड़ रुपये हुआ।

विज्ञापन रोकने के सुझाव पर आइएनएस ने कांग्रेस अध्यक्ष की निंदा की

जेएनएन, नई दिल्ली : इंडियन न्यूजपेपर सोसायटी (आइएनएस) के प्रेसिडेंट शैलेष गुप्त ने सरकार व पीएसयू से मिलने वाले विज्ञापनों पर दो साल के रोक के सुझाव पर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की निंदा की है। उन्होंने इसे फाइनेंशियल सेंसरशिप की संज्ञा देते हुए कहा कि सरकार के खर्च के लिहाज से विज्ञापन की राशि बहुत थोड़ी है, लेकिन समाचार पत्र उद्योग के लिए यह बड़ी रकम है। मीडिया किसी भी जीवंत लोकतंत्र का जरूरी घटक है।

उन्होंने कहा कि अफवाहों और झूठी खबरों के इस दौर में किसी भी देश के कोने-कोने तक समाचार एवं विचार पहुंचाने का प्रिंट सर्वश्रेष्ठ जरिया है। यह सरकार एवं विपक्ष दोनों के लिए अहम है। मंदी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ने के कारण पहले से ही विज्ञापन और सर्कुलेशन रेवेन्यू में गिरावट आई है। देशव्यापी लॉकडाउन के कारण समस्या और जटिल हुई है।

उन्होंने कहा कि उद्योग गंभीर वित्तीय संकट का सामना कर रहा है। जब मीडिया के लोग अपना जीवन संकट में डालकर लोगों तक कोरोना वायरस से संबंधित खबरें पहुंचा रहे हैं, ऐसे समय में विज्ञापन दो साल के लिए रोक देने का कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का सुझाव पूरे मीडिया उद्योग को परेशान और हतोत्साहित करने वाला है। आइएनएस ने अपील की है कि स्वतंत्र प्रेस के हित में कांग्रेस अध्यक्ष अपने सुझाव पर पुनर्विचार करें और इसे वापस लें।

बिजनेस संक्षिप्त

कई दशक के निचले स्तर पर पहुंच सकती है विकास दर

मुंबई : कोरोना महामारी के कारण बने हालात में देश की अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लग सकता है। अमेरिकन ब्रोकरेज फर्म गोल्डमैन सैक्श का कहना है कि वित्त वर्ष 2020-21 में विकास दर 1.6 फीसद के निचले स्तर तक जा सकती है। इसमें कहा गया है कि भारतीय नीति निर्माता अभी इस संकट पर पर्याप्त कदम नहीं उठा रहे हैं। अभी और सख्त कदम उठाने की जरूरत होगी। महामारी का संकट सामने आने से पहले भी भारतीय अर्थव्यवस्था गिरावट का सामना कर रही थी। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए विकास दर पांच फीसद रहने का अनुमान जताया गया था। महामारी ने इस स्थिति को और बिगाड़ दिया है। दूसरी ओर कई ग्लोबल एजेंसियों ने जर्मनी की अर्थव्यवस्था में इस तिमाही में 10 फीसद की गिरावट की आशंका जताई है। जर्मनी यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। प्रेट्र

रिलायंस के कुल कर्ज में आ सकती है कमी

नई दिल्ली : ग्लोबल फर्म मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट के मुताबिक एनर्जी और रिटेल सेक्टर में अगले कुछ महीने मांग कम बनी रहने के बावजूद मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज के कुल कर्ज में गिरावट आ सकती है। कोविड-19 का संकट खत्म होने के बाद रिलायंस अपनी प्रतिद्वंद्वी कंपनियों की तुलना में ज्यादा मजबूत होकर निकलेगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि रिलायंस के शेयरों में 21 फीसद की गिरावट आई है, बावजूद इसके पूरे बाजार के हिसाब से कंपनी का प्रदर्शन सात फीसद बेहतर रहा है। मॉर्गन स्टेनली ने कहा कि अगर कोविड-19 का संकट छह महीने तक बना रहा तब भी कंपनी का शुद्ध कर्ज (अन्य देनदारियों समेत) अपने मौजूदा स्तर पर बना रहेगा। प्रेट्र

अगले दो हफ्ते में 5,000 लोगों को भर्ती करेगी ग्रोफर्स

नई दिल्ली : ऑनलाइन ग्रॉसरी प्लेटफॉर्म ग्रोफर्स ने लॉकडाउन के दौरान बढ़ी मांग को देखते हुए 5,000 लोगों की भर्ती की बात कही है। कंपनी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए 100 से ज्यादा सोसायटी में रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन से भी हाथ मिलाया है। कंपनी के सह-संस्थापक एवं सीईओ अलबिंदर ढींढसा ने बताया कि ग्रोफर्स के एप पर रोजाना 15 लाख से ज्यादा लोग ऑर्डर दे रहे हैं। अभी कंपनी आठ में से एक ग्राहक को ही सर्विस देने में सक्षम है। क्षमता बढ़ाने के लिए कंपनी नई नियुक्तियां कर रही है। प्रेट्र

ओयो ने कई कर्मचारियों को छुट्टी पर भेजा

नई दिल्ली : हॉस्पिटेलिटी फर्म ओयो ने अमेरिका समेत कई विदेशी बाजार में अपने कुछ कर्मचारियों को छुट्टी पर भेजना शुरू कर दिया है। महामारी के कारण दुनियाभर में हॉस्पिटेलिटी सेक्टर संकट में चल रहा है। इसी स्थिति से निपटने के लिए कंपनी कुछ कर्मचारियों को छुट्टी पर भेज रही है। हालांकि कंपनी के संस्थापक और ग्रुप सीईओ रितेश अग्रवाल ने कहा कि भारत में किसी भी कर्मचारी को छुट्टी पर नहीं भेजा जाएगा। कंपनी लॉकडाउन के दौरान सुनिश्चित करेगी कि भारत में किसी भी कर्मचारी के रोजगार व वेतन पर दुष्प्रभाव नहीं पड़े। प्रेट्र

अडानी गैस ने सीएनजी, पीएनजी की कीमतें घटाई

नई दिल्ली : अडानी गैस लिमिटेड ने सीएनजी और पीएनजी की कीमतों में कटौती का एलान किया है। हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कई जिलों में वाहनों के लिए सीएनजी आपूर्ति करने वाली कंपनी ने कीमतों में 1.50 रुपये से 3.60 रुपये प्रति किलो तक की कटौती की है। इसी तरह घरों में इस्तेमाल होने वाली पीएनजी की कीमत में एक रुपये प्रति घन मीटर कटौती की गई है। कंपनी ने कच्चे माल की कीमतों में कमी को देखते हुए यह कटौती की है। प्रेट्र

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में एचयूएल ने यूनीसेफ से मिलाया हाथ

मुंबई : एफएमसीजी फर्म हिंदुस्तान यूनीलिवर ने आम जनता को कोविड-19 महामारी के प्रति जागरूक करने के लिए यूनीसेफ से हाथ मिलाया है। इसके तहत एचयूएल की मार्केटिंग विशेषज्ञता तथा यूनीसेफ की तकनीकी जानकारी का इस्तेमाल करते हुए लोगों को जागरूक किया जाएगा, जिससे इस महामारी के दौरान लोग सुरक्षित रहें। हाल में भारत में यूनीसेफ की प्रतिनिधि यास्मिन अली ने कहा था कि महामारी के कारण बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने के लिए कामगार परिवारों को सहायता देने की जरूरत है। उन्होंने विभिन्न कंपनियों से भी इस दिशा में विचार की अपील की है। प्रेट्र

बैंक ऑफ बड़ौदा ने नई लोन स्कीम लांच की

नई दिल्ली : निजी क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा ने अपने मौजूदा लोन ग्राहकों के लिए 'बड़ौदा पर्सनल लोन कोविड-19' लांच किया है। इससे ग्राहकों को मौजूदा दौर में नकदी की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस स्कीम के तहत ग्राहकों को पांच लाख रुपये तक का लोन दिया जाएगा। यह विशेष लोन स्कीम है, जिसमें कंपनी ने ब्याज दर को सामान्य पर्सनल लोन की तुलना में काफी कम रखा है। 30 सितंबर, 2020 तक ग्राहक इस स्कीम का लाभ ले सकते हैं। आइएएनएस

शुरुआती बढ़त गंवाकर गिरावट में बंद हुए शेयर बाजार

मुंबई, प्रेट्र : एक दिन पहले ही रिकॉर्ड तेजी दर्ज करने वाले घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट के साथ बंद हुए। इस दिन शुरुआती कारोबार में उछाल देखने का मिला, लेकिन बाद में मुनाफावसूली के चलते बाजारों ने बढ़त गंवा दी। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 173.25 अंक गिरकर 29,893.96 पर बंद हुआ। दिन में इसने 31,227.97 का ऊंचा स्तर छुआ था। एनएसई का निफ्टी भी 43.45 अंक गंवाकर 8,748.75 पर बंद हुआ।

कारोबारियों ने बताया कि सरकार की ओर से मौजूदा देशव्यापी लॉकडाउन 14 अप्रैल के आगे बढ़ाए जाने के संकेतों से निवेशकों के मन में अनिश्चितता फिर बढ़ गई है। इसके अलावा कोरोना के बढ़ते संकट के कारण दुनियाभर के बाजार भी नरमी में चल रहे हैं। इसका भी असर घरेलू शेयर बाजारों पर पड़ा। 3.91 फीसद की गिरावट के साथ टीसीएस सेंसेक्स की टॉप लूजर कंपनी रही। टाइटन, आइसीआइसीआइ बैंक, एसबीआइ, भारती एयरटेल और आइटीसी के शेयरों में भी गिरावट दर्ज की गई। दूसरी ओर, सन फार्मा, एनटीपीसी, इंडसइंड बैंक और बजाज फाइनेंस के शेयरों में 4.69 फीसद तक की बढ़त देखी गई। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च हेड विनोद नायर ने कहा, 'कोरोना संक्रमण को लेकर बनी हुई अनिश्चितता और यूरोपीय बाजारों की कमजोर शुरुआत के कारण बाजारों ने शुरुआती बढ़त गंवा दी।

सेबी ने एफपीआइ के लिए रजिस्ट्रेशन नियमों में ढील दी : पूंजी बाजार नियामक सेबी ने प्रॉपर्ली रेगुलेटेड फॉरेन पोर्टफोलियो इन्वेस्टर्स (एफपीआइ) कैटेगरी में रजिस्ट्रेशन नियमों में ढील दी है। अभी इस कैटेगरी में उन्हीं देशों के एफपीआइ को लाइसेंस मिलता है, जो फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) के दायरे में आते हैं। अब केंद्र सरकार की मंजूरी से नॉन-एफएटीएफ देशों के फंड भी इस श्रेणी के लाइसेंस प्राप्त कर सकेंगे।

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का लाभ उठाएगा भारत, भरेगा रणनीतिक भंडार

- मंगलुरु, पाडुर और विशाखापतनम में भारत ने बनाए हैं भूमिगत भंडार
- सऊदी अरब, यूएई और इराक से तेल खरीदकर भरा जाएगा भंडार

नई दिल्ली, प्रेट्र : अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का फायदा उठाते हुए भारत अपने भूमिगत भंडार भरने की तैयारी कर रहा है। भारत ने अपनी आपातकालीन जरूरतों के लिए 53.3 लाख टन का भंडार तैयार किया है। कर्नाटक के मंगलुरु और पाडुर तथा आंध्र प्रदेश के विशाखापतनम में बने इन रिजर्व से आपात स्थिति में 9.5 दिन तक तेल की जरूरत को पूरा किया जा सकता है। इन रिजर्व को भरने के लिए भारत ने सऊदी अरब और यूएई से आयात बढ़ाया है।

इस मामले जुड़े सूत्रों का कहना है कि मंगलुरु और पाडुर के रिजर्व आधे खाली हैं, जबकि विशाखापतनम वाले रिजर्व में भी कुछ जगह खाली है। फिलहाल सऊदी अरब, यूएई और इराक से तेल खरीदकर इन्हें भरा जाएगा। कोरोना के कारण उपजी परिस्थितियों में तेल की मांग कम होने और ओपेक व अन्य तेल उत्पादक देशों की ओर से उत्पादन में कटौती नहीं किए जाने से जनवरी से अब तक तेल की कीमतों में 60 फीसद से ज्यादा की गिरावट आ चुकी है। इस समय यह 30 डॉलर प्रति बैरल के आसपास की कीमत पर उपलब्ध है। पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने पिछले दिनों सऊदी और यूएई में अपने समकक्ष नेताओं से बात कर आपूर्ति बढ़ाने पर चर्चा की थी।

भारत ने आपूर्ति या कीमतों में बड़े बदलाव की स्थिति से बचने के लिए सुरक्षा के तौर पर भूमिगत स्टोरेज तैयार किया है। भारत ने विदेशी कंपनियों को इनमें इस शर्त पर तेल रखने की अनुमति दी है कि किसी इमरजेंसी की स्थिति में भारत उस तेल का उपयोग कर सकेगा। इस शर्त के साथ अबु धाबी नेशनल ऑयल कंपनी (एडनॉक) ने मंगलुरु के स्टोरेज में 15 लाख टन की जगह किराए पर ली है। कर्नाटक का पाडुर सबसे बड़ा स्टोरेज है। इसकी कुल क्षमता 25 लाख टन (करीब 1.7 करोड़ बैरल) है। इसमें आधे स्टोरेज को सरकार भर चुकी है। बाकी आधी जगह को भरने के लिए सऊदी अरब से तेल लेने पर विचार हो रहा है। इन तीनों स्टोरेज में जमा तेल सरकार से संबंधित होगा, लेकिन फिलहाल इसके लिए सरकार भुगतान नहीं कर रही है। सरकारी कंपनियों इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम को इस तीन खाड़ी देशों से तेल खरीदने और इन स्टोरेज को भरने के लिए कहा गया है। बाद में सरकार कंपनियों को इस मद में भुगतान कर देगी। अभी वित्त मंत्रालय ने इसके लिए 700 करोड़ रुपये का फंड निर्धारित किया है। मंगलुरु, पाडुर और विशाखापतनम के स्टोरेज को भरने के लिए 1.5 करोड़ बैरल तेल की जरूरत है और इसके लिए कम से कम 2,000 करोड़ रुपये की और आवश्यकता होगी।

ऑनलाइन गेमिंग में महिलाएं आजमा रहीं हाथ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कई ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म करा रहे हैं टूर्नामेंट, कुछ साइटों पर गेम खेलने वालों की संख्या दोगुनी हुई

ऑनलाइन गेम में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की अधिक रुचि होती है, लेकिन कोरोना की वजह से चल रहे लॉकडाउन में महिलाएं भी जमकर ऑनलाइन गेम का लुत्फ ले रही हैं। दिलचस्प बात है कि महिलाएं सुबह 10 बजे से ही गेम खेलना शुरू कर देती हैं और दोपहर तक गेम खेलने में व्यस्त रहती हैं। लॉकडाउन में घरों में बंद लोगों के लिए कई गेमिंग प्लेटफॉर्म तो ऑनलाइन टूर्नामेंट भी आयोजित कर रहे हैं। भारत में ऑनलाइन गेम का बाजार हर साल 40 फीसद की दर से बढ़ रहा है और वर्ष 2025 तक इसका बाजार 14 अरब डॉलर का हो जाएगा।

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के मुताबिक लॉकडाउन के बाद महिलाओं की संख्या में पहले के मुकाबले 50 से 100 फीसद तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। महिलाओं की संख्या इस बात पर निर्भर करती है कि गेम का स्वरूप कैसा है। महिलाएं कैंडी क्रश और कुकिंग कंपिटीशन से जुड़े ऑनलाइन गेम में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रही हैं। क्षेत्रीय भाषा के ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म विनजो की सह संस्थापक सौम्या सिंह राठौर ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान उनके प्लेटफॉर्म पर गेम खेलने का पीक ऑवर बदल गया है। पहले गेम खेलने का पीक ऑवर शाम सात बजे से रात 11 बजे तक होता था, जो अब सुबह 10 से दोपहर दो बजे का हो गया है। अभी पीक ऑवर में गेम खेलने वालों में महिलाओं की संख्या 1.5 गुना बढ़ गई है। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के दौरान गेम खेलने वालों की संख्या में उनके प्लेटफॉर्म पर 30-40 फीसद का इजाफा हुआ है।

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के मुताबिक कई खिलाड़ियों के साथ खेले जाने वाले गेम जैसे कैरम, लूडो व रॉयल बैटल खेलने वालों की संख्या भी पिछले 10 दिनों में दोगुनी हो गई है। लॉकडाउन से पहले ऑनलाइन गेम खेलने वाले 60 फीसद खिलाड़ियों की उम्र 18 से 25 साल के बीच होती थी। अभी 25 से 35 की उम्र वाले भी जमकर ऑनलाइन गेम खेल रहे हैं। ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के मुताबिक छोटे शहरों से भी काफी लोग ऑनलाइन गेम में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। ई-स्पोर्ट्स टूर्नामेंट प्लेटफॉर्म गेमरजी के यहां लॉकडाउन के दौरान दो सप्ताह में 72,000 लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है जबकि आम दिनों में एक माह में 43,000 रजिस्ट्रेशन होते हैं। औद्योगिक संगठनों के मुताबिक पांच-छह ऑनलाइन गेम प्लेटफॉर्म इन दिनों कई प्रकार के टूर्नामेंट करा रहे हैं।

कोरोना के बाद की निर्यात रणनीति बनाने में जुटा भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- महामारी के बढ़ते संकट के बीच चीन के प्रति विभिन्न देशों में बढ़ रहा है रोष
- निर्यातकों को हर तरह की मदद भी दी जाएगी

कोरोना वायरस ने फिलहाल वैश्विक कारोबार का चक्का जरूर जाम कर दिया है लेकिन इस हालात से उबरने के बाद कुछ बड़ी संभावनाओं के द्वार भी भारत के लिए खुल सकते हैं। इन संभावनाओं को देख भारत सरकार और निर्यातक समुदाय के बीच तालमेल बनना भी शुरू हो गया है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने निर्यातकों से कहा है कि वे कोविड-19 के बाद के माहौल के लिए तैयार रहें। उन्होंने निर्यातकों को बड़ा सोचने व तैयार रहने के लिए कहा। इसके लिए निर्यातकों को हर तरह की मदद भी दी जाएगी।

निर्यातकों का कहना है कि महामारी जिस तरह से बढ़ रही है, उसके चलते तमाम देशों में वैश्विक कारोबार को लेकर एक गहन आत्ममंथन भी चल रहा है। कुछ देश मुखर तौर पर तो कुछ अंदर ही अंदर चीन के कारोबार करने के तरीके को लेकर अपनी असहमति जता चुके हैं। दूसरी तरफ भारत की छवि इस संकट की घड़ी में मजबूत हुई है। ऐसे में भारत को चीन के निर्यात बाजार में कुछ हिस्सा मिल सकता है। विश्व निर्यात में चीन की हिस्सेदारी अभी लगभग 13 फीसद है। इसके मुकाबले भारत काफी पीछे है।

चीन 2.4 ट्रिलियन डॉलर का निर्यात करता है जबकि भारत ने पिछले वित्त वर्ष में लगभग 330 अरब डॉलर की वस्तुओं का निर्यात किया था। पिछले पांच साल से भारतीय वस्तुओं का निर्यात 300 से 350 अरब डॉलर के बीच चल रहा है। ऐसे में अगर भारत चीन के निर्यात का दो फीसद भी अपने पक्ष में कर लेता है तो भारत के निर्यात में मजबूत बढ़ोतरी दिखेगी।

फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशंस (फियो) के अध्यक्ष शरद कुमार सराफ कहते हैं, वर्तमान हालात का फायदा भारत को तभी मिलेगा जब सरकार सक्रिय रूप से माइक्रो स्तर पर हमारी सहायता करे। निचले स्तर पर काम करने वालों की हालत काफी खराब है। दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि जो पॉलिसी बनी हुई है, उस पर बिना किसी रुकावट के अमल हो। एक निर्यातक ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि चीन में एक दिन में उद्यमियों को जमीन मिल जाती है और छह महीने में उनकी यूनिट चालू हो जाती है, जबकि भारत में उन्हें यूनिट लगाने के लिए जमीन लेने में दो साल लग जाते हैं।

कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज के पूर्व चेयरमैन संजय जैन ने बताया कि अभी चीन के खिलाफ दुनियाभर में आक्रोश है, जिसका कारोबारी फायदा भारत को हर हाल में मिल सकता है। हमें इस मामले में तेजी दिखानी होगी, नहीं तो सालभर के बाद लोग सब भूल जाएंगे और फिर से चीन से खरीदारी करने लगेंगे।

भारत के सामने एक साल का विंडो खुला है जिसे लेकर हम सबको अति सक्रिय होना पड़ेगा। साथ ही देश में कोरोना पर जल्द से जल्द काबू पाने का काम भी करना होगा। क्योंकि चीन में मैन्यूफैक्चरिंग शुरू हो चुकी है, जबकि हमारे देश में अभी लॉकडाउन चल रहा है। भारत सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निर्यात की रणनीति बनाने में जुट गया है। इसका उसे लाभ अवश्य मिलेगा।

बड़े खरीदारों को किसानों से सीधे खरीद की अनुमति मिले : केंद्र

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार ने राज्यों को बड़े खरीदारों, प्रोसेसर्स और रिटेलर्स को अगले तीन महीने तक किसानों, एफपीओ और सहकारी संस्थाओं से कृषि उत्पाद सीधे खरीदने की अनुमति देने को कहा है। लॉकडाउन के दौरान मंडियों में भीड़ कम करने और आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए केंद्र ने यह निर्देश दिया है।

राज्यों को वेयरहाउसिंग डेवलपमेंट एंड रेगुलेटरी अथॉरिटी के तहत पंजीकृत वेयरहाउस को इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट (ई-नाम) के जरिये ऑनलाइन ट्रेडिंग के लिए डीम्ड मार्केट के तौर पर नोटिफाई करने को भी कहा है। केंद्रीय कृषि सचिव संजय अग्रवाल ने सभी राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेश के मुख्य सचिवों इस संबंध में पत्र लिखा है।

राज्यों से ये दोनों कदम कम से कम अगले तीन महीने के लिए उठाने को कहा गया है। अग्रवाल ने कहा कि फसली सीजन शुरू हो गया है और ऐसे में डायरेक्ट मार्केटिंग की सुविधा देने की तत्काल जरूरत है।

किसानों को लॉकडाउन के प्रभाव से मुक्त रखने की कोशिश

नई दिल्ली, एएनआइ : राज्यों की ओर से देशव्यापी लॉकडाउन को बढ़ाने की मांग के बीच केंद्र सरकार किसानों और कृषि गतिविधियों को इसके प्रभाव से बचाने की कोशिश में जुटी है। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने बुधवार को अधिकारियों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये इस दिशा में उठाए गए कदमों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि कृषि और संबंधित सेक्टर को लॉकडाउन में मिली छूट का पूरा पालन हो। किसान अपने खेत के नजदीक ही फसल बेच सकें, इसके लिए सभी संभव प्रयास किए जाने चाहिए। कृषि उत्पादों को लेकर जाने वाले ट्रकों को भी लॉकडाउन में छूट दी गई है।

फोर्स में समन्वय न होने से शहीद हुए थे 17 जवान, हटाए गए कमांडेंट

नईदुनिया, जगदलपुर

- ब्लर्ब- आंतरिक जांच में हुई पुष्टि, डीआरडी को समय पर मदद नहीं दे पाई थी कोबरा बटालियन

छत्तीसगढ़ में सुकमा जिले के मिनपा इलाके में 21 मार्च को हुई मुठभेड़ में शहीद हुए 17 जवानों की जान बच सकती थी, अगर समय पर सीआरपीएफ की कोबरा बटालियन से मदद मिल गई होती। ऑपरेशन के दौरान फोर्स के बीच तालमेल न रहने की बात मुठभेड़ के बाद जिला पुलिस के अधिकारी पूरे दावे से कहते रहे हैं, लेकिन अब आंतरिक जांच में भी इसकी पुष्टि हो गई है। इस मामले में कोबरा 206 बटालियन के कमांडेंट अजय दिव्यांशु को हटा दिया गया है।

मामले की जांच से पता चला है कि जब डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) के जवान नक्सलियों के एम्बुश में फंसे थे तब कोबरा बटालियन ने उन्हें बैकअप नहीं दिया। समय पर मदद न मिलने से डीआरजी और एसटीएफ के जवान एम्बुश में फंस गए। इस मुठभेड़ में डीआरजी के 12 व एसटीएफ के पांच जवान शहीद हो गए थे, जबकि 14 जवान घायल हुए थे। घायल जवानों में कई अब भी अस्पताल में जिंदगी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सीआरपीएफ ने इस मामले की जांच में पाया है कि जब मुठभेड़ हो रही थी, तब कोबरा बटालियन की महज मूवमेंट डेढ़ किमी की दूरी पर थी।

गोलीबारी के बीच फंसे डीआरजी और एसटीएफ जवानों ने सीधी लड़ाई में नक्सलियों का जमकर मुकाबला किया, मगर उन्हें बाहर से मदद नहीं मिल पाई, जबकि मदद की गुहार भी लगाई गई थी। नक्सली इस हमले के बाद 12 एके 47 और एक यूबीजीएल समेत जवानों के 15 हथियार भी लूट ले गए थे। फोर्स ने भी कई नक्सलियों को मार गिराया था। अपने चार साथियों की मौत की पुष्टि खुद नक्सलियों ने की थी।

कमांडेंड अशोक स्वामी को कमान

अजय दिव्यांशु को सीआरपीएफ स्पेशल डीजी महाराष्ट्र के कार्यालय में अटैच किया गया है। उनकी जगह हरियाणा के सीआरपीएफ के कमांडेंड अशोक स्वामी को कोबरा 206 बटालियन का कमांडेंट नियुक्त किया गया है। गौरतलब है कि इस मुठभेड़ के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय के वरिष्ठ सुरक्षा सलाहकार विजय कुमार सुकमा पहुंचे थे। पुलिस भी मामले की जांच कर रही है।

विधायक भीमा मंडावी हत्या मामले में दो गिरफ्तार

नईदुनिया, जगदलपुर : छत्तीसगढ़ में दंतेवाड़ा के तत्कालीन भाजपा विधायक भीमा मंडावी की नक्सलियों द्वारा विस्फोट कर हत्या किए जाने के मामले में जांच कर रही राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने मंगलवार को दो आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों को बुधवार को जगदलपुर में एनआइए की विशेष अदालत में पेश किया गया। कोर्ट आरोपितों को छह दिन के लिए जांच एजेंसी के हवाले कर दिया है। गौरतलब है कि भीमा की लोकसभा चुनाव के प्रचार के दौरान नक्सलियों ने हत्या कर दी थी।

मौसम विशेष

पंजाब से सटे हुए हरियाणा में कुछ स्थानों पर तेज हवाओं व गरज के साथ वर्षा होगी। दिल्ली और शेष राजस्थान में मौसम शुष्क व गर्म बना रहेगा। जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में अनेक स्थानों पर घने बादलों व गरज के साथ वर्षा व बर्फबारी संभव है। दिन के तापमान में कमी आएगी।

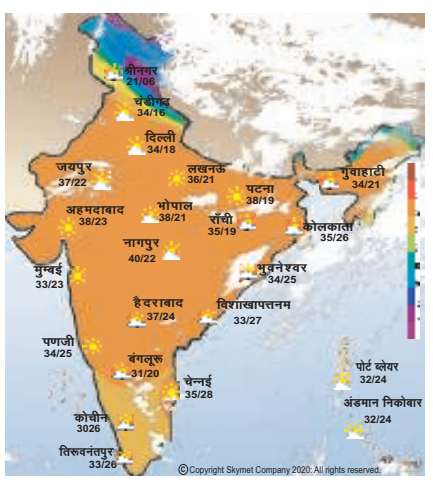

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	32/20/आंबा	अहमदाबाद	39/16/व
कोलकाता	33/23/आंबा	बड़ौदा	38/16/सा
चेन्नई	33/23/आंबा	नागपुर	38/20/व
हैदराबाद	36/22/सा	इन्दौर	34/18/आंबा
बंगलूरू	34/21/आंबा	राँची	31/16/व
त्रिवेन्द्रम	35/25/आंबा	पटना	33/19/आंबा
गुवाहाटी	34/21/आंबा	जमशेदपुर	33/20/व
गंगटोक	16/10/आंबा	पुणे	35/18/व

ट्विटर के सीईओ जैक दोरजी ने राहत कार्यों के लिए दिए 7500 करोड़ रुपये

सैन फ्रांसिस्को, एएफपी : ट्विटर के सह-संस्थापक और सीईओ जैक दोरजी ने कहा कि वह अपने परोपकारी फंड के जरिये कोरोना वायरस संक्रमण से निपटने के लिए अपनी निजी संपत्ति से करीब 7500 करोड़ रुपये (एक अरब डॉलर) दान देंगे। दोरजी ने मंगलवार को कई ट्वीट करके बताया कि वह अपने शेयर अपनी निजी संपत्ति से डिजिटल पेमेंट ग्रुप स्कावयर को ट्रांसफर कर देंगे। यह उनके कॉरपोरेशन स्टार्ट स्माल से संबद्ध होगी। इसमें उनकी कुल संपत्ति का 28 फीसद हिस्सा है।

उन्होंने कहा, 'ऐसा इस समय करने की बहुत जरूरत है और मैं अपने जीवनकाल में इसका असर देखना चाहता हूं।' उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि यह दूसरों को भी कुछ ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। जीवन बहुत छोटा है, इसलिए अब हम लोगों की मदद करने के लिए, जो कर सकते हैं, वो सब कुछ करें।' दोरजी ने कहा कि

- अपनी निजी संपत्ति से डिजिटल पेमेंट ग्रुप स्कावयर को ट्रांसफर करेंगे
- कहा-जीवन बहुत छोटा है, मैं अपने जीवनकाल में इसका असर देखना चाहता हूं

जैक दोरजी। फाइल

जब यह महामारी खत्म हो जाएगी तो वह स्वास्थ्य और लड़कियों की शिक्षा पर तो ध्यान देंगे ही, साथ ही 'वैश्विक मूल आय' के लिए भी प्रयासरत होंगे। दोरजी के पास ट्विटर और स्क्वायर की हिस्सेदारी समेत कुल 3 अरब डॉलर की संपत्ति है।

उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस के लिए किसी एक व्यक्ति की ओर से दिया जाने वाले दान में यह अब तक की सबसे बड़ी धनराशि है। इस अमेरिकी उद्योगपति ने यह धनराशि देने का ऐलान ऐसे समय में किया है, जब अमेरिका समेत पूरा विश्व इस महामारी से जूझ रहा है। खासकर सबसे विकसित देश अमेरिका की इस महामारी ने स्वास्थ्य और आर्थिक क्षेत्र में कमर तोड़ दी है।

ध्यान रहे कि दोरजी ट्विटर और स्कावयर दोनों ही कंपनियों के सीईओ हैं। इसके अलावा उन्होंने फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग की ही तरह स्टार्ट स्माल एलएलसी नाम का एक फाउंडेशन बनाया है। दोरजी इस फंड से स्टार्ट अप को फाइनेंस करते हैं। उन्होंने एक लिंक साझा किया जिसके मुताबिक स्टीव जॉब्स की विधवा लॉरिन पावेल जॉब्स और अभिनेता लियोनार्डो दिकैपरियो ने शुरू किया है। इसका नाम अमेरिकाज फूड फंड है।

मिस इंग्लैंड डॉ. भाषा मुखर्जी ने ब्रिटेन में अब डॉक्टरी पेशा अपनाया

लंदन, प्रेट्र : भारतीय मूल की ब्रिटिश नागरिक मिस इंग्लैंड डॉ.भाषा मुखर्जी कोरोना वायरस से जंग में मैदान में उतर गई हैं। 2019 में ही मिस इंग्लैंड चुनी गईं डॉ. भाषा मुखर्जी ने एक बार फिर आला थाम लिया है। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में वह बॉस्टन स्थित पिलग्रिम अस्पताल से जुड़ गई हैं। उन्होंने बुधवार को यह जानकारी खुद अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के जरिये दी। इस पर जारी वीडियो में वह डॉक्टरों और नर्सों के साथ डॉक्टर का कोट पहने और आला थामे नजर आ रही हैं।

एक चैरिटी अभियान के तहत भारत आईं 24 वर्षीय भाषा मुखर्जी ने संकट के इस समय में ब्रिटेन लौटकर लिंकनशायर के बॉस्टन स्थित पिलग्रिम अस्पताल में बतौर जूनियर डॉक्टर नौकरी शुरू कर दी है। भाषा का बचपन कोलकाता में बीता है। वह अगस्त 2019 में मिस इंग्लैंड चुनी गई थीं और उसके बाद से ही मानवतावादी कार्यों के लिए दुनियाभर में यात्रा कर रही थीं। दिसंबर 2019 में उन्होंने मिस वर्ल्ड के लिए इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया था। लेकिन जब देश संकट के समय से गुजर रहा है तो उन्होंने फिर से अपनी डॉक्टरी पेशे में उतरने का फैसला किया।

ब्रिटिश पीएम जॉनसन की हालत में सुधार

लंदन, एजेंसियां : कोरोना वायरस से संक्रमित ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन की हालत सुधर रही है। हालांकि वह अभी भी आइसीयू में हैं, लेकिन अब वह बिस्तर पर बैठ पा रहे हैं और चिकित्सा कर्मियों से बातचीत कर रहे हैं। ब्रिटेन के वित्त मंत्री ऋषि सुनक ने बुधवार को यह जानकारी दी।

दस दिन बाद भी कोरोना के लक्षण दिखाई देने के बाद प्रधानमंत्री जॉनसन को रविवार को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। लेकिन हालत में सुधार नहीं होने के कारण सोमवार को उन्हें सेंट थॉमस हॉस्पिटल के आइसीयू में भर्ती करना पड़ा था। जॉनसन की जगह प्रधानमंत्री पद का कार्यभार संभाल रहे विदेश मंत्री डोमिनिक राब ने बताया कि प्रधानमंत्री जल्द ही स्वस्थ होकर लौटेंगे। वहीं, प्रधानमंत्री कार्यालय की प्रवक्ता ने कहा कि पीएम की हालत स्थिर है। वह करीबी निगरानी के लिए आइसीयू में रहेंगे। वह बिना किसी सहायता के सांस ले रहे हैं और उन्हें अभी वेंटीलेटर की जरूरत नहीं है। ब्रिटेन के स्वास्थ्य मंत्री एडवर्ड अरगर ने भी यहीं बातें दोहराईं।

एक दिन में 938 मरीजों की मौत : ब्रिटेन में मंगलवार को कोरोना वायरस के 938 मरीजों की मौत हो गई।

भारतीय मूल के ऋषि सुनक के हाथ में आ सकती है ब्रिटिश सरकार की कमान

लंदन, प्रेट्र : भारतीय मूल के ब्रिटिश वित्त मंत्री ऋषि सुनक प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन की गैरमौजूदगी में उनके डिप्टी के रूप में काम करने के लिए विदेश मंत्री डोमिनिक राब के बाद अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। महामारी के चलते अगर राब जॉनसन के डिप्टी के रूप में काम करने में असमर्थ होते हैं तो यह जिम्मेदारी सुनक के कंधों पर आ जाएगी। प्रधानमंत्री कार्यालय डाउनिंग स्ट्रीट ने यह जानकारी दी है।

ब्रिटिश सरकार में ऋषि सुनक का पद चांसलर ऑफ द एक्सचेकर का है, यानी वो वित्त मंत्रालय के चांसलर हैं। चांसलर के रूप में वह आर्थिक मोर्चे पर कोरोना के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं। ब्रिटिश सरकार में वरिष्ठता के स्थापित क्रम में सुनक स्वतः ही प्रधानमंत्री के डिप्टी के रूप में काम करने वालों में अग्रिम पंक्ति में आ जाएंगे। बता दें कि ब्रिटेन का कोई लिखित संविधान नहीं है।

ऋषि सुनक। फाइल

ब्रिटिश सरकार में शीर्ष कमांड की चेन के बारे में पूछे जाने पर डाउनिंग स्ट्रीट में जॉनसन के प्रवक्ता ने कहा, 'वरिष्ठता का एक स्थापित क्रम है। प्रधानमंत्री ने विदेश मंत्री (राब) को अपने पहले राज्य मंत्री के रूप में नियुक्त किया है। वरिष्ठता के क्रम में, चांसलर (सुनक) विदेश मंत्री के बाद आएंगे।' ब्रिटेन में कोरोना वायरस के तेजी से बढ़ते प्रकोप को देखते हुए नेतृत्व को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। प्रधानमंत्री जॉनसन संक्रमित हैं और इस समय अस्पताल के आइसीयू में हैं। उनके कई मंत्री भी कोरोना से संक्रमित पाए गए हैं।

न्यूज गैलरी

अमेरिकी गायक जॉन प्राइन की कोरोना से मौत

लॉस एंजिलिस : अमेरिका के नामी लोक गायक और गीतकार जॉन प्राइन की मंगलवार को कोरोना संक्रमण के कारण मौत हो गई। वह 73 वर्ष के थे। ग्रैमी पुरस्कार से सम्मानित प्राइन की नैसविले के अस्पताल में इलाज के दौरान मौत की पुष्टि उनकी पत्नी ने की। करियर के शुरुआती वर्षों में कभी डाकिये की नौकरी करने वाले प्राइन चिट्ठियां बांटते हुए अपने गीत रचा करते थे। शिकागो में दिन में नौकरी और शाम को संगीत के कार्यक्रमों में शिरकत करने वाले प्राइन ने कुछ समय के लिए सेना में भी नौकरी की थी। बाद में उन्होंने गीत-संगीत को ही अपना जीवन बना लिया। उन्हें 1991 और 2005 में प्रतिष्ठित ग्रैमी पुरस्कार से नवाजा गया था। (रायटर)

दक्षिण कोरिया में विदेशियों के प्रवेश पर और सख्ती

सियोल : दक्षिण कोरिया ने कोरोना के नए मामले रोकने के लिए अपनी सीमाओं पर पाबंदियां और बढ़ा दी हैं। बुधवार को कोरोना महामारी पर हुई बैठक में प्रधानमंत्री चुंग साई-क्युन ने कहा कि बेहद जरूरी नहीं होने पर विदेशी नागरिकों को दक्षिण कोरिया में प्रवेश की अनुमति नहीं मिलेगी। इसके अलावा उन मुल्कों के नागरिकों को भी दक्षिण कोरिया में दाखिले की अनुमति नहीं होगी जहां दक्षिण कोरियाई लोगों को प्रवेश नहीं दिया जा रहा। प्रतिबंधित सूची में वीजा-फ्री सुविधा पाने वाले यात्रियों को भी शामिल किया गया है। संक्रमण रोकने के लिए दक्षिण कोरिया में गत एक अप्रैल से विदेश से आने वाले सभी लोगों को अनिवार्य रूप से दो हफ्ते के लिए क्वारंटाइन में रखा जा रहा है। 5.1 करोड़ की आबादी वाले देश में कोरोना पीड़ितों की संख्या दस हजार से ज्यादा है। अब तक 200 लोगों की मौत हो चुकी है। (एपी)

अंटार्कटिका गए क्रूज के 128 यात्री निकले कोरोना पॉजिटिव

मोटेंवीडियो : अंटार्कटिका की यात्रा पर गए एक ऑस्ट्रेलियाई क्रूज पर सवार 217 यात्रियों में से 128 कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। इनके अलावा क्रूज पर सवार छह अन्य लोगों की खराब हालत को देखते हुए उनका उरुग्वे की राजधानी मोटेंवीडियो में इलाज चल रहा है। सभी की हालत स्थिर बनी हुई है। फिलहाल क्रूज को मोंटेवीडियो के तट पर खड़ा किया गया है। ग्रेग मॉर्टिमर नाम का यह जहाज 15 मार्च को अंटार्कटिका और साउथ जॉर्जिया की यात्रा पर रवाना हुआ था। ऑरोरा एक्सपेडिशन कंपनी के इस क्रूज में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों के यात्री सवार हैं। कोरोना जांच में निगेटिव पाए गए लोगों को अब हवाई रूट से उनके देश पहुंचाया जाएगा। (एपी)

ट्रंप ने दी डब्ल्यूएचओ की फंडिंग रोकने की धमकी

नाराजगी ▶ स्वास्थ्य संगठन पर चीन केंद्रित होने का लगाया आरोप

वैश्विक संस्था को पिछले साल अमेरिका से करीब तीन हजार करोड़ और चीन से तीन सौ करोड़ रुपये मिले

वाशिंगटन, प्रेट्र: कोरोना वायरस से जूझ रहे अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का गुस्सा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) को लेकर सातवें आसमान पर पहुंच गया है। उन्होंने वैश्विक संस्था के फंड को रोकने की धमकी तक दे डाली है। इससे पहले उन्होंने डब्ल्यूएचओ को चीन केंद्रित होने का आरोप लगाते हुए कहा था कि उसने महामारी के बारे में सही समय पर सही जानकारी नहीं दी।

व्हाइट हाउस में नियमित प्रेस कांफ्रेंस में ट्रंप ने कहा, 'हम डब्ल्यूएचओ को दिए जाने वाले धन को रोकने जा रहे हैं। हम देखेंगे कि सख्ती के साथ उस पर रोक लगे। यह काम करता है तो बहुत अच्छी बात है। उनकी हर सलाह गलत हुई, जो सही नहीं है।' इस महामारी के प्रसार को रोकने के लिए डब्ल्यूएचओ की तरफ से जारी किए गए शुरुआती दिशानिर्देशों की भी ट्रंप ने निंदा की।

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

जेनेवा में मुख्यालय वाले डब्ल्यूएचओ को अमेरिका से बहुत बड़ी रकम मिलती है। पिछले साल अमेरिका ने डब्ल्यूएचओ को 40 करोड़ डॉलर (लगभग तीन हजार करोड़ रुपये) दिए थे, जबकि चीन से उसे मात्र चार करोड़ डॉलर (लगभग 280 करोड़ रुपये) मिले थे।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, 'हम उनके पैसे के बहुत या ज्यादातर हिस्से का भुगतान करते हैं। मैंने जब यात्रा पाबंदियां लगाई तो उन्होंने इसकी आलोचना की या उससे असहमति जताई। वे गलत थे। वे बहुत सारी चीजों को लेकर भी गलत थे। शुरू में ही उनके पास बहुत सूचना थी, लेकिन वो देना नहीं चाहते थे, वे बहुत ज्यादा चीन केंद्रित जान पड़ते हैं।'

डोनाल्ड ट्रंप के आरोपों को डब्ल्यूएचओ ने गलत बताया

यूरोप मामलों के लिए डब्ल्यूएचओ के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. हंस क्लूज ने ट्रंप केसंस्था के चीन केंद्रित होने के आरोपों को गलत बताया है। उन्होंने यह भी कहा कि अभी हम महामारी के दौर से गुजर रहे हैं और यह समय फंड रोकने का नहीं है। वहीं, महानिदेशक के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. ब्रूस अलवार्ड ने चीन के साथ वैश्विक संस्था के संबंधों का बचाव करते हुए कहा कि वुहान से शुरू हुए महामारी के बारे में समझने के लिए बीजिंग के साथ काम करना जरूरी था।

इस बीच, अमेरिकी संसद के उच्च सदन के विदेश मामलों संबंधित कमेटी के चेयरमैन सीनेटर जिम रिच ने कोविड-19 से निपटने में डब्ल्यूएचओ की भूमिका की निष्पक्ष जांच की मांग की है। वहीं, सीनेटर मार्को रूबियो ने चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी पर कोरोना को लेकर दुनिया को गलत जानकारी देने के लिए डब्ल्यूएचओ का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है।

युद्धपोत संक्रमण मामले में नौसेना प्रमुख ने दिया इस्तीफा

वाशिंगटन, एजेंसियां : अमेरिका के कार्यवाहक नौसेना प्रमुख थॉमस मोडली ने इस्तीफा दे दिया है। विमानवाहक युद्धपोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट पर कोरोना संक्रमण की स्थिति से निपटने और उसके कप्तान ब्रेट क्रोजियर को हटाने के बाद उठे सवालों के बीच उन्होंने यह कदम उठाया है। अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने मंगलवार को कहा कि सेवानिवृत्त एडमिरल जिम मैकफर्सन कार्यवाहक नौसेना प्रमुख के तौर पर मोडली की जगह लेंगे। चार महीने में नौसेना प्रमुख के पद से इस्तीफा देने वाले मोडली दूसरे व्यक्ति हैं।

क्रोजियर को हटाने के बाद सोमवार को गुआम पहुंचे मोडली ने युद्धपोत के चालक दल के सदस्यों के समक्ष अपने फैसले को सही ठहराने की कोशिश की थी। वहां दिए अपने भाषण में मोडली ने क्रोजियर पर विश्वासघात का आरोप लगाने के साथ ही उन्हें 'भोला और बेवकूफ' बताया था। इसके कुछ घंटे बाद वाशिंगटन लौटते ही थॉमस मोडली ने माफी मांगी थी, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रेट क्रोजियर पर की गई उनके द्वारा कार्रवाई पर सवाल उठाए और मामले में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप की बात कही।

नौसेना प्रमुख थॉमस मोडली के इस्तीफे की सूचना ट्विटर पर देते हुए एस्पर ने कहा, 'इस बारे में राष्ट्रपति ट्रंप को सूचना दे दी गई है। मोडली ने नौसेना और नौसैनिकों को खुद से ज्यादा महत्व देते हुए इस्तीफा दिया है ताकि रूजवेल्ट और नौसेना एक प्रतिष्ठान के तौर पर आगे बढ़ सकें।'

- संक्रमण की शिकायत पर विमानवाहक पोत के कप्तान को हटाने पर उठे थे सवाल
- थॉमस मोडली चार महीने में नौसेना प्रमुख के पद से इस्तीफा देने वाले दूसरे व्यक्ति

इस्तीफा दुर्भाग्यपूर्ण : ट्रंप

मोडली के इस्तीफे को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए ट्रंप ने कहा, नौसेना प्रमुख के इस्तीफे में मेरी कोई भूमिका नहीं है। उन्हें पोत के कमांडर क्रोजियर को पत्र नहीं लिखना चाहिए था। मोडली को भी उन्हें चुप रहने के लिए नहीं कहना चाहिए था। मैंने उनसे बात नहीं की है, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने समस्या को खत्म करने के लिए यह कदम उठाया है।

युद्धपोत के 100 से ज्यादा सदस्य कोरोना संक्रमित

गुआम में पिछले 11 दिनों से खड़े युद्धपोत के कमांडर ब्रेट क्रोजियर ने पोत पर कोरोना संक्रमण के प्रकोप की जानकारी दी थी और पेंटागन (रक्षा विभाग) से इसे खाली करने की अनुमति मांगी थी। क्रोजियर ने मीडिया में लीक हुए पत्र में लिखा था, 'हम फिलहाल कोई युद्ध नहीं लड़ रहे, ऐसे में नौसैनिकों का मरना जरूरी नहीं है।' पोत के 100 से ज्यादा सदस्य संक्रमित पाए गए हैं। मीडिया में यह पत्र लीक होने के बाद मोडली ने कमांडर क्रोजियर को उनके पद से हटा दिया था। इसके लिए मोडली की चौतरफा आलोचना हुई थी और इसे उस सम्मानित अधिकारी को दी गई अनुचित सजा बताया गया था, जो अपने मातहतों की भलाई की बात कर रहा था।

सिंगापुर में कोरोना से भारतीय की मौत

सिंगापुर, एजेंसियां: सिंगापुर में बुधवार को कोरोना से एक 32 वर्षीय भारतीय व्यक्ति की मौत हो गई। वह वर्किंग परमिट पर वहां गया था। वहीं एक अन्य भारतीय के कोरोना पॉजिटिव आने के बाद उसे आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। वह एक अस्पताल में बतौर टेक्नीशियन काम करता है। बता दें कि देश में अभी तक संक्रमण के 1623 मामले सामने आ चुके हैं। बुधवार को भी 142 नए मामले दर्ज किए गए। इनमें से दो को छोड़कर बाकी सभी घरेलू संक्रमण के केस हैं।

जिस व्यक्ति की मौत हुई है, उसने मंगलवार को नेशनल सेंटर फॉर इंफेक्शन डिजीज (एनसीआइडी) में कोरोना का टेस्ट कराया था। यहां के डॉक्टरों ने उसे टेस्ट का परिणाम नहीं आने तक घर पर ही रहने की सलाह दी थी। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक उसके सीने के एक्स-रे से इस बात का पता चलता है कि उसे निमोनिया नहीं था। बुधवार को घर पर ही उसका निधन हो गया। निधन के बाद उसके कोरोना संक्रमित होने की पुष्टि हुई। हालांकि मौत की असली वजह जानने कोशिश की जा रही है। उधर, एक अन्य भारतीय के संक्रमित होने के बाद उसे एनसीआइडी के आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है।

ईयू ने इटली भेजी डॉक्टरों और नर्सों की टीम

ब्रसेल्स, एजेंसियां: यूरोपीय यूनियन (ईयू) ने रोमानिया और नार्वे से डॉक्टरों और नर्सों की टीम को मिलान और बरगामो भेजा है। यह लोग कोरोना वायरस से लड़ने में मदद के लिए इटली के मेडिकल स्टाफ की मदद करेंगे। बता दें कि यूरोप में महामारी से सबसे ज्यादा इटली प्रभावित है। अभी तक यहां 17,127 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि संक्रमित लोगों की संख्या 1,35,586 हो गई है।

ईयू की ओर से मंगलवार को जारी बयान में कहा गया है कि यूरोपीय यूनियन के सिविल प्रोटेक्शन मेकैनिज्म के जरिये इस मेडिकल टीम को तैनात किया गया है। ऑस्ट्रिया ने भी इटली की मदद के लिए मेकैनिज्म के जरिये 3000 लीटर से अधिक डिसइंफैक्टेंट (कीटाणुनाशक) देने का प्रस्ताव दिया है। यूरोपीय कमीशन की अध्यक्ष उर्सुला वोन डेर ने बयान जारी कर कहा, 'इटली में अपने सहकर्मियों की मदद के लिए घर छोड़कर आए नर्स और डॉक्टर यूरोपीय यूनियन की एकजुटता को दर्शाते हैं। ईयू के सदस्य देश इटली और अन्य प्रभावित देशों की मदद के लिए हरसंभव मदद का प्रयास कर रहे हैं।' सार्वजनिक स्थानों और स्वास्थ्य सुविधाओं पर निगरानी रखने के लिए ईयू के कॉपरनिकस सैटेलाइट सिस्टम को भी इटली ने सक्रिय कर दिया है। इससे पहले चीन ने इटली को दो लाख सर्जिकल मास्क, दो लाख एन-95 मास्क और 50000 टेस्टिंग किट दिए है।

- हांगकांग में सोशल डिस्टेंसिंग की मियाद 23 अप्रैल तक बढ़ा दी गई है। यहां पर अभी तक 936 लोग संक्रमित हो चुके हैं जबकि चार लोगों की मौत हुई है
- सिंगापुर में एक दिन में सबसे अधिक 142 संक्रमण के मामले सामने आए हैं। देश में कुल संक्रमित लोगों की संख्या 1,623 हो गई जबकि सात लोगों की मौत हो चुकी है

डॉक्टर और नर्सों की मानसिक स्थिति पर पड़ रहा गंभीर प्रभाव: इटली और स्पेन के अस्पतालों के आइसीयू में मरीजों की संख्या में कमी जरूर आई है, लेकिन यहां काम करने वाले डॉक्टर और नर्सें भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। कहीं-कहीं तो ये लोग स्वयं को क्षति भी पहुंचा रहे हैं। इटली में दो नर्सों द्वारा आत्महत्या करने का मामला तो कुछ दिनों पहले का ही है। मनोवैज्ञानिक चिकित्साकर्मियों को ऑनलाइन मुफ्त परामर्श दे रहे हैं, लेकिन लोंबार्डी क्षेत्र के हेल्थ केयर ट्रेनिंग अकादमी के निदेशक डॉ. एलेसेंड्रो कोलंबो इसके पीछे एड्रेनालाइन हार्मोन में वृद्धि को बड़ी वजह मानते हैं। उनका कहना है कि यह हार्मोन एक महीने तक सामान्य तरह से काम करता है, लेकिन अब दूसरा महीना शुरू हो चुका है, जिसके चलते ये लोग शारीरिक और मानसिक रूप से थक चुके हैं। उनके प्रारंभिक शोध के अनुसार मरीजों की दशा का डॉक्टरों और नर्सों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। बरगामो के एक अस्पताल में नर्स फेरारी ने कहा, 'जब आप मरीज के लिए सब कुछ करते हैं और वह नहीं बचता है तो इसका गंभीर असर पड़ता है।' फेरारी की सहयोगी मारिया बर्डार्डेली ने कहा कि चिकित्साकर्मियों को मरीजों को मरते देखने की आदत नहीं है। जब ऐसा कई बार होता है तो उसका बहुत ही मनोवैज्ञानिक असर होता है। यह वायरस बहुत-बहुत मजबूत है। बता दें चिंता संबंधी विकारों और पोस्ट-ट्रॉमेटिक विकार वाले लोगों को एड्रेनालाइन की वृद्धि का अनुभव होता है जब उन्हें किसी ऐसी चीज की याद दिलाई जाती है, जो पिछले दिनों घटित हुई हो और जो उनकी भय की भावना को उकसाती हो। जब ऐसा प्रतिदिन कई बार या प्रति सप्ताह कई बार होता है तो यह हमारे शरीर और दिमाग पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

स्पेन में 757 और लोगों की मौत : स्पेन में पिछले चौबीस घंटे में 757 लोगों की मौत हुई है। इस तरह देश में मृतकों की संख्या 14,555 हो गई है। एक दिन पहले 743 लोगों की मौत हुई थी। संक्रमित लोगों का आंकड़ा 140,510 से बढ़कर 146,690 हो गया है। स्पेन में महामारी की स्थिति को इससे समझा जा सकता है कि लोगों को अपने प्रियजनों के अंतिम संस्कार के लिए एक सप्ताह तक इंतजार करना पड़ रहा है। कब्रिस्तान के एक पादरी के मुताबिक बुरे दिनों में 10-15 शव आते थे, लेकिन अब इनकी संख्या 40 के लगभग हो गई है। उधर, इंडस्ट्री से जुड़े सूत्रों के मुताबिक अगर देश में लॉकडाउन मई से आगे बढ़ता है तो इससे अर्थव्यवस्था ना केवल बुरी तरह प्रभावित होगी, बल्कि लगभग आठ लाख लोग बेरोजगार होंगे।

ईरान में मृतकों की संख्या चार हजार के लगभग हुई : ईरान में पिछले चौबीस घंटे में 121 और मौतें हुई हैं। इस तरह वहां मरने वालों की संख्या बढ़कर 3,993 हो गई है। पिछले चौबीस घंटे में संक्रमण के 1,997 नए मामले सामने आए हैं। देश में संक्रमित लोगों की संख्या 64,586 हो गई है। 3,956 लोगों की हालत चिंताजनक जबकि 29,812 लोगों को अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है। ईरान में अभी तक 220,975 लोगों का टेस्ट किया जा चुका है।

टोक्यो में संक्रमण के 144 मामले : टोक्यो में एक दिन में 144 संक्रमण के मामले सामने आए हैं। इस तरह जापान की राजधानी में संक्रमण के कुल मामले 1,339 हो गए हैं जबकि पूरे देश में इसकी संख्या 4600 है। 98 लोगों की मौत भी हुई है।

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	17,127	135,586
स्पेन	14,555	146,690
अमेरिका	12,857	400549
फ्रांस	10,328	109,069
ब्रिटेन	6159	55,242
ईरान	3,993	64,586
चीन	3,333	81,802

प्रतिबंध हटाने का अमेरिका से आग्रह करेगा कनाडा : कनाडा कोरोना से लड़ने के लिए चिकित्सा आपूर्ति के निर्यात को अवरुद्ध नहीं करने का अमेरिका से आग्रह करेगा। राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो ने एक प्रेसवार्ता में कहा कि 3एम कंपनी की तरफ से पांच लाख एन95 मास्क बुधवार को पहुंचने की उम्मीद है। बता दें कि अभी तक कनाडा में 345 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 17,063 लोग संक्रमित हैं।

मृतकों की संख्या 82,726 हुई : कोरोना से दुनिया में मरने वालों की संख्या बुधवार को 82,726 हो गई है जबकि 193 देशों के 14,38,290 लोग संक्रमित हैं।

राहत

1.1 करोड़ लोगों को अब आने-जाने के लिए नहीं लेनी होगी विशेष अनुमति

वुहान में 73 दिन बाद लॉकडाउन खत्म, पटरी पर लौटी जिंदगी

बीजिंग, एजेंसियां: कोरोना महामारी का केंद्र बिंदु रहे चीन के वुहान शहर में 73 दिन बाद बुधवार आधी रात से लॉकडाउन खत्म हो गया। शहर के 1.1 करोड़ लोगों को अब कहीं भी आने-जाने के लिए विशेष अनुमति की जरूरत नहीं होगी, बशर्ते अनिवार्य स्मार्ट फोन एप्लिकेशन में यह स्पष्ट होना चाहिए कि वे स्वस्थ हैं और किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में नहीं आए हैं। वुहान में 23 जनवरी को लॉकडाउन लागू किया गया था। संक्रमण रोकने के लिए बस और ट्रेन सेवा पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही विमान सेवा भी रोक दी गई थी। सिर्फ जरूरी कामों को छोड़कर लोगों को अपने घरों से बाहर निकलने की भी इजाजत नहीं थी। शहर की सीमाओं को भी सील कर दिया गया था।

लॉकडाउन हटने के साथ ही शहर से गुजरने वाली यांगतेज नदी के दोनों किनारों पर लाइट शो हुआ। गगनचुंबी इमारतों और पुलों पर ऐसी छवियां तैर रहीं थीं जिनमें स्वास्थ्यकर्मी मरीजों को ले जाते दिख रहे थे। कई जगह वुहान के लिए 'हीरोइक सिटी' शब्द लिखे दिखाई दे रहे थे। तटबंधों और पुलों पर नागरिक झंडे लहरा रहे थे और 'वुहान आगे बढ़ो' के नारे लगाते हुए चीन का राष्ट्रगान गा रहे थे। शानदोंग प्रांत के मूल निवासी गुओ लेई वुहान में अपना व्यवसाय चलाते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं वुहान में आठ साल से रह रहा हूं। महामारी के चलते हम सभी यहां फंस गए थे।' एक अन्य व्यक्ति तोंग झेंगकुन ने कहा, 'मुझे बाहर निकले 70 दिन से भी ज्यादा का वक्त हो गया। जिस इमारत में रहता था वहां संक्रमित व्यक्ति मिले थे, जिसके बाद पूरी इमारत को बंद कर दिया गया था।' लॉकडाउन खत्म होते ही सड़कों पर कारों के साथ ही सैकड़ों लोग शहर से बाहर जाने के लिए ट्रेनों और विमानों का इंतजार करते दिखे तो कई लोग नौकरी पर जाने को बेताब नजर आए।

माना जा रहा है कि ट्रेन के जरिये करीब 53 हजार लोग वुहान से बाहर गए। सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के अखबार ने हालांकि इतनी जल्दी जश्न मनाने को लेकर चेतावनी दी है।

वुहान के कारखानों में शुरू हुआ काम : चीन में कोरोना वायरस का केंद्र रहे वुहान शहर में लॉकडाउन खत्म होने के साथ कारखानों में कामकाज भी शुरू हो गया है। यह तस्वीर डोंगफेंग होंडा ऑटोमोबाइल फैक्ट्री की है। बता दें कि चीन में वुहान भारी उद्योग खासकर ऑटो उद्योग का मुख्य केंद्र है। एपी

संक्रमण के 62 नए मामले सामने आए

चीन में मंगलवार को संक्रमण के 62 नए मामले सामने आए। घरेलू संक्रमण के तीन मामलों को छोड़ दें तो बाकी संक्रमित लोग विदेश से आए थे। इस तरह विदेश से आए संक्रमित लोगों की संख्या 1,042 हो गई। मंगलवार को बिना लक्षण वाले कोरोना संक्रमित 137 लोगों के नामों की सूची भी जारी की गई। मंगलवार को दो लोगों की मौत भी हुई। इनमें एक मौत शंघाई और दूसरी हुबेई प्रांत में हुई। देश में मृतकों की कुल संख्या 3,333 हो गई है। अकेले वुहान में 50 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हैं।

अमेरिका के विस्कांसिन प्रांत में प्राइमरी चुनाव में उमड़े मतदाता

मेडिसन, एपी : अमेरिका में भले ही कोरोना महामारी को लेकर हाहाकार मचा हो, लेकिन चुनावी राजनीति ने स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सलाह ताक पर रख दी। मंगलवार को अमेरिकी प्रांत विस्कांसिन में रिपब्लिकन पार्टी ने राष्ट्रपति प्रत्याशी के लिए प्राइमरी चुनाव कराया। इस दौरान वोट डालने के लिए बड़ी संख्या में लोगों को पोलिंग स्टेशन के बाहर लाइन में खड़े देखा गया। कई लोगों ने एब्सेंटी बैलेट नहीं मिलने की भी शिकायत की। यह मतपत्र उन वोटरों को दिए जाते हैं, जो किसी कारणवश निर्धारित मतदान केंद्र नहीं पहुंच सकते हैं।

विस्कांसिन में कोरोना संक्रमण के 2500 मामले सामने आए हैं जबकि 92 लोगों की मौत हो चुकी है। सबसे ज्यादा 49 मौतें प्रांत के सबसे बड़े शहर मिलवाकी में हुई हैं।

गर्भवती और कोरोना संक्रमित 34 वर्षीय हन्ना ग्लीसन ने बताया कि उन्होंने एब्सेंटी बैलेट का अनुरोध पिछले सप्ताह किया था, लेकिन मंगलवार तक उन्हें यह मतपत्र नहीं मिला। उन्होंने कहा, यह वास्तव में अनुचित, अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है। मताधिकार को दबाने का यह सबसे अच्छा तरीका है। इसे सही नहीं कहा जा सकता है।

- बड़ी संख्या में पोलिंग स्टेशन के बाहर लाइन में खड़े दिखे लोग
- कई लोगों ने एब्सेंटी बैलेट नहीं मिलने की शिकायत भी की

मिलवाकी के 180 मतदान केंद्रों में से सिर्फ पांच में वोट डाले गए, जिसके चलते मतदान केंद्रों के बाहर लंबी लाइनें लगी रहीं। माना जा रहा है कि अश्वेत मतदाताओं के बाहुल्य वाले इस प्रांत में अगर इस समुदाय की वोटिंग कम हुई तो रिपब्लिकन को लाभ होगा।

दैनिक जागरण
राष्ट्रीय संस्करण
गुरुवार 9 अप्रैल 2020
स्पोर्ट्स
12
www.jagran.com

हम नेमार का बार्सिलोना में हमेशा स्वागत करेंगे। वह अभी भी मैदान पर शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं।
— लुइस सुआरेज, फुटबॉल खिलाड़ी, बार्सिलोना

फेडरर ने खिलाड़ियों को दिया वॉली चैलेंज

ज्यूरिख : स्विट्जरलैंड के टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर ने भारतीय कप्तान विराट कोहली सहित दिग्गजों को वॉली (टेनिस के खेल में लगाया जाने वाला शॉट) चैलेंज दिया है। फेडरर ने अपने ट्विटर पर एक वीडियो शेयर किया जिसमें वह एक टेनिस रैकेट लेकर दीवार पर बार-बार गेंद को हिट कर रहे हैं। फेडरर ने टॉनी क्रूस, जियालुइगी बुफोन, टॉम ब्रेडी, रोनाल्डो, मॉड्रिक, गॉफ और डद रॉक को भी टैग किया है।

एक नजर में

नजरबंद रहेंगे रोनाल्डिन्हो

आसुनसियोन : पराग्वे के एक जज ने ब्राजील के दिग्गज फुटबॉलर रोनाल्डिन्हो और उनके भाई को पुलिस हिरासत से रिहा करने और आसुनसियोन के एक होटल में नजरबंद रखने का आदेश दिया है। इन दोनों को पराग्वे में प्रवेश करने के लिए जाली पासपोर्ट का इस्तेमाल करने के लिए एक महीने पहले गिरफ्तार किया गया था। पराग्वे की एक अदालत ने पिछले महीने इन दोनों को रिहा करने से इन्कार कर दिया था। (एएफपी)

6500 खिलाड़ियों के कोटे

लुसाने : टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके करीब 6500 खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आइओसी) द्वारा प्रकाशित नए सिरे से बनाए गए क्वालीफाइंग नियमों के तहत 2021 में भी अपना कोटा बरकरार रखेंगे। आइओसी ने क्वालीफिकेशन का नया खाका जारी किया है। कोरोना के कारण स्थगित ओलंपिक अब अगले साल होंगे। क्वालीफिकेशन की नई समय सीमा 29 जून 2021 है। (एपी)

टॉटनहम ने चेतावनी जारी की

लंदन : टॉटनहम ने ब्रिटेन के कोराना वायरस लॉकडाउन के दौरान खिलाड़ियों को उनकी जिम्मेदारी की याद दिलाई जिनकी कुछ फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर आईं हैं जिसमें वे शारीरिक दूरी के नियम का उल्लंघन करते दिख रहे हैं। क्लब के फुटबॉल मैनेजर जोस मॉरिन्हो और टीम के कई सदस्य इन वीडियो में ट्रेनिंग करते हुए दिख रहे हैं। खिलाड़ियों में टैगाई एनडोंबेले टीम मैनेजर के साथ ट्रेनिंग करते दिख रहे हैं जबकि डेविनसन सांचेज और रियान सेसेनगनोन उत्तरी लंदन के पार्क में दौड़ते दिख रहे हैं। (एएफपी)

पैसा नहीं लेगा बीसीसीआइ

नई दिल्ली : लॉकडाउन के कारण बीसीसीआइ ने पुराने मैचों की फुटेज डीडी स्पोर्ट्स से साझा की है ताकि प्रशंसक यादों को ताजा कर सकें। आम स्थिति में इन फुटेज के लिए भारी भरकम रकम ली जाती है, लेकिन बीसीसीआइ ने डीडी से इन फुटेज के लिए एक भी पैसा नहीं लेगा। बीसीसीआइ के एक कार्यकारी ने कहा कि इन हालात में पैसे लेने का सवाल ही नहीं उठता। यह लॉकडाउन तक है और इस विषम परिस्थिति में हम इतना तो कर ही सकते हैं। इसके पीछे विचार लोगों को घर के अंदर ही रखने का है। (आइएएनएस)

विश्व कप के फाइनल में मिली हार के बाद बहन की शादी में भी मन नहीं लगा : प्रियम

साक्षात्कार

भारत का अंडर-19 विश्व कप का सफर शानदार रहा था, लेकिन फाइनल में बांग्लादेश के खिलाफ मिली हार से युवा खिलाड़ियों का सपना टूट गया। अंडर-19 विश्व कप जीतने का ऐसा सपना जिसे उस टीम के खिलाड़ी पूरी जिंदगी अब कभी पूरा नहीं कर पाएंगे। बांग्लादेश से मिली इस हार को भुलाना टीम के कप्तान प्रियम गर्ग के लिए कतई आसान नहीं रहा। आइपीएल स्थगित होने और लॉकडाउन के बीच वह अब मेरठ में घर पर जमकर मेहनत कर रहे हैं। **निखिल शर्मा** ने **प्रियम गर्ग** से बातचीत की। पेश हैं प्रमुख अंश :

● फाइनल हारने के बाद आप क्या सोच रहे थे?

-वह बहुत मुश्किल समय था, खासकर मेरे लिए तो बहुत ही मुश्किल समय था। मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा था। मेरा कहीं भी मन नहीं लग रहा था। बहन की शादी भी उसी समय पर थी। मेरा शादी में भी मन नहीं लगा। हालांकि मेरे लिए उससे बाहर आना जरूरी था। हम अच्छा कर रहे थे, लेकिन एक मैच से सब खराब हो गया। अभी हमारा सफर शुरू हुआ है।

● फाइनल हारने के बाद किसी वरिष्ठ खिलाड़ी से बात हुई?

-हां राहुल द्रविड़ सर से बात हुई थी। उन्होंने समझाया था कि यह क्रिकेट है, इसमें ऐसा होता है। तुम्हारे आगे अभी बहुत बड़ा सफर है। उस पर ध्यान केंद्रित करो और आगे बढ़ो।

● लॉकडाउन के समय घर पर हैं कैसे समय बिता रहे हैं?

-मैं घर में ही अभ्यास कर रहा हूं। सोता हूं, लूडो-कैरम गेम खेलता हूं। परिवार के साथ समय बिता रहा हूं। बहन के साथ चाय बनाने में मदद कर देता हूं। साथ ही अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगा रहा हूं।

● अन्य खिलाड़ियों को तो आइपीएल खेलने की उत्सुकता होगी, लेकिन आपके लिए यह पहला मौका होगा। आपमें कितनी उत्सुकता है?

-आइपीएल एक अच्छा टूर्नामेंट है। अंडर-19 विश्व कप की उप विजेता

टीम के खिलाड़ियों के लिए यह अच्छा प्लेटफॉर्म है। इस टूर्नामेंट में खेलकर हमारे लिए आगे जाने के मौके बढ़ जाते हैं। मेरा तो ईरानी ट्रॉफी में भी नाम था, लेकिन यह भी अब नहीं हो रहा है। इस समय पर कुछ नहीं कर सकते हैं। मैं घर पर भी बल्लेबाजी का अभ्यास नहीं कर पा रहा हूं। लेदर की गेंद से अभ्यास नहीं कर सकता हूं, इसीलिए टेनिस की गेंद से काम चला रहा हूं।

● बल्लेबाजों के लिए अलग और गेंदबाजों के लिए अलग ट्रेनिंग होती है। आप घर पर कैसे करते हैं?

-बीसीसीआइ ने प्रोग्राम भेज रखा है। अंडर-19 टीम में ट्रेनर रहे आनंद दाते सर ने ही प्रोग्राम दे रखे हैं। मैं उन पर ही काम कर रहा हूं। घर पर मैं उसी प्रोग्राम चार्ट को फॉलो कर रहा हूं।

● टीम के साथियों से बात होती है?

-हां हमने वाट्स एप ग्रुप बना रखा है। हम सभी आपस में बहुत बात करते हैं। कई बार मजाक में भी बात होती हैं। उन सभी का साथ याद आता है।

● लॉकडाउन जैसा कुछ पहली बार अनुभव कर रहे हो। इस पर कुछ कहना चाहोगे?

-मैं तो पूरा समय घर पर नहीं बिता सकता हूं। मुझे क्रिकेट की आदत है। क्रिकेट के माहौल की आदत है। यही मेरा शेडयूल था। रोज अभ्यास करते थे, ट्रेनिंग होती थी। अब उसको बहुत मिस कर रहा हूं। आराम की आदत हो जाएगी, यह मेरे लिए अच्छा नहीं है। जितनी जल्दी बाहर जाकर अभ्यास कर पाऊं मेरे लिए वही अच्छा है।

स्टोक्स ने खत्म किया विराट का दबदबा

स्टोक्स बने विजडन के विश्व के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर, तीन साल तक था कोहली का कब्जा

लंदन, प्रेट्र : इंग्लैंड के ऑलराउंडर बेन स्टोक्स ने भारतीय कप्तान विराट कोहली के पिछले तीन साल से चले आ रहे दबदबे को खत्म करके बुधवार को वर्ष 2019 के लिए विजडन का विश्व का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर (विजडन लीडिंग क्रिकेटर इन द वर्ल्ड) का सम्मान हासिल किया। स्टोक्स ने इंग्लैंड को पिछले साल पहला विश्व कप दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी और इसके अलावा उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हेडिंग्ले एशेज टेस्ट में बेहतरीन पारी खेलकर अपनी टीम को जीत दिलाई थी।

बेन स्टोक्स ● फाइल फोटो, रायटर

विजडन क्रिकेटर्स अलमानैक ने 2020 के अपने संस्करण में 2019 के प्रदर्शन के लिए स्टोक्स को यह सम्मान दिया, जो इससे पहले लगातार तीन वर्षों तक कोहली को मिल रहा था। विराट को 2016, 2017 और 2018 में लगातार तीन बार विजडन ने साल का अपना अग्रणी क्रिकेटर चुना था, जो एक रिकॉर्ड है। इस बार विजडन की सम्मान सूची में कोई भी भारतीय पुरुष या महिला खिलाड़ी जगह नहीं बना पाया। स्टोक्स ने पहली बार यह सम्मान हासिल किया है। यह पुरस्कार 2003 से शुरू किया गया था, जिसके बाद स्टोक्स इसे हासिल करने वाले इंग्लैंड के केवल दूसरे क्रिकेटर हैं। उनसे पहले एंड्रयू फ्लिंटॉफ को 2005 में यह सम्मान मिला था। विजडन ने इसके अलावा ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर एलिस पेरी को विश्व की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर चुना है। पेरी उन पांच खिलाड़ियों में भी शामिल हैं, जिन्हें विजडन का वर्ष का क्रिकेटर चुना गया है। पेरी को इससे पहले 2016 में भी विजडन ने सर्वश्रेष्ट महिला क्रिकेटर चुना था।

क्लार्क के टॉप-7 में सचिन और विराट: ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क ने दुनिया के सात महान बल्लेबाजों का चयन किया है। उन्होंने जिन सात बल्लेबाजों का चयन किया है वे सब क्लार्क के समय में खेल चुके हैं और इनमें दो भारतीय बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर व विराट कोहली भी शामिल हैं। क्लार्क की इस फेहरिस्त में मौजूदा टेस्ट रैंकिंग में नंबर-1 बल्लेबाज स्टीव स्मिथ को जगह नहीं मिली है। क्लार्क ने अन्य पांच बल्लेबाजों में ब्रायन लारा, रिकी पोंटिंग, संगकारा, जैक कैलिस और डीविलियर्स को चुना है।

अक्टूबर तक भी स्थिति सामान्य हुई तो होगा आइपीएल: पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज आशीष नेहरा का मानना है कि अगर अक्टूबर तक भी कोरोना वायरस को नियंत्रित कर दिया जाता है तो इंडियन प्रीमियर लीग को वर्ष के अंतिम तीन महीनों में भी आयोजित किया जा सकता है। आइपीएल 2020 को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 29 मार्च से शुरू होना था लेकिन कोरोना वायरस के कारण उसे 15 अप्रैल तक स्थगित कर दिया गया है। नेहरा ने कहा कि आइपीएल अगस्त में नहीं हो सकता क्योंकि वह बारिश का मौसम होता है। अगर अक्टूबर तक विश्व भर में स्थिति नियंत्रण में आ जाएगी तो मुझे पूरा विश्वास है कि आइपीएल होगा।

कोरोना ने खिलाड़ियों को भी आम इंसान बनाया : वुड

लंदन : इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड ने कहा कि कोरोना ने खिलाड़ियों को भी अपनी यथास्थिति का अहसास करा दिया है। उन्होंने कहा कि इस वैश्विक स्वास्थ्य संकट के कारण पैदा हुई चुनौती में वह भी आम इंसान की तरह असुरक्षित हैं। वुड ने कहा कि वह भी अपने परिवार के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं। वुड ने कहा कि मैं इंग्लैंड के लिए क्रिकेट खेलता हूं इसका मतलब यह नहीं है कि अभी देश जिस चुनौती से जूझ रहा है मैं उससे बच जाऊंगा। मैं भी सुपर मार्केट के बाहर कतार में खड़ा रहा और मैंने भी अपना सिर मुंडवा दिया है क्योंकि पता नहीं कि फिर मुझे कब बाल बनवाने का मौका मिलेगा।

विजडन पुरस्कार

- **विश्व का सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर :** बेन स्टोक्स (इंग्लैंड)
- **विश्व की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर :** एलेक्स पैरी (ऑस्ट्रेलिया)
- **टी-20 का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर :** आंद्रे रसेल (वेस्टइंडीज)
- **वर्ष के क्रिकेटर :** पैट कमिंस, मार्नस लाबुशाने, एलेक्स पैरी (ऑस्ट्रेलिया), जोफ्रा आर्चर (इंग्लैंड), सिमोन हार्पर (द. अफ्रीका)

आउट होने से बचने के लिए स्मिथ ने चुना अजीबोगरीब स्टांस

जयपुर, प्रेट्र: ऑस्ट्रेलियाई रन मशीन स्टीव स्मिथ ने रहस्योद्घाटन किया है कि वह आउट होने के तरीकों को सीमित करने के लिए आम तौर पर ऑफ स्टंप की लाइन में या उससे बाहर खड़े होते हैं। स्मिथ की बल्लेबाजी की तकनीक गैरपरंपरागत है जिसको समझने में अधिकतर नाकाम रहे हैं। आइपीएल के पहले चैंपियन राजस्थान रॉयल्स द्वारा आयोजित बातचीत में स्मिथ ने न्यूजीलैंड के स्पिनर ईश सोढ़ी के सामने अपनी तकनीक को लेकर खुलकर बात की।

अपने बल्लेबाजी स्टांस (बल्लेबाज के खड़े होने का तरीका) के बारे में स्मिथ ने कहा, 'यह इस पर निर्भर करता है कि कौन गेंदबाजी कर रहा है, विकेट कैसा है, मुझे किस तरह से रन बनाने हैं और गेंदबाज मुझे किस तरह से आउट करना चाहते हैं। इससे मैं तय करता हूं कि मुझे अपना स्टांस कैसे रखना है लेकिन मैं अमूमन ऐसा स्टांस लेता हूं जहां मेरा बैकफुट ऑफ स्टंप की लाइन में होता है और कुछ अवसरों पर तो उससे भी बाहर। इससे मैं जानता हूं कि कोई भी गेंद जो मेरी नजर से बाहर की तरफ जा रही हो, वह मेरे स्टंप पर नहीं लगेगी। मेरा मानना है कि अगर गेंद स्टंप की सीध में नहीं हो तो आपको आउट नहीं होना चाहिए। जब मैंने ऐसा स्टांस लेना शुरू किया तो यह मेरी एक चाल थी। यह आउट होने के तरीकों को सीमित करने के लिए था।'

कोरोना के लिए भारत-पाक सीरीज चाहते हैं शोएब अख्तर

नई दिल्ली, प्रेट्र: पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने भारत और पाकिस्तान में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई के लिए धन जुटाने के मकसद से दोनों देशों के बीच तीन मैचों की वनडे क्रिकेट सीरीज आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। 2008 के बाद से दोनों देशों ने एक-दूसरे के खिलाफ पूर्ण सीरीज नहीं खेली है। दोनों का सामना आइसीसी टूर्नामेंटों और एशिया कप में हुआ है।

शोएब ने कहा, 'संकट के इस दौर में मैं दोनों देशों के बीच तीन मैचों की सीरीज का प्रस्ताव रखता हूं। पहली बार इस सीरीज का नतीजा कुछ भी निकले, दोनों देशों में से किसी के क्रिकेटप्रेमियों को दुख नहीं होगा। विराट कोहली शतक जमाते हैं तो हम खुश होंगे। बाबर आजम शतक ठोकते हैं तो आपको भी अच्छा लगेगा। मैच का नतीजा जो भी निकले, दोनों टीमें विजयी होंगी।' उन्होंने कहा, 'इस मैच को काफी दर्शक मिलेंगे। पहली बार दोनों देश एक-दूसरे के लिए खेलेंगे। इससे जो भी पैसा मिले, वह कोरोना के खिलाफ लड़ाई के लिए दोनों देशों में बराबर बांट दिया जाए। इस समय सभी घरों में बैठे हैं तो वे यह मैच देखेंगे। भले ही अभी नहीं, लेकिन जब हालात सही होने लगे तो यह दुबई में खेले जा सकते हैं। इससे दोनों देशों के राजनयिक संबंध भी सुधर सकते हैं। भारत अगर हमें 10000 वेंटिलेटर देता है तो पाकिस्तान इसे हमेशा याद रखेगा। हम तो सिर्फ मैचों की पेशकश कर सकते हैं। बाकी अधिकारियों को तय करना है।'

वार्नर का अनुसरण कर केरल के युवाओं ने मुंडवाया सिर : ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने कोविड-19 से लड़ रहे लोगों के प्रति सहानुभूति के लिए अपना सिर मुंडवाया था और भारतीय कप्तान विराट कोहली को चैलेंज किया था, लेकिन वार्नर की बात का अनुसरण केरल के गांव के युवाओं ने किया। केरल के कोझिकोड के कोदियाथुर गांव के लोगों ने इस चैलेंज को लिया और अभी तक गांव के 50 युवा अपना सिर मुंडवा चुके हैं।

अख्तर और कैफ का मैच

नई दिल्ली : इन दिनों भारत और पाकिस्तान के सभी विश्व कप मैचों का प्रसारण हो रहा है। भारतीय क्रिकेटर मुहम्मद कैफ ने ट्वीट किया, 'बेटे कबीर को भारत और पाकिस्तान के बीच मैचों को फिर से देखने का मौका मिला, लेकिन जूनियर पापा से ज्यादा खुश नहीं है। कहने लगा उस समय अख्तर की गेंद पर शॉट खेलना आसान होता होगा, क्योंकि वह काफी तेज गेंद फेंकते थे। आजकल के बच्चे भी।' कैफ के इस ट्वीट पर अख्तर ने लिखा, 'तो फिर कैफ मैच हो जाए कबीर और मिकाइल अली अख्तर (मेरे बेटे) का? उसको तेजी को लेकर जवाब मिल जाएगा, उसको मेरा प्यार दीजिए।'

राष्ट्रीय

पहला रैपिड टेस्ट निगेटिव, 10 दिन बाद होगी दोबारा जांच

संदीप पांडेय, लखनऊ

तब्लीगी जमात की लापरवाही से देश में कोरोना वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन की आशंका बढ़ गई है। इसके चलते इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) ने भी बीमारी से निपटने के लिए रणनीति में बदलाव किया है। स्क्रीनिंग का दायरा बढ़ाने के लिए एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड टेस्ट को हरी झंडी देते हुए कोरोना जांच का नया प्रोटोकॉल बनाया गया है। इसके तहत अब पहला रैपिड टेस्ट निगेटिव आने पर 10 दिन बाद दूसरा टेस्ट अनिवार्य कर दिया गया है। हालांकि, आइसीएमआर ने मौजूदा हालात को देश में कोरोना वायरस का थर्ड फेज मानने से इन्कार कर दिया है।

तब्लीगी जमात से कई राज्यों में कोरोना वायरस का प्रसार बढ़ने के चलते जमातियों के साथ ही उनके संपर्क में आए लोगों की तलाश की जा रही है। पॉजिटिव मरीजों को आइसोलशन व संदिग्ध को क्वारंटाइन में रखा जा रहा है।

हर हाल में कम्युनिटी ट्रांसमिशन रोकने के लिए इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड टेस्ट की नई गाइड लाइन सभी राज्य के सीएमओ व कोविड-19 सर्विलांस अधिकारी को भेजी है। इसमें आश्रय स्थल, विस्थापित केंद्र व भीड़भाड़ इलाके में वायरस के केस मिलने, किसी समूह में मरीज मिलने पर बड़े स्तर पर जांच के निर्देश दिए गए हैं।

ऐसे में किसी समूह में संक्रमण पाए जाने पर अब सभी की जांच की जाएगी। इसमें से किसी में रैपिड टेस्ट निगेटिव आने पर उसका पॉलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर) टेस्ट कराया जाएगा। यह कंफर्मेशन टेस्ट न कराने पर कोरोना निगेटिव व्यक्ति को 10 दिन बाद दोबारा रैपिड टेस्ट कराना होगा।

एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड किट टेस्टिंग का नया प्रोटोकॉल आइसीएमआर ने राज्यों को भेजा

रैपिड टेस्ट के क्या है प्रोटोकॉल

एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड टेस्ट ब्लड से किया जाएगा : पॉजिटिव आने पर चिकित्सक उसका परीक्षण करें। स्थिति सामान्य होने पर होम आइसोलशन का विकल्प अपनाएं। तबीयत खराब होने पर अस्पताल में भर्ती करें।

एंटीबॉडी रैपिड टेस्ट निगेटिव आने पर अलर्ट रहें : संदिग्ध का नेजल, स्वैब कलेक्शन किया जाए। पीसीआर टेस्ट कर वायरस की पड़ताल की जाए। पॉजिटिव आने पर चिकित्सक परीक्षण करें। रोगी को हॉस्पिटल या घर पर आइसोलेट करें।

किसी ग्रुप में वायरस की पुष्टि हो चुकी है : एंटीबॉडी टेस्ट अन्य लोगों में निगेटिव आया है और पीसीआर टेस्ट कराकर कंफर्म नहीं किया गया है तो 10 दिन बाद ऐसे लोगों का दोबारा एंटीबॉडी टेस्ट करें। पॉजिटिव आने पर डॉक्टर के परामर्श पर आइसोलेट करें।

सात कंपनियों की किट पर मुहर : एनआइवी लैब पुणे ने करीब 12 कंपनियों की एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड किट का परीक्षण किया। इसमें सात पर मुहर लगा दी है। आइसीएमआर ने यह लिस्ट राज्यों को भेज दी है। इसमें तीन भारतीय कंपनियां भी हैं। सभी राज्य इन कंपनियों से किट खरीद सकते हैं। यूपी के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. रुकुमकेश सिंह के मुताबिक, रैपिड किट जल्द खरीदी जाएंगी। इसको लेकर शासन स्तर पर वार्ता चल रही है।

नक्सल प्रभावित इलाकों में पहुंचा रहे भोजन, तो मुस्लिम लड़कियां तैयार कर रहीं मास्क

संजय कुमार, रांची

कोरोना वायरस जैसी महामारी से शहर से लेकर गांवों तक के लोग परेशान हैं। शहरों में स्वयंसेवी संस्थाएं तो सक्रिय हैं, लेकिन गांव-गांव पहुंचना इनके बस की बात नहीं। संकट की इस घड़ी में गांवों की मदद करने के लिए झारखंड की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं में से एक विकास भारती बिशुनपुर (गुमला) के कार्यकर्ता जी-जान से जुटे हैं। सुदूर ग्रामीण इलाकों और नक्सल प्रभावित गांवों में कार्यकर्ता भोजन पहुंचा रहे हैं। साथ ही लोगों तक मास्क व सैनिटाइजर भी पहुंचाया जा रहा है। मुस्लिम लड़कियां मास्क तैयार करने में तत्परता से जुटी हैं। विकास भारती के 5000 कार्यकर्ता दिन-रात जरूरतमंदों की सेवा में जुटे हैं। उन्हें कोरोना से लड़ाई के तरीके बता रहे हैं। संस्था के सचिव पद्मश्री अशोक भगत स्वयं कार्यों की निगरानी कर रहे हैं। इस संस्था के कार्य को देखने के लिए इस वर्ष फरवरी माह में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी गुमला जिले के बिशुनपुर आए थे।

मदद को बढ़े हाथ

- झारखंड की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था विकास भारती के कार्यकर्ता लोगों को कर रहे जागरूक
- कहीं कर रहे दीवार लेखन तो कहीं मास्क तो सैनिटाइजर कर रहे वितरित
- संस्था के कार्यों को देखने गुमला पहुंचे थे राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी

विकास भारती बिशुनपुर का झारखंड के लगभग सभी जिलों में कार्य चल रहा है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से 10000 से अधिक लोग जुड़कर काम कर रहे हैं। इनमें से अभी पांच हजार से अधिक कार्यकर्ता कोरोना वायरस जैसी महामारी से निबटने में लोगों की मदद कर रहे हैं। गुमला एवं लोहरदगा जिले के नक्सल प्रभावित गांवों में भोजन कैंप चला रहे हैं तो रांची, गढ़वा, पलामू, लातेहार, गुमला, साहिबगंज, गोड्डा, दुमका, पश्चिमी व पूर्वी सिंहभूम जिलों के सुदूर ग्रामीण इलाकों में दीवार लेखन कर लोगों को जागरूक कर रहे हैं। जो कार्यकर्ता जहां हैं उसी आसपास अपनी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए काम कर रहे हैं। आदिम जनजाति परिवारों के बीच कच्चा राशन सामग्री पहुंचाने का काम कर रहे हैं। रांची जिले में विकास भारती के जनशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त लड़कियां व प्रशिक्षण देने वाली महिलाएं आपदा की इस घड़ी में अपने-अपने घरों में रात-दिन मास्क तैयार करने के साथ साथ उसे वितरित करने का भी काम कर रही हैं। 50 लड़कियां इस काम में लगी हैं, इनमें से कई मुस्लिम हैं।

आइसोलेशन बेड भी किया गया है तैयार

संस्था द्वारा गुमला जिले के बिशुनपुर में संचालित सुक्का बिरजिया अस्पताल मे दो बेड का आइसोलेशन वार्ड भी तैयार किया गया है। इसके साथ ही कई जिलों में विकास भारती के कार्यकर्ता एंबुलेंस लेकर हमेशा तैयार रहते हैं। जरूरत पड़ने पर मरीज को अस्पताल तक पहुंचाने का काम करते हैं।

गुजरात में कोरोना से मरने वालों को दो गज जमीन भी नसीब नहीं

शत्रुघ्न शर्मा, अहमदाबाद

कब्रिस्तान में जगह नहीं देने की शिकायतों पर वक्फ बोर्ड ने ट्रस्टियों को चेताया

गुजरात में कोरोना संक्रमण के कारण मरने वालों को कब्रिस्तान में दो गज जगह भी नसीब नहीं हो पा रही है। ऐसी शिकायतें मिलने पर वक्फ बोर्ड ने ट्रस्टियों को चेतावनी जारी करते हुए मृतकों को नजदीकी कब्रिस्तान में दफनाने की इजाजत देने को कहा है। उधर, अहमदाबाद में अचानक कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ने के बाद कोट विस्तार को बफर जोन (बीच का विशेष इलाका) घोषित किया गया है। इस क्षेत्र में करीब 29 लाख लोग रहते हैं।

गुजरात राज्य वक्फ बोर्ड के मुख्य अधिकारी आइआर मंसूरी ने कब्रिस्तान कमेटी के मुतवल्ली व ट्रस्टी को पत्र लिखकर निर्देश दिया है कि जिस अस्पताल में कोरोना संक्रमित की मौत होती है उसके नजदीकी कब्रिस्तान में मृतक को दफनाने की इजाजत देते हुए हरसंभव सहयोग किया जाए। ऐसा नहीं करने पर संबंधित के खिलाफ वक्फ सुधार एक्ट-2013 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

उधर, तब्लीगियों के कारण अहमदाबाद के कोट विस्तार में कोरोना के एक साथ कई मामले सामने आने तथा सूरत में एक ही दिन में दो की मौत के बाद हॉटस्पॉट में गश्त बढ़ा दी गई है। अहमदाबाद महानगरपालिका आयुक्त विजय नेहरा ने बताया कि 12 दरवाजों से घिरे कोट विस्तार में सैनिटाइजेशन व संदिग्धों की जांच का काम शुरू कर दिया गया है।

स्वयंसेवक पहुंचाएंगे घर-घर दवा: राजकोट में लोगों को घरों में रोकने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मदद ली जाएगी। स्वयंसेवकों को घर-घर दवा पहुंचाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आरएसएस गुजरात के प्रवक्ता प्रदीप जैन बताते हैं कि लॉकडाउन के पहले दिन से ही स्वयंसेवक सेवा कार्य में जुटे हैं। अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा, मेहसाणा, आणंद आदि शहरों में संघ कार्यकर्ताओं ने दैनिक मजदूरी करने वाले करीब 75 हजार परिवारों तक राशन सामग्री पहुंचाई है।

मुठभेड़ में जैश-ए-मुहम्मद का डिवीजनल कमांडर ढेर

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

उत्तरी कश्मीर के सोपोर में बुधवार को हुई भीषण मुठभेड़ में पांच लाख का इनामी जैश-ए-मोहम्मद का डिवीजनल कमांडर सज्जाद नवाब डार मारा गया। इस दौरान एक सैन्यकर्मी घायल और आतंकी ठिकाना बना मकान भी तबाह हो गया। फिलहाल, सज्जाद के अन्य साथियों की तलाश में सुरक्षाबलों ने सघन तलाशी अभियान चला रखा है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आतंकी सज्जाद अहमद नवाब डार मंगलवार शाम को अपने कुछ साथियों के साथ गुला बाग आरमपोरा में घूमते देखा गया था। पता चलते ही सेना और सीआरपीएफ के जवानों ने मंगलवार रात आठ बजे अभियान शुरू कर दिया। बुधवार तड़के एक मकान के पास जैसे ही सुरक्षाबल पहुंचे, अंदर छिपे आतंकियों ने फायर कर दिया। सुरक्षाबलों ने जवाबी फायर किया। इसी दौरान दोबारा वहां से गोली चली, जिससे एक जवान जसविंदर सिंह जख्मी हो गया। उसे उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाते हुए उसके अन्य साथियों ने आतंकी को फिर मुठभेड़ में उलझा लिया और कुछ ही देर में उसे मार गिराया। स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, मकान में तीन से चार आतंकी थे। एक ही आतंकी वहां घेराबंदी के दौरान रहा।

उड़ते-उड़ते गिरकर छटपटाने के बाद दम तोड़ रहे कौवे, बर्ड फ्लू की आशंका

जागरण संवाददाता, रामगढ़

झारखंड में कौओं के मरने का सिलसिला जारी है। रांची के बाद बुधवार को समीपवर्ती रामगढ़ जिले के कई इलाकों मरे कौवे पाए गए। ग्रामीणों के अनुसार कौवे उड़ते-उड़ते या पेड़ से अचानक गिरकर छटपटाने लगते हैं। फिर कुछ ही क्षण में उसकी मौत हो जा रही है। मुंह से झाग भी निकलता है। कोरोना से सहमे ग्रामीण कौवों की मौत से और ठिठक गए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार जिस तरह से कौवों की मौत हुई है उससे लगता है कि उनमें बर्ड फ्लू फैल गया है। मरे हुए कौवे को ग्रामीणों ने दफना दिया इस वजह से उनकी जांच नहीं की जा सकी। रांची में मंगलवार को मरे कौवों की जांच के लिए भेजा या है जिसकी रिपोर्ट का इंतजार है।

एक बगान में एक सप्ताह में पांच कौवे मरे मिले। इससे आठ दिन पहले चार कौवे मृत मिले थे। जबकि मंगलवार को एक कौवा और मिला। इसी तरह दूसरे इलाकों में भी मरे हुए कौवे मिले। कौवे की मौत की बात संज्ञान में आने के बाद मांडू प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार गुप्ता ने पशु पालन विभाग के चिकित्सकों को इसकी जांच कराने का निर्देश दिया है। हालांकि कई कौवों को ग्रामीणों ने दफना दिया ताकि कोई जानवर उसे न खाए और बीमारी ज्यादा फैले।

संभल में एक और बंदर की मौत

जासं, संभल : उप्र के संभल स्थित पवांसा में बंदरों की मौत का सिलसिला रुक नहीं रहा है। बुधवार को एक और बंदर की मौत हो गई। इससे तीन दिन में मृत बंदरों की संख्या 31 हो गई है। एक बंदर के शव को पोस्टमार्टम के लिए बरेली भेजा गया था, जिसकी रिपोर्ट आ गई है। मौत की वजह निमोनिया को बताया गया है। असली वजह जानने के लिए बंदर का बिसरा पशुओं के लिए बनी कोविड-19 प्रयोगशाला बरेली में भेजा गया है। इससे बंदरों की मौत के पीछे कोरोना की आशंका भी बढ़ गई है।

दैनिक जागरण
सबरंग
साहित्य के...
नई दिल्ली, गुरुवार, 9 अप्रैल, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

संयम और धैर्य ही इस वक्त की संजीवनी

बाल स्वरूप राही

'चलो, फिर कभी सही' : संकट की घड़ी है, मुश्किल से कटी है...लेकिन संयम और धैर्य ही इसकी संजीवनी है। लाजिमी है आप, मैं सब दिक्कत में हैं लेकिन भरोसा रखो कठिन घड़ी बीत जाएगी...फिर रोशनी छाएगी। फिर सड़कों पर दौड़ेंगे...धमाचौकड़ी मचाएंगे। यह कहना है वरिष्ठ कवि बाल स्वरूप राही का। कहते हैं कि मैंने भी आज तक पूरे मानव इतिहास में ऐसा संकट कभी नहीं देखा। 15 दिन बीत गए घर में इन दिनों ज्यादा राहत में हूं क्योंकि वातावरण भी बहुत शुद्ध हो गया है तो मन कुछ नया करने को उत्सुक रहता है। आजकल मैं अपनी उन गजलों को समय दे रहा हूं जिन्हें कभी लिखा तो था लेकिन उनका प्रकाशन नहीं हुआ। अब उन पर एक बार फिर से काम करके उनमें इस वक्त का एहसास भरकर...इस घड़ी अंतराल से जोड़...कुछ निश्चित ही अच्छा संकलन तैयार हो जाएगा। इसके लिए नाम भी सोचा है 'चलो, फिर कभी सही'...। इनमें से एक गजल तो आज की इस संकट की घड़ी पर बहुत प्रासंगिक भी बन गई, क्योंकि आज जो समय है वह हमारे साथ बेवफाई ही कर रहा है और हमें इस समय डरना नहीं है इसका डटकर सामना करना है। प्रस्तुत हैं गजल की कुछ पंक्तियां– 'वक्त आता है दबे पांव गुजर जाता है, वक्त भी एक नशा है जो उतर जाता है बेवफाई कोई सीखे तो समय से सीखे वादा करता है मगर हर बार मुकर जाता है, भींच कर चाहे उसे जितना भी दम हो रखिए वह हथेली में भरे जल–सा निकल जाता है...।

मेरे उपन्यास में विश्वसनीयता और धारावाहिक रामायण में चमत्कार : इस उम्र में पहले भी कहां बाहर निकलता था, लक्ष्मण रेखा तो मेरी उम्र ने ही खींच दी थी। लिखने–पढ़ने से न पहले घर में फुर्सत रहती थी और न अब रहती है। रमानाथ त्रिपाठी बताते हैं कि हां, इस लॉकडाउन ने मुझे एक ऐसे विषय पर मंथन का अवसर दिया, जिसे मैं पहले न सोच सका। वह हैं रामायण। यूं तो मेरे अध्ययन का विशेष क्षेत्र 'राम साहित्य' है। मैंने अपने रामगाथा उपन्यास में कथा को विश्वसनीय बनाया है। मेरे लिए वाल्मीकि के महाराम अनुकरणीय, तो तुलसीदास के सहृदय परमब्रह्म राम भी पूजनीय हैं। मैं राम के दोनों स्वरूप को पसंद करता हूं। आजकल रामायण धारावाहिक आते ही मैं अपने रामगाथा उपन्यास को लेकर बैठ जाता हूं और दूरदर्शन पर प्रसारित हो रही रामायण से उसकी तुलना करता हूं। मुझे यह अंतर नजर आया कि धारावाहिक रामायण में चमत्कार ज्यादा हैं जिसे दर्शक पसंद कर रहे हैं, लेकिन मेरी रचना में विश्वसनीयता ज्यादा है, चमत्कार नहीं है। आजकल की पीढ़ी के लिए यह रामायण बहुत उपयोगी है, संस्कारी है। उनके लिए अपनी गौरवमयी संस्कृति से परिचित होने का भी अवसर है।

रमानाथ त्रिपाठी

लॉकडाउन ने कुछ रचनात्मक लेखन का दिया मौका : वहीं साहित्यकार नित्यानंद तिवारी आजकल वाल्मीकि की रामायण, महाभारत, रामचरितमानस और पद्मावत को फिर से पढ़ रहे हैं। अभी हाल में मैंने 'आइना साज' उपन्यास भी पढ़ा। इसके अलावा रोजाना सुबह अखबारों में प्रकाशित होने वाले लेख जरूर पढ़ता हूं। इसी में पूरा दिन निकल जाता है और बहुत–सी चीजों की जानकारी भी मिलती है। मैंने लॉकडाउन के चलते एक लेख भी लिखा है, जिसका शीर्षक है 'हिंदुस्तान की नवीनतम सृजनशील परंपरा के पक्ष में' असल में कुछ कारण रहे थे जिनसे मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा मिली। हैदराबाद सेंट्रल लॉ यूनिवर्सिटी के उपकुलपति ने एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने कहा था कि हिंदुत्ववादियों को यह जानकर बड़ी निराशा होगी कि उनका हिंदु राष्ट्र बनता है तो भी वह आज के जो धर्मनिरपेक्ष राज्य हैं, उससे बहुत भिन्न नहीं होगा। तो मुझे लगा कि अगर उन्होंने इतने जोर पर यह बात कही तो मैं भी देखूं उन्हें यह भरोसा और इतना बल कहां मिला। मुझे याद है इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में मेरे दर्शनशास्त्र के एक शिक्षक थे उन्होंने एक बार कक्षा में बताया था कि हिंदुस्तान की सबसे नई सृजनशील परंपरा जो है वह हिंदू और मुस्लिम समाज के संघात की है। वह इनके संघात और संपर्क से बनती है। मैं पद्मावत पढ़ाता भी रहा हूं तो मैंने देखा कि मध्य युग में जब मुसलमान आए तो हिंदुस्तान की परंपरा, संस्कृति– समाज में समन्वयशीलता की थी। लेकिन वह परंपरा अपर्याप्त हो गई और उस पर प्रश्नचिन्ह लग गया। पहली बार हिंदुस्तान में एक ऐसा मुस्लिम समाज आया जो विकसित धर्म था। यह दोनों समाज एक–दूसरे में मिल नहीं सकते थे। लेकिन अब हमारा समाज हिंदू समाज से आगे बढ़ गया और 'भारतीय समाज' में विकसित हो रहा है। अब ऐसे समाज की कल्पना हुई, जो उस देश में रहने वाले लोगों से हो और हिंदुस्तान कई सारे धर्मों का एक साझा प्रदेश है। अब लोग साझी संस्कृति, साझा समाज की बात करते हैं। इस तरह से मध्य युग में जब मुसलमान आते हैं तो उसके बाद बिलकुल नई परंपरा आती है यह हमारे गुरु डॉ. विश्वनाथ नरवणे ने कहा था। तो मुझे दिख गया कि हां, सचमुच मध्य युग में यह बहुत बड़ी गहरी और संकटपूर्ण स्थिति थी कि हिंदू और मुसलमान को मिलकर कैसा साझा समाज बनाना होगा इसलिए यह बड़ी सृजनशील परंपरा थी। इन्हीं कारणों को देखते हुए मैंने इस विषय पर लेख लिखा था। खास यह रहा कि तसल्ली पूर्वक एकाग्र होकर इस पर मंथन कर सका, पुरानी किताबों से जुड़ सका।

नित्यानंद तिवारी

युवा लेखकों को समझने के लिए समय मिल गया : इस महामारी को लेकर मन में इतने डर और आशंकाएं हैं कि क्या होगा, कुछ पता नहीं। वरिष्ठ साहित्याकार चंद्रकांता कहती हैं कि इस समय मैं लिख तो कुछ पा नहीं रही हूं लेकिन पढ़ने का समय निकाल लेती हूं। अब तो ऐसा लग रहा है कि पहले से कहीं और ज्यादा व्यस्तता बढ़ गई है। इसलिए पढ़ने के लिए ही उपयुक्त समय निकल पाता है। कई नई लेखकों को पढ़ रही हूं उन्हें समझ रही हूं कि हमारी युवा लेखक पौध कैसा लेखन कर रही है। बहुत से युवा लेखकों की किताबों को समय नहीं दे पा रही थी, तो इस जरूरी काम को इन दिनों कर रही हूं। एक खास चीज भी हुई, पता नहीं क्यों इन दिनों कृष्णा सोबती खूब याद आईं और मैंने उनका 'जिंदगीनामा' फिर से पढ़ना शुरू कर दिया। वो होती तो इस वक्त को कैसे अनुभव करती। वैसे मेरा कई यात्राओं पर लेखन भी बचा हुआ है लेकिन पता नहीं क्यों प्रकृति और वातावरण के इतने सुकून में होने के बाद भी मेरे मन में लेखन के प्रति एकांत भाव नहीं बन रहा, जैसा एक लेखक को चाहिए होता है।

चंद्रकांता

विश्व कल्याण की प्रार्थना का समय : वरिष्ठ साहित्यकार मृदुला गर्ग कहती हैं कि इस तरह का वक्त तो मैंने पूरे जीवन में नहीं देखा। लेखन या रचनाओं के लिए ऐसी स्थितियां बमुश्किल ही प्रतिकूल बन पाती हैं। क्योंकि यह तो सिर्फ विश्व कल्याण की प्रार्थना की जा सकती है। कुछ अपनी पुस्तकें और कुछ अन्य लेखकों की रचनाएं तो पढ़ रहे हैं लेकिन दिमाग में चिंता रहती है जो बार–बार ध्यान खींचती है। पूरा विश्व इस चुनौती से जूझने की तैयारियों में लगा है। दिल्ली को और गंभीर होना होगा। मेरा पोता ऑस्ट्रेलिया से आया है और उन्हें 14 दिनों के लिए होम क्वारंटाइन में रखा हुआ है। अब तक कई बार चिकित्सक आकर जांच कर गए हैं। हालांकि वे पूरी तरह से स्वस्थ हैं लेकिन अब उन्हें चिकित्सकों ने ऐहतियातन ऐसा करने की सलाह दी है तो वे आदेशों का पालन कर रहे हैं।

मृदुला गर्ग

पहले भी यही दौर था अब भी : मेरे बुढ़ापे का लॉकडाउन तो कई साल से लगा हुआ है। घर से सिर्फ डॉक्टर के यहां जाने के लिए ही बाहर निकलता हूं। वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य निशांतकेतु कहते हैं कि मेरी जिंदगी तो कब से इसी तरह बीत रही है तब भी किताबों के बीच था आज भी। हम समझ सकते हैं कि स्पेन के वर्ष 1918 में फैली महामारी का ऐसा ही माहौल रहा होगा, जिसमें डेढ़ करोड़ लोग मर गए थे। इसके अलावा मेरे जन्म के बाद द्वतीय विश्वयुद्ध के बाद ऐसी स्थिति देखने को मिली थी। 1934 में बिहार में भूकंप आया था और उसके बाद भी यही माहौल था। हालांकि उस दौर में इतने माध्यम नहीं थे जिससे भय और खतरे का अंदाजा इस हद तक हो पाता। आज तो हमारे पास तमाम माध्यम हैं जिनसे हमें चेताया जा रहा है।

आचार्य निशांत केतु

अब तो स्वत एकांतवास मिल गया : अपने लेखन के लिए मुझे पहले एकांतवास की तलाश होती थी। अब देखिए स्वत एकांतवास मिल गया। हालांकि मन को वह सकारात्मकता नहीं मिल रही है, दिमाग भटक रहा है लेकिन फिर भी एक सुकून है कि घर पर परिवार के सदस्य साथ हैं। वरिष्ठ साहित्यकार नासिरा शर्मा कहती हैं कि इस समय मैं अपनी बाल कहानियों को अंतिम रूप दे रही हूं, और एक उपन्यास को पांडुलिपी में ड्राफ्ट कर रही हूं। यह वक्त मुझे बचपन के उन दिनों में ले जाता है...महसूस होता है जब कि हम स्कूल से आते थे और उसके बाद घर ही हमारा जहान, हमारी जन्नत होता था। परिवार के सदस्य, घर का हर एक कोना अपना होता था। बाहर की दुनिया से कटकर पूरी तरह पारिवारिक सुकून महसूस करते थे। बाहर से न तो वाहनों की इतनी आवाजें आती थीं और न ही प्रदूषण का धुंआ। इसी तरह घर के आंगन से खुला आकाश नजर आता था। कहीं न कहीं यह लग रहा है कि प्रकृति के साथ हमने जो क्रूरता दिखाई है अब उसका बदला चुका रहे हैं।

नासिरा शर्मा

-रितु राणा, प्रियंका दुबे मेहता

लॉकडाउन बना एकांतवास

इस लंबे एकांतवास में मां और पापा के साथ बहुत कुछ गुनने और बुनने का समय पहले से थोड़ा ज्यादा मिल रहा है। इसी का प्रमाण है कि एक बेहतर श्रोता बनने की कसौटी पर कसी जा रही हूं। हमारा घर पुराना है जिसमें कमरे कम और खुलापन ज्यादा है। जिस आंगन की आज घरों में कमी महसूस होती है वो भी, बकायदा मिट्टी वाला है। खुला बरामदा, खुली गैलरी और पीछे मिट्टी वाला आगन है जिसमें अमरूद, मीठी नीम और हरसिंगार के पेड़ लगे हैं। दिल्ली जैसे महानगर में सुरक्षा की दृष्टि से देखे तो घोर असुरक्षित, एकदम खुला हुआ पर गंवई देहाती घर इस एकांतवास में वरदान है। दिल्ली विश्वविद्यालय के खालसा कॉलेज में प्रोफेसर स्मिता बताती हैं कि 'सुरभित स्मृतियां' की जब पहली पोस्ट डाली थी तो लोगों की प्रतिक्रिया देखकर हैरान थी, लोग सोशल मीडिया पर तैयार बैठे हैं कि उन्हें कुछ सकारात्मक, अच्छा, अनुप्राणित पढ़ने को मिले।

इस वरदान रूपी एकांतवास में बैठे-बैठे पिता की स्मृतियों को कुरेदने की सूझी। और स्मृतियों से प्रसंग फूटे कि मैं प्रफुल्लित हूं...उत्साहित हूं। रामदरश मिश्र की पुत्री स्मिता कहती हैं कि हम दोनों हर दिन बैठ जाते हैं, स्मृतियों को सहेजने और पाठकों तक पहुंचाने। इसे हमने 'सुरभित स्मृतियां' नाम दिया है। जिसकी बुधवार तक पांच कड़ियां हो चुकी हैं। उसी में पापा ने हरिवंश राय बच्चन, हजारी प्रसाद द्विवेदी और भवानी प्रसाद मिश्र के साथ दिल्ली से जुड़े...कई रोचक प्रसंग भी बताए...। वो कुछ इस तरह हैं।

बच्चन जी ने चुनिंदा लोगों में मुझे भी बुलाया था : 'सन् 1964 में जब मैं गुजरात से दिल्ली आ गया तब बच्चन जी से भेंट होने लगी। बच्चन जी के नेहरु जी के साथ आत्मीय संबंध थे। बच्चन जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाते थे। नेहरुजी, बच्चन जी को दिल्ली ले आए और विदेश मंत्रालय में उच्च पद पर नियुक्त किया। बाद में वे राज्यसभा के सदस्य भी बने। उनका बहुत गहरा प्यार मुझे और मेरे परिवार को प्राप्त होने लगा। मेरे और सरस्वती जी के साथ मेरा छोटा पुत्र विवेक भी अक्सर हमारे साथ बच्चन जी के घर जाया करता था। उसे 'विवेकानंद' कहकर बच्चन जी अपना प्यार लुटा देते थे। होली के दिन उनसे मिलने हम उनके घर जाया करते थे। उनके साथ हमारे प्रिय संबंधों की यात्रा चलती रही। इस बीच बच्चन जी के बड़े पुत्र अमिताभ बच्चन हिंदी सिनेमा में बहुत बड़ा नाम बन गए थे और बच्चन जी अक्सर अमिताभ के पास मुंबई में जाकर रहने लगे, पर बीच-बीच में उनका दिल्ली आना-जाना लगा रहता। मुझे कितना सुख मिला जब मुंबई से लौटकर उन्होंने अपने दिल्ली वाले आवास पर अपना जन्मदिन मनाया था और केवल तीन-चार व्यक्तियों को अपने हाथों से पत्र लिखकर आमंत्रित किया था जिनमें मैं भी था और शमशेर बहादुर सिंह भी थे। जब हम वहां पहुंचे तो देखा कि उनके आवास के बाहर अनेक लड़कियां घूम रही हैं और हमसे निवेदन कर रही है कि अंकल जी हमें भी साथ ले लीजिए। तेजी बच्चन जी द्वार पर खड़ी होकर सबको रोक रही रही थीं। इस दृश्य को देखते हुए मैंने बच्चन जी से पूछा कि अमिताभ आए हुए हैं क्या? उन्होंने कहा, हां। आया हुआ है। शमशेर बहादुर सिंह ने कहा, जरा उन्हें बुलाइए। अमिताभ जी आए तो शमशेर जी खड़े हो गए तो मुझे भी खड़ा होना पड़ा। अमिताभ ने नमस्कार किया तो शमशेर जी ने बहुत अच्छी बात कही कि अपने पिता की ऊंचाई प्राप्त करो।' स्मिता कहती हैं कि जब पापा इस प्रसंग को साझा कर रहे थे, तो लगा कि वो मेरे सामने सिर्फ बैठ हैं, वो आत्मिक रूप से उस दौर में ही पहुंच गए हैं। हरिवंश जी को अपने साथ महसूस कर रहे हैं।

सुखद एकांतवास... वरिष्ठ साहित्यकार रामदरश मिश्र की स्मृतियों को...कलमबद्ध करती उनकी बेटी प्रोफेसर स्मिता। सौजन्य स्वयं

उम्र की झुर्रियों के पार ले जाती 'सुरभित स्मृतियां'

लॉकडाउन रूपी एकांतवास हमें बहु त कुछ दे रहा है। अपनों के साथ सुखद अनुभव दे रहा है। साहित्यिक जगत तो खूब पुष्पित पल्लवित हो रहा है। अब हम तकनीक से सुविधा संपन्न भी तो हैं उसी के लाभ ने हमें स्मृतियों को सुगंधित करने का अवसर भी दिया है। वरिष्ठ साहित्यकार, राम दरश मिश्र, उम्र यही कोई 95 पार हो गई है, लेकिन स्मृतियों में अभी झुर्रियां नहीं पड़ी हैं, इसी का फल है कि आज उनकी बेटी स्मिता पिता के साथ बैठ उन स्मृतियों को सुरभित कर रही हैं। फेसबुक पर पाठकों को इन संस्मरणों का बेसब्री से इंतजार रहता है। आइए सबरंग के इस अंक में वरिष्ठ साहित्यकार राम दरश मिश्र से जुड़ी दिल्ली की स्मृतियों से रूबरु करा रही हैं मनु त्यागी :

भवानी भाई और मैं : पुरानी स्मृतियां सुकून देती हैं, पापा की तबीयत थोड़ी नासाज रहती है, इसलिए मुझे भी इस वक्त उन्हें पुरानी यादों में ले जाना अच्छा लग रहा है क्योंकि इससे उनके अंदर हिम्मत बंधती है। भवानी प्रसाद मिश्र जिन्हें पापा भवानी भाई कहते थे। उनके बारे में कुछ इस तरह साझा करते हैं '1964 में मैं दिल्ली आ चुका था और भवानी प्रसाद मिश्र यानी भवानी भाई भी गांधी शांति प्रतिष्ठान से जुड़कर दिल्ली आ गए थे। फिर तो प्राय भेंट होने लगी। कभी कवि-गोष्ठियों में, कभी और कहीं। भवानी भाई किसी बाड़े से बंधे नहीं थे। भवानी भाई तो हवा की तरह निर्बाध जीने और लिखने वाले कवि थे। इसलिए वे गोष्ठियों में भी जाते थे, कवि-सम्मेलनों में भी जाते थे। तरह-तरह के विचारों के लोग उनके मित्र थे। जो रचना उनको अच्छी लगती उसकी तारीफ मुक्त भाव से करते थे। फिर चाहे वह रचना किसी की भी हो और पसंद न आने पर बड़े से बड़े लेखक की रचना को हाशिए पर डाल देते थे। जब वे 'गगनांचल' के संपादक हुए, तब उनकी इस वृत्ति का अच्छा खासा परिचय मिला था।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनका स्नेह प्राप्त था। गगनांचल में कोई रचना भेजता था तो वे दो पंक्तियां लिखते थे- 'रचना मिली। सदा की भांति अच्छी लगी।'

मैं नहीं जानता कि भवानी भाई ने मुझे कितना पढ़ा था। किंतु उन्होंने जो कविताएं, कहानियां छापी थीं उन्हें तो पढ़ा ही था। भवानी भाई सहज वक्ता भी थे। एक बार उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिणी परिसर में तुलसीदास पर बोलने के लिए बुलाया गया। वे समझे कि उन्हें कविता पाठ के लिए बुलाया जा रहा है। वे अपनी कविता पुस्तकें लिए हुए दक्षिणी परिसर पहुंचे तो हमें आभास हो गया कि कहीं कोई गलतफहमी हुई है। अत वे कविता पढ़ते इससे पहले ही मैंने धीरे से निवेदन किया, आपको कविता पाठ नहीं तुलसीदास पर बोलना है। वे थोड़ा अचकाए और थोड़ा हंसे। और बिना किसी तैयारी या पूर्वचिंतन के तुलसीदास पर उनके काव्यात्मक भाषण का ज्यों सहज प्रवाह उमड़ा उसकी छवि देखते बनती थी। और न जाने कितने छोटे-बड़े जीवन संदर्भ है जिनमें मेरा भवानी भाई से साक्षात्कार हुआ है।

पीएचडी करने के लिए की थी द्विवेदी जी ने मदद :

बताती हैं कि पापा कि हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से जुड़ी भी बहुत सी स्मृतियां रही हैं। 'आवश्यकता पड़ने पर शिष्यों की आर्थिक सहायता भी करते थे मेरा पीएचडी का शोध प्रबंध पूरा हो गया था, लेकिन उसके टाइप का खर्चा और संबंधित मेरे पास नहीं थी। मैंने अपना संकट उनसे कहा तो उन्होंने तुरंत पैसे देकर मेरा यह संकट दूर किया। पापा एक प्रसंग कई बार बताते थे इसी कड़ी में उसका एक बार फिर जिक्र किया कि 'एक बार वसंत ऋतु में बोटेनिकल गार्डन में हम दोनों घूम रहे थे तो अशोक के वृक्ष को देखकर मैंने कहा, पंडित जी! यह अशोक है न! तब द्विवेदी जी ने कहा हां, यह अशोक है लेकिन फूला नहीं, क्योंकि किसी तरुणी का पदाघात इसे प्राप्त नहीं हुआ। स्मिता बताती हैं कि पापा उस वक्त थोड़े भावुक थे जब द्विवेदी जी कि एक इच्छा और उनकी अंतिम विदाई को याद कर रहे थे। 'द्विवेदी जी चाहते थे कि उनका निधन काशी में ही हो लेकिन नियति का खेल देखिए कि जिस दिल्ली से वे भाग रहे थे, उसी दिल्ली में उनका निधन हुआ। वे एम्स के कमरे में अंतिम सांस ले रहे थे और हम शिष्य कमरे के बाहर चिंताग्रस्त होकर उनके अच्छे होने की दुआ मांग रहे थे। उनकी शव यात्रा में अपार भीड़ उमड़ी थी। द्विवेदी जी के जाने से हम लोग एक बड़ा गहरा सन्नाटा अनुभव कर रहे थे। द्विवेदी जी के साथ वाराणसी से लेकर दिल्ली तक मैं अनेक प्रकार से जुडा रहा और उनकी महानता का साक्षात्कार करता रहा।

डॉ रामदरश मिश्र बाएं, अपने गुरुवर हजारी प्रसाद मिश्र के साथ। सौजन्य : सोशल मीडिया

इस एकांतवास में आत्मंथन कर निखर जाएगी दिल्ली

बातचीत

डॉ कुसुम अंसल...बचपन तो सांस्कृतिक साहित्यिक परिवेश में बीता लेकिन जब दुल्हन बन दिल्ली आईं तो इस साहित्यिक नगरी में होते हुए भी कुछ दौर इससे अलग भी बीता। फिर जब दोबारा कलम थामी तो...निरंतर...प्रवाह के साथ चलती रही। साहित्यिक गोष्ठी के लिए संवाद जैसे मंच भी दिए। डॉ कुसुम, लॉकडाउन के इस समय को एकांतवास की तरह आत्मंथन कर किताबों के साथ बिता रही हैं, और दिल्ली भी कुछ दिन बाद आत्मंथन कर और निखर जाएगी यह भरोसा जताती हैं। इन्हीं सब बिंदुओं पर डॉ कुसुम अंसल से रितु राणा की विस्तार से बातचीत हुई। प्रस्तुत हैं प्रमुख अंश :

कुसुम अंसल। जागरण

● अलीगढ़ में आपका जन्म हुआ। वहीं पली–बढ़ी फिर वहां से दिल्ली तक का सफर कैसे तय किया?
-मैं भले रहती अलीगढ़ में थी लेकिन किशोरावस्था से ही भाई के साथ अक्सर दिल्ली आया करती थी। कभी सोचा नहीं था कि एक दिन ये शहर मेरा अपना हो जाएगा। वर्ष 1962 में शादी के बाद मैं एक दुल्हन के रूप में दिल्ली आई और फिर यहीं की हो गई। अलीगढ़ मेरी परवरिश का शहर है। वहीं मेरे जीवन की नींव पड़ी। लेकिन एक साहित्यकार की पहचान मुझे दिल्ली ने ही दिलाई।

● मतलब अलीगढ़ से दिल्ली घूमने आती थीं, ऐसा क्या आकर्षण था यहां?
-दरअसल दिल्ली के आगे अलीगढ़ बिल्कुल सुस्त शहर लगता था। दिल्ली की चमक-दमक, यहां के रेस्त्रां, यहां की जीवनशैली मुझे बहुत आकर्षित करती थी। तब अंग्रेजी फिल्में (हॉलीवुड) भी दिल्ली में ही लगती थीं। हम अलीगढ़ से यहां फिल्में देखने ही आते थे। मुझे याद है दरियागंज स्थित गोलचा सिनेमा हॉल में मैंने चौदहवीं का चांद फिल्म देखी थी। इसके अलावा किशोरावस्था के दौरान मैंने दिल्ली में द टेन कमांडमेंट्स, द रोमन हालिडे आदि अंग्रेजी और प्यासा, कागज के फूल, बरसात की रात, मुगल-ए-आजम जैसी हिंदी फिल्में देखी थीं। जब नाटक देखने का मन होता तब भी दिल्ली ही आती थी। कनॉट प्लेस के वोल्गा रेस्त्रां में लंच करके हम 3 से 6 का शो देखते थे और उसके बाद जनपथ पर शॉपिंग करती थी। उस समय वहां कैची वाली चप्पल दो रुपये की मिलती थीं जो मुझे बहुत पसंद थीं। मैं जब भी दिल्ली आती तो जनपथ पर ही खरीदारी करने जाती थी।

● दिल्ली तो साहित्यिक नगरी है, आप साहित्य में रुचि भी रखती थीं फिर भी विवाह के बाद लगभग एक दशक साहित्यिक परिवेश से दूरी रही?
-दिल्ली में मैं दुल्हन बनकर आई थी। यहां मेरी यात्रा की शुरुआत एक गृहिणी के रूप में हुई थी। जिसे निभाने में मुझे 12 वर्ष तक का समय लग गया। मुझे नाटक देखने का बड़ा शौक था इसलिए बच्चों को लेकर कभी-कभी हम नाटक देखने जाया करते थे। त्रिवेणी कला संगम और कमायनी में तब बहुत अच्छे नाटक और साहित्यिक कार्यक्रम होते थे। मैं पति के साथ दफ्तर भी जाती थी लेकिन वो मुझे रास नहीं आया, क्योंकि मन तो साहित्य में रमा हुआ था। एक दिन अचानक मुझे एक नाट्य समूह की ओर से एक नाटककार के रूप में आमंत्रण आया। वहां गालिब नाटक का मंचन हो रहा था। गालिब मुझे हमेशा से पसंद थे इसलिए मैंने उस नाटक में भाग भी लिया। और यहीं से एक नाटककार के सफर की भी शुरुआत हुई। उसके बाद तो मैंने एक नाटककार के रूप में त्रिवेणी कला संगम में दो वर्ष तक गालिब का नाटक खेला। इस नाटक से मेरा पूरा जीवन बदल गया। मैंने फिर नए सिरे से लिखना भी शुरू किया। मैंने अपने पुराने उपन्यासों को छपवाया। एक नया उपन्यास पंचवटी भी लिखा, जिस पर फिल्म भी बनी। उसके बाद से अभी तक लिखने का सिलसिला जारी है।

● आप परास्नातक तक मनोविज्ञान की छात्रा रहीं, फिर हिंदी साहित्य से नाता कब और कैसे जुड़ा गया?
-जब छोटी थी तो कभी सोचा भी नहीं था कि मैं साहित्यकार बनूंगी, लेकिन लिखती जरूर थी। मेरे अंदर कुछ था, एक बेचैनी और उमड़ता हुआ लावा जो मुझसे लिखवा लेता था। शादी से पहले की बात कर रही हूं, हमारे घर में शिक्षा के साथ-साथ संगीत और साहित्य का हमेशा महत्व रहा। बचपन से ही मैं साहित्य के माहौल में रही हूं। हमारे घर में पुस्तकों का भंडार रहा है, जिसमें हिंदी व अंग्रेजी की किताबें थीं और कालजयी रचनाएं भी थीं। मेरे पिता और दादाजी लंदन में पढ़े थे इसलिए हमारे यहां अंग्रेजी साहित्य का भी अच्छा संकलन था। मुझे याद है जब मेरी उम्र 15-16 वर्ष थी तब हरिवंश राय बच्चन से मधुशाला सुनी थी। भवानी भाई का बहुत प्रसिद्ध गीत मैं गीत बेचता हूं सुना था। उन दिनों तलत महमूद हमारे ड्राइंग रूम में आते थे वो मुझे गजलें सुनाते थे। इस्मत चुगताई का हमारे घर में आना जाना था ये सारी चीजें मेरी परवरिश का एक कीमती खजाना रही हैं जिस कारण मैं साहित्य से जुड़ी रही। मैंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पढ़ते हुए ही तीन उपन्यास लिखे, कहानियां लिखीं और कविताएं भी लिखी थीं जो बाद में जाकर प्रकाशित हुईं। उसके बाद जब मुझे मौका मिला तो मैंने 1987 में अपनी पीएचडी आधुनिक हिंदी उपन्यास में विश्व भावना विषय से की। बस यहीं से मेरे साहित्यिक सफर को दिशा मिली।

● पहले के मुकाबले आज के साहित्यिक परिवेश में क्या बदलाव महसूस करती हैं?
-मुझे लगता है आज साहित्य का खूब विस्तार हो गया है और नया लेखन हो रहा है। काफी कुछ बदलता है। मुझे लगता है कि पिछले दो-चार साल में जो साहित्य लिखा गया है वह साहित्यिक बदलाव की नजीर है। जैसे चित्रा मुद्गल की एक पुस्तक को पुरस्कार मिला था यह ट्रांस जेंडर पर लिखा गया उपन्यास था। ऐसे विषय जो पहले नहीं लिखा गया था। जो चीजें पर्दों में थीं उन सबको उनकी वास्तविकता को बताने का साहस अब लेखक कर रहे हैं।

● दिल्ली की साहित्यिक गोष्ठियों में कहां कहां जाना होता था?
-जब दिल्ली आई तो दो-चार लोगों से मित्रता हुई थी जिनमें विशेष रूप से सरोज वशिष्ठ थीं, वह रेडियो में काम करती थीं। हमने मिलकर कामायनी नाम से एक छोटा सा मंच शुरू किया था, जिसमें हम साहित्यकारों को बुलाते थे। उसी के माध्यम से मेरी बहुत से साहित्यकारों से मित्रता हुई। महीप सिंह, कन्हैया लाल नंदन, सुनीता जैन, राजेंद्र यादव, नासिरा शर्मा से मेरी जान पहचान हुई। उसके बाद हम सभी ने मिलकर 'संवाद' नाम से एक गोष्ठी शुरू की थी जिसका आयोजन अंतर भवन में होता था। वहां एक लंच रूम और कान्फ्रेंस रूम भी था। वह 15-20 वर्ष तक लगातार चला। उस गोष्ठी में हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली साहित्य का मूल्यांकन होता था। अब हम संवाद का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में करते हैं। पहले हर महीने यह आयोजन होता था लेकिन अब तीन महीने में एक बार कराते हैं। एक अड्डा साहित्य अकादमी भी होता था और आज भी है जहां कई साहित्यकार इकट्ठे होते हैं।

● दिल्ली में किसी साहित्यकार मित्र के साथ जुड़ा रोचक संस्मरण?
-नासिरा शर्मा, मीरा, चित्र मद्गल, ममता कालिया हम लोग तो अब भी मिलते रहते हैं। एक बार दिल्ली में संवाद कार्यक्रम के दौरान फैजल अलकाजी को हमने बुलाया था जो बड़े नाटक निर्देशक हैं। उन्होंने मेरे भी दो नाटक निर्देशित किए थे। कार्यक्रम के दौरान मैंने उन्हें कहा आप किस विषय पर बोलेंगे तो उन्होंने कहा कि मैं 'चीखती चिल्लाती नायिका से तंग आ गया हूं' विषय पर बोलूंगा। तभी हमारे बीच बैठी एक महिला उठीं उन्होंने कहा मेरा नाम विनीता अग्रवाल है और मैं आपको एक नाटक दे सकती हूं जो चीखती चिल्लाती औरतों का नहीं होगा। जबकि उन्होंने कभी कोई नाटक नहीं लिखा था। लेकिन उस दिन के बाद उन्होंने नाटक लिखना शुरू किया। वह बहुत बीमार भी रहती थीं। उस नाटक की रीडिंग फैजल अलकाजी के घर पर हुई थी। वह नाटक मंचित भी हुआ लेकिन तब तक उन महिला की मृत्यु हो चुकी थी। संवाद ने ऐसे लोगों को भी लेखक बनाया जिन्होंने पहले कभी कुछ नहीं लिखा था। हमने उस महिला की मृत्यु के बाद भी उनके मान में उनेके पहले और आखिरी नाटक का मंचन कराया।

● कोई नई पुस्तक आने वाली है?
-हां, जल्द ही पाठकों को मेरे एक संस्मरण का संग्रह पढ़ने के लिए मिलेगा, जिसे वाणी प्रकाशन छाप रहा है। दरअसल वह छप चुका है लेकिन लॉकडाउन के चलते अभी वो मुझे मिला नहीं है। उसका नाम है 'कहने को बहुत कुछ था'। उसमें मेरे जीवन के बहुत सारे संस्मरण हैं। उसमें मेरे करीबी लोग शामिल हैं, मेरे मित्र, यात्राएं, घटनाएं और कुछ पुस्तकें हैं, जिन्होंने मेरे ऊपर बहुत प्रभाव छोड़ा था जिन्हें मैं कभी नहीं भूल पाती।

● चलिए अब वर्तमान में लौटते हैं, कोरोना संक्रमण की वजह से लगे लॉकडाउन को 15 दिन बीत गए इसे आप कैसे देखती हैं, खासकर दिल्ली के लिए? इस पर कुछ लिख रही हैं?
–इस समय सब अपने घरों में बंद हैं। मुझे लगता है इसके कई फायदे हैं एक तो हम सभी अपने घरों में सुरक्षित रहेंगे। दूसरा लोगों को अपने बारे में सोचने के लिए बहुत समय मिल रहा है। ऐसे समय में कोई भी बुद्धिजीवी या तो लिखता है या फिर पढ़ता है। वह सोचता है कि मैं क्यों हूं और मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है। ठीक इसी तरह मैं भी यही सोचती हूं और आत्ममंथन कर रही हूं। साथ ही पढ़ भी खूब रही हूं। इन दिनों मैंने मिशेल ओबामा व लीसा रे की आत्मकथा पढ़ी और चित्रा बैनर्जी देवकरुनी की एक किताब आई है द फॉरेस्ट ऑफ एन्चैन्ट्मंट अभी उसे भी पढ़ लिया है। एक उपन्यास भी लिखना शुरू किया है अभी उसका नाम नहीं सोचा है। मैं धार्मिक प्रवृति की हूं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि यह महामारी जल्द ही चली जाए और लोगों को इस संकट से छुटकार मिले।

● आपने पहले कभी कोरोना जैसी महामारी या ऐसी स्थिति देखी है?
–इस तरह की महामारी कभी हमारे सामने नहीं आई। ऐसा तो पहली बार हुआ है। हां, मेरे पिता जरूर कहते थे कि मेरी दादी प्लेग की बीमारी से मरी थी। उस समय प्लेग भी महामारी के रूप में फैली बीमारी ही थी। लेकिन उसके बाद हमने कभी ऐसी किसी बीमारी के बारे में नहीं सुना। इस महामारी का कोई न कोई इलाज जरूर आ जाएगा। इस समय हम सभी को घरों में रहकर संयम और धैर्य बनाए रखना है। उम्मीद है कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा।

स्वेज नहर को सफाई के बाद फिर से खोला गया

आज ही 1957 में स्वेज नहर को सफाई के बाद जहाजों के लिए खोला गया। यह 168 किमी लंबी और 60 मीटर चौड़ी है। निर्माण 1858 में फ्रांसीसी इंजीनियर फर्डीनेंड की देखरेख में शुरू हुआ और 1869 में इसे खोला गया।

बोइंग 737 ने पहली बार भरी उड़ान

आज ही 1967 में पहली बार बोइंग 737 ने उड़ान भरी। 1964 में डिजाइन पर काम शुरू हुआ। वॉशिंगटन की रेंटन फैक्ट्री में इसका निर्माण शुरू हुआ। 1968 में लुफथांसा के साथ सेवा शुरू हुई। करीब 25 देशों में आज भी इस्तेमाल किया जा रहा है।

घुमक्कड़ी को अर्थ देने वाले राहुल सांकृत्यायन

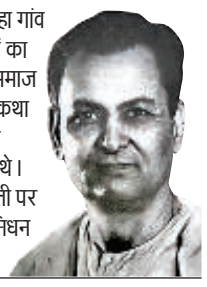

आज ही 1893 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के पंदहा गांव में राहुल सांकृत्यायन का जन्म हुआ था। उन्होंने कई देशों का भ्रमण किया। भारत भ्रमण के दौरान स्थानीय संस्कृति, समाज और साहित्य का अध्ययन किया। कृतियों की लंबी सूची है, जिसमें कथा साहित्य, जीवनी, पर्यटन, भाषाविज्ञान, व्याकरण, लोकसाहित्य जैसे विषय शामिल हैं। वह शानदार वक्ता और कई भाषाओं के जानकार थे। साहित्य अकादमी पुरस्कार और पद्मभूषण से नवाजा गया। जन्मशती पर एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया। 14 अप्रैल 1963 को निधन हो गया।

इधर-उधर की

ब्राजील में इमारत की दीवार को बनाया स्क्रीन

लंदन, एजेंसी : कोरोना वायरस के दौरान लोग अपना समय अलग-अलग तरीकों से काट रहे हैं। इनमें से बहुत से लोग दिन भर मोबाइल पर गेम खेलकर दिन बिता रहे हैं। कई लोग इस दौरान अपने अनोखे आइडिया से लोगों को चौंका रहे हैं। ब्राजील में ऐसा ही वीडियो आया है, जिसमें वीडियो गेम खेला जा रहा है। हालांकि इस खेल के लिए एक इमारत की दीवार को ही लोगों ने स्क्रीन बना लिया। इसके लिए एक परिवार के लोगों ने प्रोजेक्टर का इस्तेमाल किया। स्थानीय लोगों के अनुसार, इस परिवार के लोगों ने अपने घर की बालकनी में प्रोजेक्टर लगाकर इमारत की दीवार को बहुत बड़ी स्क्रीन में तब्दील कर दिया और गेम खेला। अब दूसरे लोग इस पर जमकर कमेंट कर रहे हैं और इस तरह के आइडिया को आजमाने की बात भी कर रहे हैं। वहीं कई लोगों ने इसे खुराफाती आइडिया बताया है।

कहां से आई महामारी बताएगा उपकरण

तलाशी राह ▶ ऑस्ट्रेलिया की न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया विकसित

जैविक एजेंट के पहलुओं का विश्लेषण कर सकता है 'एमजीएफटी'

मेलबर्न, प्रेट्र : इस समय पूरी दुनिया कोविड-19 से जूझ रही है। वैज्ञानिक इससे निपटने के लिए प्रयोगशालाओं में दिन-रात एक किए हुए हैं। लेकिन अभी तक यह भी नहीं पता चल पाया है कि आखिरकार यह महामारी फैली कैसे? क्या यह प्राकृतिक कारणों से उपजी है या मानव निर्मित है? इन सवालों के जवाब अभी तक तो भविष्य के गर्त में हैं। लेकिन अब शोधकर्ताओं ने ऐसी महामारी फैलने के लिए जिम्मेदार कारकों की पहचान करने के लिए एक नया उपकरण विकसित किया है, जो यह बता सकता है कि महामारी प्राकृतिक है या मानव निर्मित। शोधकर्ताओं का कहना है कि नए उपकरण के जरिये कोरोना जैसी महामारियों की उत्पत्ति की जांच करना आसान हो जाएगा।

ऑस्ट्रेलिया की न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक, आमतौर पर माना जाता है प्रत्येक प्रकोप मूल रूप से प्राकृतिक होता है। इसके जोखिमों की उत्पत्ति का आकलन करते समय अप्राकृतिक कारणों को शामिल नहीं किया जाता। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह हो सकता हमें भविष्य में किसी अन्य महामारी का करना पड़े। इसीलिए समय बदलने के साथ-साथ हमें किसी भी महामारी के फैलने पर इसके अप्राकृतिक कारणों पर भी गौर करना चाहिए ताकि भावी पीढ़ियों को जान के जोखिम से बचाया जा सके।

यह अध्ययन रिस्क एनालिसिस नामक जर्नल में प्रकाशित हुआ है। प्रतीकात्मक

कृत्रिम एजेंट होते हैं खतरनाक

शोधकर्ताओं ने कहा कि 'एमजीएफटी' जैविक एजेंट के विशेष पहलुओं का विश्लेषण करता है। यदि किसी क्षेत्र में रोग की पहचान पहली बार या फिर लंबे समय के बाद की जाती है तो यह महामारी विज्ञान के दृष्टिकोण से असामान्य है। अध्ययन के अनुसार, नया उपकरण यह भी आकलन करता है कि जैविक एजेंट कृत्रिम रूप से जारी किया गया है या नहीं। वैज्ञानिकों ने कहा कि एजेंट बड़े क्षेत्र में हवा, मिट्टी और पीने या सतह के पानी में असामान्य रूप से उच्च सांद्रता में पाया जा सकता है और धीरे-धीरे संक्रामक बीमारी का रूप ले लेता है।

रिस्क एनालिसिस नामक जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि महामारी के कारकों का पता लगाने के लिए शोधकर्ताओं ने जीएफटी नामक एक मूल्यांकन उपकरण को मोडिफाइड कर 'एमजीएफटी' बनाया। जीएफटी का प्रयोग पिछले प्रकोपों का मूल्यांकन करने के लिए भी किया गया था।

11 मानदंडों पर है आधारित : शोधकर्ताओं ने कहा कि इस उपकरण में यह निर्धारित करने के लिए 11 मानदंड हैं कि क्या महामारी का प्रकोप अप्राकृतिक का है या प्राकृतिक। यह इस बात का भी पता लगा सकता है कि महामारी राजनीतिक या आंतकवादियों द्वारा किए गए बायोलॉजिकल (जैविक) हमले के परिणाम तो नहीं है।

असामान्य पर्यावरणीय स्थिरता पैदा करते हैं कृत्रिम पैथोजंस : वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रयोगशालाओं में विकसित किए गए पैथोजंस असामान्य पर्यावरणीय स्थिरता पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा ऐसे विषाणुओं का सामान्यतः कोई इलाज उपलब्ध नहीं हो पाता और इनकी पहचान करना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में यह बेहद कारगर सिद्ध हो सकता है।

कोरोना वायरस को नाक के बाहर ही रोकने की तैयारी

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

- डीएसटी की मदद से आइआइटी बांबे एक जेल लोशन बनाने में जुटा, जल्द तैयार होने की उम्मीद
- जानलेवा वायरस को निष्क्रिय करने के लिए दूसरे चरण में इनमें जैविक अणु शामिल करने की योजना है

कोरोना वायरस के खतरे से लोगों को बचाने की कोशिशों के बीच भारतीय वैज्ञानिक अब एक ऐसा लोशन तैयार करने में जुटे है जो कोरोना वायरस को नाक के रास्ते शरीर के अंदर के दाखिल होने से रोकेगा। इसे नाक के अंदर लगाना होगा। ऐसे में इस लोशन को डॉक्टरों सहित अस्पतालों में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए काफी अहम माना जा रहा है, जो कोरोना वायरस के खतरे के बीच लगातार काम रहे हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की मदद से फिलहाल इस प्रोजेक्ट पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) बांबे का जैव विज्ञान और जैव इंजीनियरिंग विभाग तेजी से काम कर रहा है। इसे शुरुआती चरण में काफी सफलता भी मिली है। फिलहाल यह काम दो चरणों में काम किया जा रह है। इनमें पहला इस जेल लोशन के जरिये वायरस को शरीर की कोशिकाओं से जुड़ने से रोकना है। हालांकि इसके बाद भी यह वायरस सक्रिय बना रहेगा। ऐसे में इसे निष्क्रिय करने की जरूरत होगी। वहीं दूसरे चरण में इनमें ऐसे जैविक अणु शामिल करने की योजना है, जिससे डिटर्जेंट की तरह वायरसों को फंसाकर निष्क्रिय किया जाएगा। दोनों ही चरणों पर तेजी से काम किया जा रहा है। उम्मीद जताया जा रहा है कि जल्द ही इसके परिणाम सामने आएंगे।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी मंत्रालय के सचिव प्रोफेसर आशुतोष शर्मा के मुताबिक कोरोना वायरस से संक्रमण का सबसे ज्यादा खतरा मौजूदा समय में नाक के रास्ते वायरस के प्रवेश से है, क्योंकि इसके जरिए वह सीधे गले और बाद में फेफड़े तक पहुंच जाता है। मास्क लगाने के बाद भी यह वायरस इतना सूक्ष्म होता है कि इससे खतरा बना रहता है। इसलिए इससे बचने बहुत जरूरी है।

सीआइएसआर ने बनाया कोर ग्रुप, सौंपा जिम्मा

कोरोना संकट से निपटने के लिए वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) ने एक कोर ग्रुप का गठन किया है। इसमें प्रमुख प्रयोगशालाओं से जुड़े आठ निदेशकों को शामिल किया है। इस दौरान सभी को अलग-अलग जिम्मेदारी भी दी गई है। साथ ही हर दिन प्रत्येक निदेशक से प्रगति की भी जानकारी ली जा रही है। वैसे तो देश भर में सीएसआइआर की कुल 38 प्रयोगशालाएं हैं। जहां कोरोना से लड़ने के लिए बड़े स्तर पर काम चल रहा है। लेकिन इन कामों को पांच कैटेगरी में शामिल करने इस पर पैनी निगरानी भी की जा रही है। ताकि जल्द रिजल्ट मिल सकें। फिलहाल जिन आठ निदेशकों को इस कोर ग्रुप में रखा गया है, उनमें डिजिटल तथा आण्विक निगरानी का जिम्मा आइजीआइबी के निदेशक डॉ. अनुराग अग्रवाल को, टेस्टिंग किट तैयार से जुड़े काम का जिम्मा सीसीएमबी के निदेशक डॉ. राकेश मिश्रा को दवाओं के विकास का जिम्मा आइआइसीटी के निदेशक डॉ. एस चंद्रशेखर को सौंपा गया है। इसी तरह अस्पतालों के लिए सहायक उपकरण तैयार करने का जिम्मा नेशनल एयरोस्पेस लैबोरेटरी के निदेशक डॉ. जितेंद्र जे. जाधव को और निजी सुरक्षा उपकरणों की आपूर्ति का जिम्मा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम के निदेशक डॉ. अंजन रे को सौंपा गया है। वहीं इस पूरे ग्रुप का समन्वयक आइआइआइएम के निदेशक डॉ. राम ए. विश्वकर्मा को बनाया गया है।

'पैनिकमैकेनिक' से दूर होगी कोरोना मरीजों की व्यग्रता

न्यूयॉर्क, आइएएनएस : कोरोना वायरस की बढ़ती महामारी के बीच ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ताओं ने पैनिकमैकेनिक नामक एक एप तैयार किया है, जो मरीजों की निगरानी कर उनकी व्यग्रता दूर करने में मदद करेगा। इस एप को मोबाइल फोन के जरिये आसानी से प्रयुक्त किया जा सकता है। शोधकर्ताओं कहा कहना है कि 'पैनिकमैकेनिक' का प्रयोग किसी भी समय कहीं भी हो सकता है। डॉक्टरों के लिए मरीज की हिस्ट्री जानने का यह सबसे अच्छा उपकरण साबित हो सकता है।

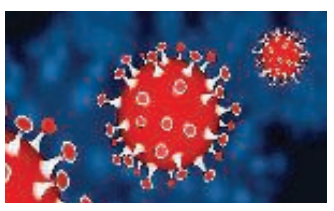

शोधकर्ताओं ने कहा कि 'पैनिकमैकेनिक' फोटोप्लेथसमोग्राफी की मदद से एक सेल फोन के कैमरे के जरिये शरीर के पैनिक रिस्पांस को मापता है। वर्मोंट यूनिवर्सिटी के एसिस्टेंट प्रोफेसर और इस एप के को-डेवलपर रयान मैकगिनिस ने कहा, 'इस एप के जरिये निष्कर्षों को प्राप्त करने के लिए मरीज को अपने मोबाइल फोन के फ्लैश को एक अंगुली से ढकना होता है। इसके बाद इस एप को ऑन कर गणना के लिए छोड़ दिया जाता है, कुछ ही सेकंड में यह एक पैनिक रिस्पांस को माप कर डाटा हमारे सामने रख देता है।

प्रतीकात्मक।

फेसबुक ने कपल के लिए लांच किया नया एप

न्यूयॉर्क, रायटर : सोशल मीडिया दिग्गज फेसबुक ने एक नया सोशल एप ट्यूंड लांच किया है। युगल (कपल) के लिए खास तौर पर लांच किए गए इस एप में परिजनों को भी चैट, फोटो और संगीत साझा करने की अनुमति होगी और वे युगल के बीच मेमोरी साझा करते हुए टाइमलाइन भी रख सकेंगे।

वेबसाइट सेंसर टावर के अनुसार, यह एप फिलहाल अमेरिका व कनाडा में एपल एप स्टोर पर उपलब्ध है। इस एप को फेसबुक के न्यू प्रोडक्ट एक्सपेरिमेंटेशन (एनपीई) टीम ने बनाया है। उसका कहना है कि यह एप एक ऐसा स्थान उपलब्ध कराता है जहां आप और आपके अपने महत्वपूर्ण समय बिता सकते हैं। एनपीई का गठन पिछले साल किया गया था। इसका काम ग्राहकों की जरूरत के अनुरूप एप तैयार करना है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक कंपनी की पैठ बन सके।

कोविड-19 के इलाज में नए लक्ष्य की पहचान

शोध अनुसंधान

शोधकर्ताओं को कोरोना वायरस (कोविड-19) के इलाज की दिशा में बड़ी सफलता मिली है। उन्होंने एक ऐसे संभावित लक्ष्य की पहचान की है, जिसे वायरल रोधी उपचार में साधा जा सकता है। इसकी पहचान उस तंत्र को आंकने के दौरान की गई, जिस के माध्यम से कोरोना वायरस कोशिकाओं में दाखिल होता है। अमेरिका की कॉर्नेल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कोरोना वायरस सार्स-कोवी-2 व सार्स वायरस से जुड़े प्रोटीन के अणु स्तर के क्रम के साथ ही कोशिका झिल्ली का तुलनात्मक अध्ययन किया। 2002 में फैले प्रकोप के पीछे सार्स वायरस था। एंटीवायरल रिसर्च जर्नल में छपे अध्ययन के अनुसार, शोधकर्ताओं ने कोविड-19 के लिए जिम्मेदार वायरस और सार्स वायरस के बीच 93 फीसद समानता पाई है। उन्होंने उस तंत्र का मूल्यांकन किया, जिसके जरिये कोरोना वायरस फैलता है। इस तंत्र के जरिये ही वायरस सेल (कोशिका) रिसेप्टर से जुड़ता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि फ्यूजन पेप्टाइड नामक एक प्रोटीन के माध्यम से यह प्रक्रिया होती है। यह प्रोटीन कोशिका झिल्ली से सीधे परस्पर क्रिया करता है। इसके बाद वायरस जीनोम को सेल में पहुंचा देता है। अध्ययन में इस बात का मूल्यांकन किया गया कि यह प्रोटीन किस तरह कोशिका झिल्लियों से परस्पर क्रिया करता है, जिससे संक्रमण बढ़ता है। -प्रेट्र

बंदरों पर बनाई डॉक्यूमेंट्री की एडिटिंग कर रहे हैं राजेश तैलंग

वेब शो 'मिर्जापुर में निर्भीक और साहसी वकील की भूमिका निभाने वाले राजेश तैलंग फिल्मों में भी सक्रिय हैं। लॉकडाउन के चलते उनके परिवार के सदस्य अलग-अलग जगहों पर हैं। लिहाजा राजेश अकेले ही दिल्ली में घर पर हैं। उनके मुताबिक, आधा समय घर की साफ-सफाई, खाना बनाने और बर्तनों को धोने में ही गुजर जाता है। खाली वक्त में वह बंदरों पर आधारित अपनी डॉक्यूमेंट्री पर काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मैंने डॉक्यूमेंट्री शूट करके रखी हुई थी। यह दिल्ली में भटकने वाले बंदरों पर है। पिछले चार साल से शूट कर रहा हूं। मैं जहां पर रहता हूं, वहां पर बंदरों का काफी आतंक है। मेरे पास कैमरा है। मुझे जब भी वक्त मिलता था, मैं उसे शूट करता रहता था। मेरे पास उसकी करीब सात-घंटे की फुटेज है। उसे लेकर कहानी पिरोई है। फिलहाल उसी की एडिटिंग में लगा हुआ हूं। मेरे घर में अच्छा एडिटिंग सिस्टम है। मुझे एडिटिंग आती है। लॉकडाउन की वजह से इतना समय मिला तो जुटा हूं। मेरी इच्छा इसे कुछ फेस्टिवल और स्कूलों में दिखाने की होगी। फिल्मों की बात करें तो राजेश 'पगलैट' में नजर आएंगे। उसमें उनके साथ सान्या मल्होत्रा हैं।

अल्लू अर्जुन के जन्मदिन पर फिल्म 'पुष्पा' की घोषणा

दक्षिण भारतीय अभिनेता अल्लू अर्जुन ने बुधवार को अपना जन्मदिन मनाया। इस विशेष दिन को चिह्नित करते हुए उनके करियर के सबसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'पुष्पा' की घोषणा की गई। इस फिल्म को हिंदी सहित पांच अलग-अलग भाषाओं में एक साथ रिलीज किया जाएगा। मेकर्स ने अलग-अलग भाषाओं में फिल्म का पहला लुक पोस्टर साझा किया है। इससे पहले, 'आर्य' और 'आर्य 2' जैसी हिट और प्रशंसित फिल्मों के बाद अभिनेता इस फिल्म के निर्माता सुकुमार के साथ तीसरी बार काम कर रहे हैं।

बचपन में ईरानी कैफे देखकर आया 'मस्का' बनाने का विचार : नीरज

हाल ही में नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब फिल्म 'मस्का' के निर्देशक नीरज उधवानी का कहना है कि कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन ऐसा दौर है, जिसमें हमें जीवन की बाकी समस्याएं बहुत छोटी लगने लगती हैं। इस दौर के गुजरने के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि इसका इंसानी फितरत पर क्या प्रभाव पड़ा है। फिल्म 'मस्का' के बारे में नीरज बताते हैं कि बचपन में वह अपने मां-बाप के साथ अक्सर ईरानी कैफे जाते थे। धीरे-धीरे ईरानी कैफे बंद होने लगे और उसकी जगह रेस्टोरेंट और कॉफीशॉप ने ले ली। फिर उन्होंने ईरानी कैफे बंद होने के कारणों का अध्ययन किया और इस पर फिल्म बनाने का निर्णय किया। इसके साथ उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में संघर्ष कर रहे लोगों के अनुभव को भी दिखाने का प्रयास किया। फिल्म 'मस्का' में मनीषा के साथ निकिता दत्ता व जावेद जाफरी मुख्य भूमिका में हैं।

घर बैठे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर डेब्यू कर रहे हैं वरुण धवन

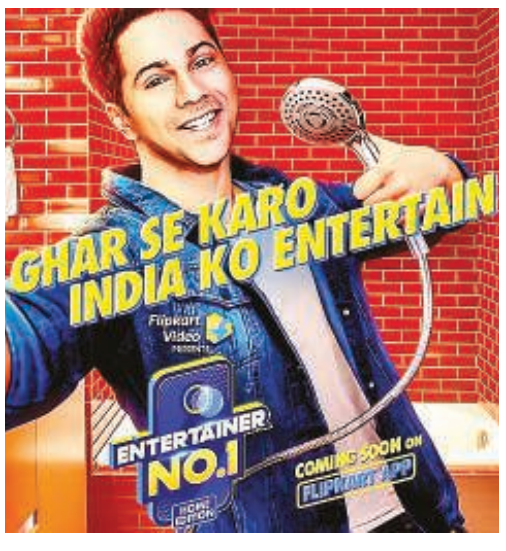

इन दिनों जब फिल्म और टीवी सभी तरह की शूटिंग बंद है, ऐसे में वरुण धवन ने घर बैठे देशवासियों के मनोरंजन का बीड़ा उठाया है। वरुण जल्द ही रियलिटी शो 'एंटरटेनर नं. 1' ला रहे हैं। इस शो में वह घर बैठे लोगों का मनोरंजन करेंगे। इस शो की सबसे खास बात यह है कि इसके प्रतिभागियों का चुनाव सोशल मीडिया के जरिए होगा और वे घर बैठे ही अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे यानी यह पहला ऐसा रियलिटी शो होगा, जिसमें होस्ट और प्रतिभागी दोनों घर बैठे परफॉर्म करेंगे। इसके साथ ही वरुण इस शो के जरिए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर डेब्यू भी करेंगे। शो की जानकारी देते हुए वरुण ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'घर से करोगे इंडिया को एंटरटेन? इस रियलिटी शो का हिस्सा बनो और बनो एंटरटेनर नं. 1। इस समय हम सब एक साथ हैं और अब आप कर सकते हैं सबको एंटरटेन। शो जल्द ही आ रहा है फ्लिपकार्ट वीडियो पर..।' शो कब से शुरू होगा और इसमें किस तरह से लोगों का मनोरंजन किया जाएगा, इसके बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है।

स्क्रीन शॉट

फरहान ने 'तूफान' में एक लुक के लिए बढ़ाया 15 किग्रा वजन!

अभिनेता फरहान अख्तर की अगली फिल्म 'तूफान' है। उसमें वह मुक्केबाज की भूमिका में नजर आएंगे। बीते दिनों उसका फर्स्ट लुक सामने आया था। फरहान अपनी फिटनेस और अनुशासन के लिए भी जाने जाते हैं। हालांकि 'तूफान' के लिए उन्होंने अपने अनुशासन को तोड़ा। दरअसल, मुक्केबाज को चित्रित करने के लिए, फरहान को कायांतरण करना था। उसके लिए अभिनेता ने पेशेवर मुक्केबाजी में बकायदा प्रशिक्षण भी लिया है। उन्होंने पहले फिल्म के एक भाग के लिए अपना वजन कम किया। उसके अगले हिस्से के लिए उन्हें छह सप्ताह में 15 किलो वजन बढ़ाने की आवश्यकता थी। फरहान ने कहा, 'मेरे लिए फिटनेस कायम रखने का तरीका है अनुशासित दिनचर्या। मैं हमेशा उन चीजों से बचता हूं, जो मेरे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती हैं। अनुशासन के विपरीत जीवन व्यतीत करना, मेरे लिए चुनौती थी, जिसमें शारीरिक गतिविधि कम और अधिक फैट्स, कार्ब्स, स्टार्च खाना शामिल था। यह बेहद कठिन था। हालांकि, मैंने तला हुआ भोजन संतुलित मात्रा में खाया था, लेकिन स्टार्च और फैट्स ने उसे पूरा कर दिया। इस तरह मैंने 15 किलो अतिरिक्त वजन बढ़ाया है।' राकेश ओमप्रकाश मेहरा द्वारा निर्देशित इस फिल्म को 18 सितंबर को रिलीज करने की योजना है।

अब श्वेता तिवारी ने काटे बेटे के बाल

बीते दिनों अभिनेत्री अनुष्का शर्मा ने अपने क्रिकेटर पति विराट कोहली के बाल काटने की फोटो साझा की थी। उसके बाद टिस्का चोपड़ा ने अपने पति के बाल काटते हुए फोटो के साथ लिखा था कि उन्हें करियर का नया विकल्प मिल गया है।

अब अभिनेत्री श्वेता तिवारी ने अपने बेटे रेयांश के बाल काटते हुए तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा की है। उन्होंने लिखा, आप जैसे हैं वैसे रहें, जब तक आप एक नाई न बन जाए। वहीं अभिनेत्री सना खान ने इंस्टाग्राम पर अपना मजेदार वीडियो पोस्ट किया है। उसमें वह कपड़ों से भरी बाल्टी में पैर पटक रही हैं।

लोगों की मदद के लिए वर्चुअल डिनर डेट पर जाएंगे अर्जुन

निर्माता बोनी कपूर के बेटे और अभिनेता अर्जुन कपूर ने लोगों की मदद के लिए अनूठा तरीका अख्तियार किया है। वह मदद के लिए आगे आने वाले लोगों के साथ वर्चुअल डिनर डेट पर जाएंगे। दरअसल, अर्जुन अपनी बहन अंशुला द्वारा संचालित गैर सरकारी संस्था फैनकाइंड के साथ मिलकर दिहाड़ी पर काम करने वालों की मदद के लिए वर्चुअल डिनर डेट पर जाएंगे। डेट पर जाने के इच्छुक लोगों को इस गैर सरकारी संस्था को पहले दान देना होगा। इसके बाद उनमें से चुने गए पांच भाग्यशाली लोगों को अर्जुन के साथ 11 अप्रैल को वर्चुअल डिनर डेट पर जाने का मौका मिलेगा। इस डेट में विजेताओं को अर्जुन की तरफ से वीडियो कॉल प्राप्त होगा और उनसे बात करने का मौका मिलेगा। अर्जुन की इस डिनर डेट में मलाइका अरोड़ा खान, वरुण धवन, जाह्नवी कपूर, सोनम कपूर, कट्रीना कैफ, विक्की कौशल और अनुष्का शर्मा जैसी कई हस्तियों ने दिलचस्पी दिखाई है।

मां के जन्मदिन पर जैक्लिन ने उन्हें किया याद

ज्यादातर सितारे इन दिनों परिवार के साथ हैं, लेकिन परिवारजनों से दूर लोगों को उनकी कमी खल रही है। खासतौर पर जन्मदिन जैसे विशेष मौकों पर। जैक्लिन फर्नांडिज ने अपनी मम्मी किम फर्नांडिज को उनके जन्मदिन पर बहुत मिस किया। बुधवार को सोशल मीडिया पर उन्होंने अपनी मां के साथ कुछ तस्वीरें साझा कीं। इन तस्वीरों में उनकी मां अपने हाथों से उन्हें खिला रही हैं। इन तस्वीरों को साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'जन्मदिन की शुभकामनाएं मम्मी। आपको ढेर सारा प्यार। काश कि आप यहां मेरे साथ होतीं और हम एक साथ होते।' इस तस्वीर पर टिप्पणी करते हुए उर्वशी रौतेला ने भी जैक्लिन की मां को शुभकामनाएं दीं। जैक्लिन हाल ही में म्यूजिक वीडियो 'गेंदा फूल में' नजर आई थीं।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
योग बाइ बाबा रामदेव : सुबह 6.00
सिने संगीत : सुबह 7.00
रंगोली : सुबह 8.00
रामायण : सुबह 9.00/रात 9.00
कोविड 19 अपडेट्स : सुबह 10.30
ब्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
वाह क्या टेस्ट है : दोपहर 1.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
बुनियाद : शाम 5.00
देख भाई देख : शाम 6.00
चाणक्य : रात 10.00

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

कलर्स
खतरों के खिलाड़ी : सुबह 8.00
खतरा खतरा खतरा : सुबह 11.00
महाकाली : शाम 4.00
लवकुश : शाम 5.00
शक्ति : रात 8.00
बिग बॉस 13 : रात 10.00

स्टार प्लस
सिया के राम : सुबह 5.00/8.30
महाराज की जय हो : सुबह 6.30/रात 9.00
राधाकृष्ण : सुबह 8.00/शाम 7.30
महाभारत : सुबह 9.00/रात 8.00
इस प्यार को क्या नाम दूं : सुबह 11.00

स्टार भारत
देवों के देव महादेव : सुबह 7.00/शाम 7.00
बेस्ट ऑफ लॉफ्टर चैलेंज : सुबह 9.00
सावधान इंडिया-एफआइआर : दोपहर 12.00
सावधान इंडिया-इंडिया फाइट्स बैक : दोपहर 1.00
कॉमेडी क्लासेज : रात 8.00

सोनी
द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
सीआइडी : सुबह 10.00
क्राइम पेट्रोल डायल 100 : दोपहर 12.00
मेरे साईं-श्रद्धा और सबूरी : शाम 7.00